Government Pataleshwar College Masturi
District- Bilaspur (C.G) -495551

3.3.3 Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five years

Sl. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Title of the paper	Title of the proceedings of the conference	Name of the conference	National / International	Year of publication	ISBN/ISSN number of the proceeding	Affiliating Institute at the time of publication	Name of the publisher
1	Dr. Durga Bajpai (Assistant Professor)	कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की लोक संस्कृति	—	-	-	-	2016	978-93-80511-37-5	Govt. Pataelshwar College Masturi	Samta Prakashan Kanpur, U.P.
		महिला सशक्तिकरण का वर्तमान परिदृश्य	आदिवासी समाज में नारी की स्थिति	-	-	-	2016	978-93-80511-47-4	Govt. Pataelshwar College Masturi	Samta Prakashan Kanpur, U.P
		-	-	छत्तीसगढ़ के सामाजिक जीवन पर नक्सलवाद का प्रभाव	नैसर्गिक संपदा से परिपूर्ण छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद का दंश	National	2017	Proceeding	Govt. Pataleshwar College Masturi	Rajiv Gandhi Govt. Arts & Commerce College Lormi Dist. Mungeli
2	Dr. Sujata Samuel (Assistant Professor)	महिला सशक्तिकरण का वर्तमान परिदृश्य	ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने में स्वयं सहायता समूहों का योगदान	-	-	-	2016	978-93-80511-47-4	Govt. Pataleshwar College Masturi	Samta Prakashan Kanpur, U.P
3	Dr. K. R. Matawale (Assistant Professor)	महिला सशक्तिकरण का वर्तमान परिदृश्य	महिला सशक्तिकरण एक समाजशास्त्रीय विवेचन	-	-	-	2016	978-93-80511-47-4	Govt. Pataleshwar College Masturi	Samta Prakashan Kanpur, U.P
4	Dr. Rajesh Chaturvedi Professor	राजेन्द्र अवस्थी व्यक्तित्व एवं कृतित्व	-	-	-	-	2017	978-81-934493-1-8	Govt. Pataleshwar College Masturi	Samta Prakashan Kanpur, U.P

Scanned with OKEN Scanner

5	Mrs. Neeta Johar (Assistant Professor)	-	-	Digital Teaching and Happiness	Pursuit of Happiness in Contemporary English Literature	National	2018	Proceeding ISBN: 978-81-923135-4-2	Govt. Pataleshwar College Masturi	Chhattisgarh Gyan Raipur
6	Dr. Sujata Samuel (Assistant Professor)	पर्यावरण चेतना एवं साहित्य	पर्यावरण और समाज	-	-	-	2018	978-81-904909-9-7	Govt. Pataleshwar College Masturi	Rajeshwari Prakashan Guna
7	Dr.Durga Bajpai (Assistant Professor)	पर्यावरण चेतना एवं साहित्य	पर्यावरण संरक्षण – एक अनिवार्य नैतिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व	-	-	-	2018	978-81-904909-9-7	Govt. Pataleshwar College Masturi	Rajeshwari Prakashan Guna M.P.
		भारतीय राष्ट्रवाद स्वरूप एवं विकास	सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और राष्ट्रवाद	-	-	-	2019	978-81-939871-5-5		Sankalp Prakashan Kanpur U.P.
8	Dr. B.L. Mandloi (Assistant Professor)	भारतीय राष्ट्रवाद स्वरूप एवं विकास	राष्ट्रवाद और समाज	-	-	-	2019	978-81-939871-5-5	Govt. Pataleshwar College Masturi	Sankalp Prakashan Kanpur U.P.
9	Dr. Sujata Samuel (Assistant Professor)	भारतीय राष्ट्रवाद स्वरूप एवं विकास	साहित्य और राजनीति	-	-	-	2019	978-81-939871-5-5	Govt. Pataleshwar College Masturi	Sankalp Prakashan Kanpur U.P.
10	Smt Kanti Anchal (Assistant Professor)	भारतीय राष्ट्रवाद स्वरूप एवं विकास	प. दीनदयाल उपाध्याय का राष्ट्र चिंतन	-	-	-	2019	978-81-939871-5-5	Govt. Pataleshwar College Masturi	Sankalp Prakashan Kanpur U.P.
11	Dr.Durga Bajpai (Assistant Professor)	भारतीय साहित्य मे कृष्ण	भारतीय धर्म ग्रंथो मे मानवाधिकार	-	-	-	2019	978-93-81488-57-7	Govt. Pataleshwar College Masturi	Deshbharati Prakashan Delhi
		गांधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता	गांधीजी के विचारों के विभिन्न आयाम	-	-	-	2020	978-81-944964-2-7		Sankalp Prakashan Kanpur
12	Dr. Sujata Samuel (Assistant Professor	गांधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता	भारतीय राजनीति और गांधी	-	-	-	2020	978-81-944964-2-7	Govt. Pataleshwar College Masturi	Sankalp Prakashan Kanpur

Scanned with OKEN Scanner

13	Dr. Kiran Thakur (Assistant Professor)	Fundamentals and Prospects of Catalysis	design and development of bimetallic enantioselective salenco catalysts for the hydrolytic kinetic resolution of terminal epoxy	-	-	-	2020	978-981-14-5849-1	Govt. Pataleshwar College Masturi	Bentham Science Publishers Pte Ltd. Singapore
14	Dr. Durga Bajpai (Assistant Professor)	Mahatma Gandhi and World Peace	मानव कल्याण के संदेशवाहक: गांधी जी की प्रासंगिकता	-	-	-	2020	978-93-89809-23-7	Govt. Pataleshwar College Masturi	Sahitya Sanchay Sonia Vihar Delhi

Principal
Govt. Pataleshwar College Masturi
Distt- Bilaspur C.G.

Scanned with OKEN Scanner

कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की लोक संस्कृति

डॉ. दुर्गा बाजपेयी

डॉ. शारदा दुबे

डॉ. शारदा दुबे

माता- स्व. श्रीमती [illegible] मिश्रा

पिता- स्व. [illegible] प्रसाद मिश्रा

पति- श्री [illegible] कुमार दुबे

शिक्षा- [illegible]

[illegible]

प्रकाशन- [illegible]

[illegible] लोक सेवा आयोग द्वारा [illegible]

संपर्क-

[illegible] कालोनी, सीपत रोड, बिल[illegible]

जिला- बिलासपुर (छत्तीसगढ़) 495

ISBN : 978-93-80511-37

₹ 250/-

महिला सशक्तिकरण
का
वर्तमान परिदृश्य

सम्पादक

दीपक कुमार

डॉ. सुश्री भावना कमाने

डॉ. (श्रीमती) शशिकला सिन्हा

समता प्रकाशन, कानपुर-देहात

Scanned with OKEN Scanner

मूल्य : छः सौ रुपये मात्र

ISBN : 978-93-80511-47-4

पुस्तक का नाम	:	महिला सशक्तिकरण का वर्तमान परिदृश्य
सम्पादक	:	दीपक कुमार, डॉ. सुश्री भावना कमाने, डॉ. (श्रीमती) शशिकला सिन्हा
कापीराइट	:	प्रकाशक
प्रकाशक	:	समता प्रकाशन बजरंग नगर, रूरा कानपुर देहात–209303 मोबाइल : 09450139012, 09936565601, 0945558966
ई-मेल	:	samataprakashanrura@gmail.com
संस्करण	:	प्रथम 2016 ई0
मूल्य	:	600.00 रुपये मात्र
शब्द सज्जा	:	शिखा ग्राफिक्स, जूही, कानपुर मोबाइल : 09305960328
मुद्रक	:	मधुर प्रिन्टर्स 128/141, वाई ब्लाक किदवईनगर, कानपुर

Mahila Sashaktikaran ka Vartman Paridrshya

By: Deepak Kumar, Dr. Sushri Bhavana Kamane,
Dr. (Shrimati) Shashikala Sinha

Price : Six Hundred Only

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

1.	ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने में स्वयं सहायता समूहों का योगदान	11 - 15
2.	पंचायती राज में महिला सशक्तिकरण	16 - 19
3.	महिला सशक्तिकरण: घरेलू हिंसा के संदर्भ में	20 - 25
4.	आज के बदलते परिवेश में महिलाओं की स्थिति	26 - 29
5.	भारतीय लोकतंत्र एवं महिला सशक्तिकरण	30 - 34
6.	महिला सशक्तिकरण सामाजिक उत्थान के संदर्भ में	35 - 38
7.	भारतीय संविधान और महिला अधिकार	39 - 42
8.	'तीसरी सत्ता' उपन्यास में नारी	43 - 46
9.	साहित्य, समाज और महिला उत्पीड़न	47 - 50
10.	महिला सशक्तिकरण	51 - 54
11.	भारत में महिलायें एवं आरक्षण	55 - 56
12.	'गुनाह-बेगुनाह' उपन्यास में महिला सशक्तिकरण	57 - 60
13.	नारी शिक्षा और सशक्तिकरण	61 - 64
14.	महिला सशक्तिकरण में नारी की भूमिका	65 - 68
15.	नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में नारी समस्यायें	69 - 73
16.	महिला सशक्तिकरण बनाम महिलाओं की स्थिति	74 - 77
17.	हिन्दी साहित्य में नारी	78 - 80
18.	नारी सशक्तिकरण और मीराबाई	81 - 84
19.	महिला सशक्तिकरण: एक दृष्टिकोण	85 - 88
20.	आदिवासी समाज में नारी की स्थिति	89 - 92
21.	हिन्दी साहित्य में नारी चिन्तन	93 - 96
22.	आधुनिकता के आइने में महिला सशक्तिकरण	97 - 100

Scanned with OKEN Scanner

20.

आदिवासी समाज में नारी की स्थिति

आज मानव जाति के समक्ष सबसे बड़ी समस्या सम्मानपूर्वक जीवन यापन की है। पग-पग पर वह असुरक्षित एवं उत्पीड़ित है। नारी समाज का एक अभिन्न अंग है। स्त्री के प्रति सही और सन्तुलित नजरिए का गहरा सम्बन्ध स्त्री की छवि से है। खासकर स्त्री रूढ़ि छवि से है। समाज में नारी का स्थान पुरुष के बाद आता है। पुरुष एवं नारी के बीच की असमानता का कारण पुरुष द्वारा नारियों का शोषण कहा जा सकता है।

हम ऐतिहासिक रूप से दृष्टि डालें तो देखते हैं कि समाज के विकास में नारियों की भूमिका किसी भी रूप में पुरुषों से कम नहीं है। सदियों से पुरुषवर्ग द्वारा नारी की घोर उपेक्षा की गयी है। उसे नारीत्व अधिकारों और स्वतन्त्रता से वंचित रखा गया यह दृष्टि मात्र भारतीय समाज में ही नहीं अपितु पश्चिमी देशों में भी है।

भारत में वनांञ्चल से फैला वृहद भाग है जहाँ आदिवासियों की बहुलता व्याप्त है। इनमें हो, उरांव, संथाल, कंवर, अगामी, नागा, गोंड, खासी थारू, गारो, टोडा, परजा, कोरवा आदि प्रमुख हैं। आदिवासी समूहों में नारियों की स्थिति अन्य समाजों की स्थिति से काफी भिन्न है। विविध आदिवासी समूहों में भिन्न-भिन्न भिन्नता देखने को मिलती है। प्राय: सभी आदिवासी समूहों में नारी को अपने परम्परागत समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। आदिवासी समाज में नारी की स्थिति अन्य विकसित समाज की अपेक्षा अच्छी है।

एलविन वेरियर के अनुसार- 'आदिवासी नारियों के रहन-सहन समाज में स्थान और उनके प्रभाव अन्य समाज की नारियों से भिन्न होते हैं। साधारणतया आदिवासी नारियों का समाज में बहुत ऊँचा सम्मानित स्थान होता है।''

आदिवासी समाजों में नारी की सामाजिक स्थिति प्रगतिशील समाज में श्रेष्ठ स्तर पर है। नारी की स्थिति को निम्न बिन्दुओं के आधार पर देख सकते हैं-

सामाजिक समानता- सामाजिक क्षेत्र में नारी और पुरुष में समानता किसी भी समाज में नहीं पायी जाती है। नारी और पुरुष में भेदभाव व असमानता कठिन परिस्थिति

Scanned with OKEN Scanner

में उत्पन्न हुई थी। इस परिस्थिति में पुरुष को अपना पराक्रम दिखाने का मौका मिला अवसर का लाभ उठाकर उसने नारी जाति का शोषण किया और वह स्वामित्व असमानता के कारण निरन्तर अनुगामिनी की तरह जीती है। हमारे समाज में गठन का निष्क्रिय रूप समर्पण या आत्मपीड़न है। परन्तु आदिवासी समाज में पुरुष के बीच विभिन्नता पायी जाती है वे समानता के आधार पर नृत्य-संगीत करते श्रम विभाजन के हिस्सेदार भी होते हैं। जीवकोपार्जन में स्त्री और पुरुष सहभागी होते हैं। डॉ. हैज ने 'हो' आदिवासी समाज में स्त्री पुरुष की समानता करते हुए लिखा है- 'हो जनजाति पुरुष अपनी पत्नी का बराबर साथ देते हैं। दुःख में एक दूसरे से परामर्श करते हैं और उनका आदर करते हैं।

वैवाहिक स्थिति- आदिवासी समाज में वैवाहिक क्षेत्र में नारी को सम्मान प्राप्त है। आदिवासी समूहों में लड़कियों को अपना जीवनसाथी चुनने का अधिकार होता है। गारो लड़की अपने जीवनसाथी का चुनाव स्वयं करती है जनजाति में विवाह के समय कन्या बारात लेकर वर के घर आती है और वहाँ सम्पन्न होता है। कई आदिवासी समूहों में बाल विवाह आज भी प्रचलन में है वर्तमान में शिक्षा के प्रचार-प्रसार ने नारियों को जाग्रत कर दिया है।

कन्यादान- आज सभ्य कुलीन समाज में दहेज जैसी कुप्रथा फैशन के प्रचलित है, परन्तु आदिवासी समाज में दहेज जैसी कलुषित प्रथा नहीं पायी कन्या पक्ष से किसी भी प्रकार का दहेज बंधन नहीं है इसके विपरीत वर पक्ष द्वारा पक्ष को कन्या मूल्य दिया जाता है। इसे 'डाली' या 'महाला' कहा जाता है। मुड़िया जनजाति में कन्या मूल्य का चलन है। जो लड़की कठोर परिश्रमी गुणवान एवं कुशल होती है उसके लिए वर पक्ष अधिक कन्या मूल्य देते हैं। उरांव, गोंड, नागा, आदिवासी समाज में 'कन्यामूल्य' की प्रथा है।

'कन्या मूल्य' के कारण आदिवासी समाज में नारियों की सामाजिक सुदृढ़ है उन्हें पर्याप्त इज्जत दी जाती है। आदिवासी नारी पुरुष का रौब तथा दबाव भी स्वीकार नहीं करती है।

विवाह विच्छेद- आदिवासी समाज में पुरुषों की ही भाँति विवाह सम्बन्ध मुक्ति प्राप्त कर सकती है। यदि कोई अपनी पत्नी की मूलभूत आवश्यकताओं को करने में असमर्थ है तो उसकी पत्नी उससे विवाह विच्छेद कर सकती है। संथाल, थारू, समाज में यह प्रथा व्याप्त है परन्तु गोंड आदिवासी में स्त्री-पुरुष दोनों को समान से विवाह विच्छेद का अधिकार है।

Scanned with OKEN Scanner

विधवा विवाह- आदिवासी समाज में विधवा विवाह प्रतिबंधित नहीं है परन्तु सभी आदिवासी समूहों में परम्परागत रूप से मान्य है। भील आदिवासी पति की मृत्यु उपरान्त शोक काल समाप्त होने पर पुन: विवाह कर सकती है, जबकि उरांव आदिवासी समूह में यह अपेक्षा की जाती है कि विदुर ही विधवा स्त्री से विवाह करे। इस समाज में विधवा महिलाओं को अन्य स्त्रियों की ही भाँति अधिकार प्राप्त हैं। परंतु मैंदानी प्रदेश के आदिवासी जो सांस्कृतिक सम्पर्क की प्रक्रिया में अग्रणी रहे हैं उनमें विधवाओं के प्रति भेदभाव बढ़ा है।

आर्थिक स्थिति- आदिवासी समाज में नारी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती। कन्या जब तक अविवाहित है उसे समान अधिकार प्राप्त होते हैं परन्तु विवाहोपरान्त सम्पत्ति पर उसका कोई अधिकार नहीं रहता है। सिर्फ पति की सम्पत्ति ही उसकी सम्पत्ति मानी जाती है।

अंग्रेज प्रशासकों के समय प्रकाशित अभिलेखों में संथालों के उत्तराधिकार के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किये गये थे। उनके उत्तराधिकार के नियम उनके व्यवहार, संस्कार एवं परम्परा पर आधारित हैं।

ए. कैम्पवेली और बोडिंग के संथाल उत्तराधिकार सम्बन्धी लेख बिहार और उड़ीसा रिसर्च सोसायटी के सितम्बर 1915 और सितम्बर 1916 के जनरल में प्रकाशित हुए थे। श्री कैम्पवेली ने लिखा था- ''न कोई स्त्री स्थावर या अस्थावर सम्पत्ति पर उत्तराधिकार प्राप्त करती है और न कोई भी स्त्री के वंशज के आदमी को उत्तराधिकार मिलता है।''

आदिवासी नारियाँ आर्थिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं। वे कठोर परिश्रमी, साहसी, स्वावलंबी होती हैं। आदिवासी नारियाँ खेत, सड़कों, कारखानों में पुरुषों के समान काम करती हैं। परिवार के पालन-पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। किन्तु पुरुष प्रधान व्यवस्था के कारण उसके कार्य की कोई अहमियत नहीं है। इस प्रकार आदिवासी नारियाँ हिमांचल प्रदेश की गुर्जर, राजस्थान की गडूलिया, नीलगिरि पहाड़ियों की टोंड़ा जनजाति आर्थिक दृष्टि से मूल्यवान मानी जाती है।

धार्मिक स्थिति- आदिवासी समाजों में धार्मिक क्षेत्र में नारियों की स्थिति पुरुषों की अपेक्षा निम्न है। बिहार, बंगाल और म०प्र० के संथाल आदिवासी समाज में संथाल नारियाँ अपने समाज की सामुदायिक पूजा में भाग नहीं ले सकती हैं यह अधिकार मात्र पुरुषों तक सीमित है, परन्तु कुछ जनजातियों में इसके विपरीत है असम की लेप्चा आदिवासी में स्त्री पुरोहित का चलन है। धार्मिक मामलों में नारियों की श्रेष्ठता के उदाहरण प्राय: कम मिलते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

राजनीतिक स्थिति- राजनीतिक क्षेत्र में आदिवासी नारियाँ परम्परागत रूप से भागीदारी निभाती रही हैं। बिहार एवं उ०प्र० को थारू जनजाति की नारियाँ पंचायत में पुरुषों के बराबर अपनी भागीदारी निभाती हैं। स्वतन्त्र रूप से अपने विचारों को व्यक्त करती हैं। परिणामस्वरूप आज आदिवासी नारियाँ ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत संसद आदि में बड़ी संख्या में चुनकर पहुँचने लगी हैं। इस प्रकार आदिवासी नारी की स्थिति राजनीतिक क्षेत्र में अपना स्थान प्रशंसनीय है।

निष्कर्षत: नारी आज हमारे दृश्यपटल पर छाई हुई है। विभिन्न स्थितियों का सामना करके चौखट के बाहर आकर वह हर किस्म के श्रम सम्बन्धों से बँधने की कोशिश कर रही हैं आदिवासी समाज में नारी की स्थिति वैदिक काल की स्थिति से ही मिलती जुलती है। नारी ने सदैव से ही विपरीत परिस्थिति का धैर्यपूर्वक सामना करके अपने को सुदृढ़ बनाया है।

संदर्भ-सूची

1. भारतीय इतिहास में नारी, डॉ. सुरेश चन्द्र शुक्ला
2. महिला सशक्तिकरण का सच-मीनाक्षी निशांत सिंह
3. महिला एवं बाल विकास के नूतन आयाम
4. प्रकाश नारायण नाटणी, स्त्री अस्मिता: साहित्य और विचारधारा
5. समाजशास्त्र-गुप्ता एवं शर्मा

डॉ. (श्रीमती) दुर्गा बाजपेयी
समाजशास्त्र विभाग
शासकीय पातालेश्वर महाविद्यालय मस्तूरी
जि०-बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

Scanned with OKEN Scanner

राष्ट्रीय कार्यशाला

12 जनवरी 2017, गुरूवार

"नैसर्गिक संपदा से परिपूर्ण छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद का दंश"

कार्यवृत्त

:: संपादक ::

डॉ. शारदा दुबे

:: उप-संपादक ::

डॉ. आर.एस. साहू

राजीव गांधी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय

लोरमी, जिला - मुंगेली (छ.ग.)

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

शीर्षक	लेखक का नाम	पेज नं.
[illegible] संसाधनों से परिपूर्ण छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद का दंश	डॉ. अंजु शुक्ला	1
[illegible] NAXAL MENACE: HOW TO TACKLE IT ?	Dr. Bimal Chandra	3
[illegible] और संचार के साधनों पर नक्सली गतिविधियों का प्रभाव	डॉ.राधेश्याम साहू डॉ. चन्द्रशेखर चौबे	6
[illegible] के सामाजिक जीवन पर नक्सलवाद का प्रभाव	प्रीति पटेल	8
[illegible] का बढ़ता प्रभाव	मुकेश यादव सुबुद्धि यादव	11
[illegible] में नक्सलवाद	कु. आरती जायसवाल कु. भारती शर्मा	15
[illegible] में नक्सलवाद को दूर करने का उपाय / सुझाव	अक्षय सिंह राजपूत	17
[illegible] के सामाजिक जीवन पर नक्सलवाद का प्रभाव	गणेश राम जांगड़े बलराम प्रसाद कौशिक	19
[illegible] के सामाजिक जीवन पर नक्सलवाद का प्रभाव	डॉ. श्रीमती दुर्गा बाजपेयी डॉ. शारदा दुबे	21
[illegible] में नक्सलवाद का इतिहास	गोविंद राम अंचल	23
[illegible] दृष्टिकोण से नक्लवादियों की गतिविधियां	प्रो. एच.एस. राज डॉ.अश्वनी कुमार ध्रुव	24
[illegible] विराम के उपाय या सुझाव	प्रो. जे.आर. ध्रुव प्रो. श्रीमती निर्मला जांगड़े	30
[illegible] में नक्सलवाद	डॉ. अजीत कुमार यादव श्रीमती मिना देवांगन	33
[illegible] विराम के उपाय एवं सुझाव के रूप मे [illegible] वर्तमान परिपेक्ष्य में एक अध्ययन	डॉ. आरती तिवारी डॉ. अविनाश लाल	35
[illegible] का इतिहास	प्रो. अजय कुमार पन्ना अजित कुमार एक्का	39
[illegible] विराम के उपाय	श्रीमती विनय प्रभा मिंज	41
[illegible] एवं मानवाधिकार	कु. प्रियंका यादव	44
[illegible] पर अंकुश हेतु किये जा रहे शासकीय प्रयास	राजेश घोषले	48
[illegible] में नक्सली समस्या का राजनैतिक विश्लेषण	डॉ. संध्या जायसवाल जफर अली, रामकुमारी भारती	50

Scanned with OKEN Scanner

आम लोगो की लामबंदी तथा सामाजिक आर्थिक कार्यक्रम के समन्वयक से पिछड़े प्रदेशो में निवास करने वाले लोगो का कल्याण किया जा सकता है। पंचायती राज व्यवस्था स्थापना करके व भूमिहिन नैसर्गिक संरक्षण तथा वनोपज अधिकार की स्थापना कर हम उनको शोषण से बचा सकते है। छत्तीसगढ़ राज्य में उचित संवाद नक्सलियों के बीच जरुरी है। ताकि नक्सलियों की समस्या का निदान ढूढ़ा जाये। नही तो वर्तमान परिवेश पर जो नक्सली नैसर्गिक संपदा पर विकट समस्या का दंश दिखाई दे रहा है। उससे और अधिक दिखाई देगा।

--00--

छत्तीसगढ़ के सामाजिक जीवन पर नक्सलवाद का प्रभाव

डॉ. श्रीमती दुर्गा बाजपेयी
विभागाध्यक्ष समाज शास्त्र
शास. पातालेश्वर महावि
मस्तूरी

डॉ. शारदा दुबे
विभागाध्यक्ष समाज शास्त्र
राजीव गांधी शासकीय
कला एवं वाणिज्य महावि. लोरमी

नैसर्गिक संपदा खनिज संपदा से परिपूर्ण छत्तीसगढ़ का राजनांदगांव बस्तर, कांकेर, सुकमा, नारायणपुर, बीजापुर, दंतेवाड़ा, कोडागांव, रायपुर का अधिकांश क्षेत्र मुंगेली जिला का लोरमी विकासखण्ड का अचानकमार (जिसके आगे मध्यप्रदेश का प्रसिद्ध स्थल अमरकंटक अवस्थित है) नक्सलवाद की समस्या का दंश झेल रहे है। बस्तर जो सबसे अधिक इस समस्या से प्रभावित है। वही पर्यटन की दृष्टि से कोटमसर गुफा, कैलाश गुफा, चित्रकोट तथा तीरथगढ़ जलप्रपात है प्रकृति ने अपनी सारी सुन्दरता इस क्षेत्र में उड़ेल दी है वह आज सैलानी विहीन है। बैलाडीला में लौह अयस्क मिलता है। ये सभी क्षेत्र गोंड़, हल्बा, अबूझमाड़िया परजा, कोरमा, गड़ावा, भतरा, बैगा आदि जनजातीय क्षेत्र है। बस्तर में 1984 से नक्सलवादी गतिविधियों का विस्तार हुआ। प्रारंभ में नक्सली आदिवासियों के हितैषी के रूप में आये उन्हे बनरक्षक, पुलिस के अत्याचारों से मुक्त कराना उन्हे कोई भी तकलीफ है तो वे नक्सलियों को सूचना देते थे नकसली गांव में पंचायत लगाकर उसकी समस्या सुनने थे और निचले स्तर के कर्मचारी से संबंधित मामला है तो उसे वहीं बुलाकर 'ठीक' करते थे और उच्चधिकारियों से संबंधित है तो उसी के माध्यम से चेतावनी पहुंचाते थे।

पिछले तीस वर्षो में हालात इतने बद्तर हो गये है कि जनता दहशत में जी रही है। कलेक्टर, राजनेता, पुलिस, ग्रामीण सभी नक्सली हिंसा से पीड़ित है प्रतिदिन जान - माल का नुकसान हो रहा है विकास थम गया है नक्सलियों द्वारा बंद ब्लैक आउट राष्ट्रीय पर्व का बहिष्कार चुनाव का बहिष्कार का आव्हान किया जाता है। हाट - बाजार में सरे आम गोलियां चल रही हैं आधुनिकतम हथियारों से लैस नक्सली, लैंड माइन्स विस्फोटक का इस्तेमाल कर बडी - बडी वारदातों को अंजाम दे रहा है। प्रशासन के सारे दावे खोखले है। मासूम बच्चों को भी मुखबिरी के शक में सरे आम मार डाला जा रहा है। पढ़ाई, विकास सब थम गया हैं एक समानांतर सरकार चल रही है।

Scanned with OKEN Scanner

... छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद का दंश

नक्सलवाद के उदय का कारण सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक असमानता और शोषण है ... और असंतुलित विकास के कारण नक्सली हिंसा लगातार बढ़ रहा है। नक्सलवादी ... फिर भी राज्य से संघर्ष कर रहे है, जल, जंगल, जमीन के लिए संघर्ष कर रहें है भूमि सुधार कानूनों के सही ढंग से लागू न हो पाने के कारण जमीदारों ने गरीबों की जमीन पर कब्जा कर लिया और मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी देकर शोषण शुरु हुआ, इसी का फायदा नक्सलियो ने उठाया और मासूमों को रोजगार और न्याय दिलाने का झांसा देकर अपने संगठन में शामिल कर लिया ... नक्सलवाद की असल शुरुआत हो गयी। चीन के क्रांतिकारी कम्युनिष्ट नेता माओत्सेतुंग ने अपनी ... किताब में लिख दिया ''क्रांति बंदूक की नाल से निकलती है'' यही सिद्धांत नक्सलवादी चिन्तन का आधार बन गया और पुलिसिया तंत्र इनक आगे बेबस हो गया।

सन् 65-66 में मार्क्स - लेनिन और माओं की विचारधारा पर कम्युनिष्ट नेता चारु मजूमदार ... लिखे ऐतिहासिक आठ दस्तावेज नक्सलवादी आन्दोलन के आधार बने तथा इस आंदोलन का ... आम किसानों के हक में भूमि सुधार करना, सामन्ती अन्यायों से जनता की रक्षा करना मजदूरों ... उनकी मजदूरी दिलाना बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराना, सूदखोरों और महाजनों के चंगुल से ... और मजदूरों को बचाना शोषित, दलित और पीड़ित जनता में राजनैतिक, सामाजिक और ... चेतना जागृत कर संगठित करना; आदिवासियों की रक्षा करना उन्हे ठेकेदार और पुलिस के ... से सुरक्षा प्रदान करना था परन्तु आज स्थिति ठीक उलट है।

बस्तर के एक कोने में सिमटे रहने वाले नक्सलियो ने छत्तीसगढ़ के लगभग 3956 ... अपना कब्जा जमा लिया है। इन गांवों में प्रशासन की मर्जी नही बल्कि नक्सलियों का साम्राज्य ... है विगत वर्षो में राज्य नक्सली हिंसा की सूची में प्रथम स्थान पर है। सड़के बंद करना, टॉवर उड़ाना, बिजली बंद करना, स्कूलों को उड़ाना, सार्वजनिक स्थलों पर बम ब्लास्ट करना नागरिकों से भरी बस को उड़ाना हर गांव के लड़के लड़कियों को भयाक्रांत कर अपनी सेना में शामिल करना। रेललाइनों पुलों को तबाह करना राज व्यवस्था को सुधारना नही बल्कि उन औजारों को ही बेकार बना देना है, जिससे कोई सरकार व्यवस्था को कायम रखती है।

नक्सली समस्या का समाधान नही हो पा रहा क्योंकि उनके संगठन दुर्गम आदिवासी इलाकों में सक्रिय हाते है ये ऐसे इलाके है जहॉं नियमित रुप से प्रशासन पहुंच पाता है न की उसका तंत्र यहॉं तक कई बार सुरक्षा बल इलाके के भूगोल से सक्रिय नही होते। इन इलाको में रोटी, कपड़ा मकान जैसे बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। यदि नक्सली परिवर्तन चाहते है, परन्तु छत्तीसगढ़ का सामाजिक जीवन बुरी तरह प्रभावित है इसलिए नक्सली गतिविधियों पर अंकुश जरुरी है, ताकि समाज के अमन चैन कायम हो सके।

संदर्भ :-

1. सिंह प्रकाश (1999) द नक्सलाईट मूवमेंट इन इंडिया रुपा एंड कंपनी नई दिल्ली।
2. जौहरी जे.सी. (1972) नक्सलाईट पॉलिटिक्स इन इंडिया रिसर्च पब्लिकेशंस नई दिल्ली।

---00---

Scanned with OKEN Scanner

महिला सशक्तिकरण का वर्तमान परिदृश्य

सम्पादक- दीपक कुमार, डॉ सुश्री भावना कमाने
डॉ० (श्रीमती) शशिकला सिन्हा

Scanned with OKEN Scanner

मूल्य : छः सौ रुपये मात्र
ISBN : 978-93-80511-47-4

पुस्तक का नाम : महिला सशक्तिकरण का वर्तमान परिदृश्य
सम्पादक : दीपक कुमार, डॉ. सुश्री भावना कमाने,
डॉ. (श्रीमती) शशिकला सिन्हा
कापीराइट : प्रकाशक
प्रकाशक : समता प्रकाशन
बजरंग नगर, रूरा
कानपुर देहात-209303
मोबाइल : 09450139012, 09936565601, 09455589663
ई-मेल : samataprakashanrura@gmail.com
संस्करण : प्रथम 2016 ई0
मूल्य : 600.00 रुपये मात्र
शब्द सज्जा : शिखा ग्राफिक्स, जूही, कानपुर
मोबाइल : 09305960328
मुद्रक : मधुर प्रिन्टर्स
128/141, वाई ब्लाक किदवईनगर, कानपुर

Mahila Sashaktikaran ka Vartman Paridrshya

By: Deepak Kumar, Dr, Sushri Bhavana Kamane,
Dr. (Shrimati) Shashikala Sinha

Price : Six Hundred Only

समर्पण

उन शोषित-पीड़ित महिलाओं को
जो मानवीय मूल्यों से वंचित
अनाथ अवस्था में दर-दर की
ठोकरें सहती हुई एवं विक्षिप्त
अवस्था में विचरण करती हुई
देश-दुनिया से बेखबर हैं!
को
सादर...

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

1.	ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने में स्वयं सहायता समूहों का योगदान	11 - 15
2.	पंचायती राज में महिला सशक्तिकरण	16 - 19
3.	महिला सशक्तिकरण: घरेलू हिंसा के संदर्भ में	20 - 25
4.	आज के बदलते परिवेश में महिलाओं की स्थिति	26 - 29
5.	भारतीय लोकतंत्र एवं महिला सशक्तिकरण	30 - 34
6.	महिला सशक्तिकरण सामाजिक उत्थान के संदर्भ में	35 - 38
7.	भारतीय संविधान और महिला अधिकार	39 - 42
8.	'तीसरी सत्ता' उपन्यास में नारी	43 - 46
9.	साहित्य, समाज और महिला उत्पीड़न	47 - 50
10.	महिला सशक्तिकरण	51 - 54
11.	भारत में महिलायें एवं आरक्षण	55 - 56
12.	'गुनाह-बेगुनाह' उपन्यास में महिला सशक्तिकरण	57 - 60
13.	नारी शिक्षा और सशक्तिकरण	61 - 64
14.	महिला सशक्तिकरण में नारी की भूमिका	65 - 68
15.	नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में नारी समस्यायें	69 - 73
16.	महिला सशक्तिकरण बनाम महिलाओं की स्थिति	74 - 77
17.	हिन्दी साहित्य में नारी	78 - 80
18.	नारी सशक्तिकरण और मीराबाई	81 - 84
19.	महिला सशक्तिकरण: एक दृष्टिकोण	85 - 88
20.	आदिवासी समाज में नारी की स्थिति	89 - 92
21.	हिन्दी साहित्य में नारी चिन्तन	93 - 96
22.	आधुनिकता के आइने में महिला सशक्तिकरण	97 -100

Scanned with OKEN Scanner

23. महिला सशक्तिकरण में महिलाओं का योगदान 101-104
24. महिला सशक्तिकरण: एक समाजशास्त्रीय विवेचन 105-108
25. मालती जोशी की कहानियों में महिला सशक्तिकरण 109-112
26. 'इदन्नमम' उपन्यास में महिला सशक्तिकरण 113-116
27. महिला सशक्तिकरण: उपाय और सुझाव 117-121
28. साहित्य और महिला सशक्तिकरण 122-125
29. महिला सशक्तिकरण: दशा और दिशा 126-129
30. महिला सशक्तिकरण अर्थात् महिलाओं की स्थिति 130-133
31. महिला सशक्तिकरण का ग्रामीण संदर्भ 134-136
32. आधुनिकता और महिला सशक्तिकरण 137-140
33. आदिवासी हिन्दी उपन्यासों में महिला सशक्तिकरण 141-145
34. महिलाओं की पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति 146-149
35. स्त्री विमर्श: स्वरूप एवं अर्थवत्ता 150-153
36. महिला सशक्तिकरण: एक परिदृश्य 154-156
37. हिन्दी का समकालीन कथा साहित्य और स्त्री-विमर्श 157-159
38. कन्या-भ्रूण हत्या की समस्या और समाधान 160-162
39. 'सारा आकाश' उपन्यास में नारी 163-166
40. अनदेखे अनजान पुल उपन्यास में 'निन्नी' की निर्भीकता 167-169
41. 'कगार की आग' उपन्यास में महिला सशक्तिकरण 170-172
42. नारी की दशा और दिशा 173-175
43. महिला सशक्तिकरण में लिंगभेद की अवधारणा 176-179
44. महिला सशक्तिकरण की पृष्ठभूमि 180-182
45. महिला सशक्तिकरण का वर्तमान परिदृश्य 183-186
46. महिलाएँ एवं राजनीति 187-190
47. महिला सशक्तिकरण का यथार्थ 191-193
48. महिला सशक्तिकरण: के परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की सामाजिक स्थिति 194-196
49. महिला सशक्तिकरण में मनरेगा की भूमिका 197-199
50. औरत और कार्यक्षेत्र 200-202
51. साहित्य में महिला सशक्तिकरण 203-208

Scanned with OKEN Scanner

1.

ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने में स्वयं सहायता समूहों का योगदान

भारत की जनगणना रिपोर्ट वर्ष (2011) के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या 1210.19 करोड़ है। जिसमें पुरुषों की संख्या 623.7 करोड़ (51.54 प्रतिशत) है, एवं स्त्रियों का भाग 586.46 करोड़ (48.46 प्रतिशत) है। कुल जनसंख्या का लगभग आधा भाग होने के कारण समाज के सन्तुलित विकास तथा समृद्धि में स्त्रियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। महिलाओं का एवं उनके माध्यम से देश का विकास करने के उद्देश्य से संविधान, कानून और भारत सरकार द्वारा विशेष प्रयास किए गए हैं। स्वतन्त्र भारत में महिलाओं को समानता का दर्जा दिया गया, संविधान की धारा 14 राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक क्षेत्रों में स्त्रियों के पुरुषों के समान अधिकार व अवसर प्रदान करती है, धारा 15 लिंग, धर्म व जाति के आधार पर किसी भी नागरिक के साथ भेदभाव का निषेध करती है, धारा 15 (3) राज्य के महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक भेदभाव करने का अधिकार देती है एवं धारा 39 राज्य को अपनी नीतियाँ इस प्रकार बनाने के लिए अनुबंधित करती है कि जिसमें समान कार्य के लिए समान वेतन प्राप्त हो, इस हेतु समान कार्य के लिए समान वेतन अधिनियम 1976 लागू किया गया किन्तु वास्तव में भारतीय समाज में महिलाओं को कभी भी एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व के रूप में समाज में स्थान नहीं दिया गया है, अपने भरण-पोषण, सुरक्षा व जीवन यापन हेतु वे पुरुषों पर आश्रित होती हैं साथ ही महिलाओं की प्रस्थिति धनी-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित, ग्रामीण-नगरीय के संदर्भ में अलग-अलग है।

महिलाओं के विकास और सशक्तिकरण के लिए केन्द्र व राज्यों की सरकारों ने अनेक नीतियों, योजनाओं और कार्यक्रमों को लागू किया और उसके लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए केन्द्र से लेकर पंचायत स्तर तक प्रयास प्रारम्भ किये लेकिन ग्रामीण महिलाओं की स्थिति व समस्याएँ शहरी महिलाओं से भिन्न होने के कारण इन नीतियों, योजनाओं और कार्यक्रमों का प्रभाव ग्रामीण महिलाओं पर अपेक्षित रूप से कम पड़ा यद्यपि सम्पूर्ण देश की महिलाओं की कुल जनसंख्या में ग्रामीण महिलाओं की जनसंख्या

Scanned with OKEN Scanner

शहरी महिलाओं की तुलना में कहीं अधिक है। भारत में लगभग 85 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएँ अपने भरण पोषण के लिए कृषि, पशुपालन, वानिकी आदि पर निर्भर हैं। ये महिलाएँ घरेलू कामकाज, बच्चों की देखभाल आदि के साथ कृषि कार्यों में प्रतिदिन 14 से 16 घण्टे तक काम करती हैं लेकिन उनके योगदान को कहीं भी नहीं आँका जाता है। अशिक्षा, अकुशलता निम्न स्वास्थ्य, खराब जीवन दशाएँ भारतीय ग्रामीण महिलाओं का पर्याय माना जाता है। देश की जनसंख्या का बड़ा भाग होने के कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय विकास दर पर भी इनकी स्थिति का बुरा प्रभाव पड़ता है, अत: इन महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु समूह आधारित दृष्टिकोण अपनाया गया।

महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं को भौतिक एवं बौद्धिक संसाधनों तथा सूचनाओं तक पहुँचाना एवं उन पर नियंत्रण रखना, घरेलू और सार्वजनिक स्तर पर नीति निर्माण और निर्माण प्रक्रिया में भागीदारी एवं अधिक आत्मविश्वास और शक्ति प्राप्त करना है।

सशक्तिकरण के बुनियादी मापदण्डों के आधार पर ग्रामीण महिलाओं की स्थिति, योगदान और आगे बढ़ने की संभावनाओं का मूल्यांकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं को शिक्षा में कम प्राथमिकता मिलती है, उन्हें उपयुक्त भोजन और आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएँ नहीं मिलती हैं। रोजगार के क्षेत्र में उनकी उपस्थिति कम है, उनकी उत्पादकता कम है, आय कम है तथा असंगठित क्षेत्रों में उन्हें पुरुषों की तुलना में कम वेतन मिलता है। पारिवारिक निर्णय में सहभागिता व अपने परिवार की समृद्धि में वे जो योगदान करती हैं उनकी उपेक्षा की जाती है साथ ही ये महिलाएँ अत्यधिक असंगठित हैं। पर्याप्त ज्ञान व कौशल के अभाव में बदलती हुई अर्थव्यवस्था के साथ वे समायोजन कर सकने में अक्षम हैं तथा सरकारी योजनाओं में उनकी स्थानीय आवश्यकताओं व समस्याओं के प्रति नीति निर्माताओं में समझ का अभाव उन्हें विकास कार्यक्रमों में भागीदार बनने से विमुख करता है।

समाज द्वारा वर्षों से स्वीकृत जीवन परिस्थितियों में परिवर्तन सरल कार्य नहीं है और किसी व्यक्ति के एकल प्रयास से तो निष्कर्ष आ जाना लगभग असम्भव होता है, आवश्यकता इस बात की होती है, कि कुछ व्यक्ति सामूहिक रूप से एक ही लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयास करें और धीरे-धीरे ही सही, उनकी संख्या में वृद्धि होती जाए। आर्थिक रूप से सक्षम होते जाना इस प्रक्रिया की अनिवार्य शर्त है और स्वयं सहायता समूहों का गठन, उसके परचात् संकुल व शिखर समीतियाँ तथा समूहों की नेटवर्किंग इसी आवश्यकता को पूरा करते हैं।

स्वयं सहायता समूह की अवधारणा बांग्लादेश के ग्रामीण बैंक से प्रारम्भ हुई, जिसकी स्थापना नोबल पुरस्कार विजेता श्री मोहम्मद युनूस ने की थी। उन्होंने 1976 में बांग्लादेश में अकाल के दौरान गरीबी के खिलाफ संघर्ष किया उनका ये स्पष्ट मत है कि अगर गरीब लोगों को सही व उचित शर्तों पर ऋण उपलब्ध कराया जाए तो छोटे-छोटे लाखों लोग अपनी लाखों छोटी-छोटी गतिविधियों के जरिए विकास का सबसे बड़ा चमत्कार कर सकते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने गरीबी उन्मूलन के लिए पहला ऋण स्वयं दिया जो 27 डालर का था।

स्वयं सहायता समूहों से जुड़े अनेक शोध इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि समूह की सदस्यता के बाद ग्रामीण महिलाएँ सामाजिक रूप से सशक्त हुई हैं तथा आय, रोजगार प्रशिक्षण प्राप्ति से उनकी कुशलता में वृद्धि हुई है। समूह के माध्यम से महिलाएँ स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण एवं पारिवारिक जीवन से जुड़ी परेशानियों और समस्याओं पर चर्चा करती हैं और इनके समाधान हेतु उचित कदम उठाने का प्रयास करती हैं। समूह से जुड़ने के बाद महिलाएँ बच्चों की शिक्षा, पौष्टिक, आहार, परिवार नियोजन, एड्स, साफ-सफाई, व अन्य सामाजिक विषयों पर जागरुक हुई हैं और अपने अधिकारों के बारे में बेहतर समझ विकसित करना शुरू कर दिया है। ये समूह न केवल महिलाओं के व्यक्तिगत और सामाजिक सशक्तिकरण में सहयोग करते हैं बल्कि सामुदायिक विकास सम्बन्धी गतिविधियाँ भी इसके द्वारा संचालित की जाती है।

किसी भी मानव निर्मित संरचना, अवधारणा या कार्यक्रम में त्रुटियाँ, मतभेद और ढाँचागत कमियाँ स्वाभाविक हैं, स्वयं सहायता समूह आन्दोलन भी इसका अपवाद नहीं है। स्वयं सहायता समूहों की स्थिति के बारे में पूर्व में हुए कई अध्ययन, समूहों की संरचना और उनके प्रकार्य, दोनों ही क्षेत्रों में इसके दोषों को साफ दर्शाते हैं, साथ ही प्रेरणादायी संगठन, जो इस आन्दोलन का एक अपरिहार्य अंग हैं, की भूमिका पर भी प्रश्न उठाये जाते रहे हैं। स्वयं सहायता समूह के दोषों में मुख्यत: समूह के सभी सदस्यों में आर्थिक, सामाजिक, जातिगत या सांस्कृतिक किसी भी आधार पर समरूप न होना, समूह के सदस्यों में गरीबी रेखा से नीचे से व्यक्ति तथा अध्यक्षता ग्राम के आर्थिक व राजनीतिक रूप से प्रभावशाली किसी परिवार के सदस्य के हाथों में होना, समूह गठन व संचालन के कार्य हेतु प्रशिक्षित और समर्पित कर्मचारियों के अलावा पर्याप्त संसाधनों की अत्यधिक कमी का होना, भ्रष्टाचार के कारण समूहों द्वारा अपने रिवाल्विंग फंड का एक तिहाई हिस्सा अधिकारियों को रिश्वत के रूप में देना तथा बैंकों में खाता खुलवाने या समूह को पंजीकृत करवाने हेतु सरकारी दफ्तरों के चक्कर लगाने की शिकायतें मिलना आदि हैं। स्वयं सहायता समूह को स्वरोजगार का प्रशिक्षण देने वाले या तो अशासकीय संगठनों के

Scanned with OKEN Scanner

सदस्य होते हैं या स्वयं सहायता समूहों के ऐसे लोग जो अशासकीय संगठनों से प्रशिक्षण पाते हैं इन्हें कठोर व्यवसायिक अनुभव की कमी होती है जिसके कारण आय-अर्जन व समूह का स्थायित्व प्रभावित होता है।

इन समस्त दोषों के बावजूद स्वयं सहायता समूह योजना निर्धन ग्रामीण महिलाओं में स्वावलंबन, सहयोग और सशक्तिकरण की भावना का विकास करता है, जिन्हें वे नियमित बचत एवं बैंक ऋण जैसी गतिविधियों के कारण प्राप्त करती हैं। इसके माध्यम से गरीब ग्रामीण महिलाओं को समूह में संगठित कर उनमें प्रशिक्षण द्वारा तकनीकी कौशल का विकास किया जा रहा है। समूहों के माध्यम से उपलब्ध कराए गए रोजगार कुशल, अकुशल भूमिहीन व गृहणी इत्यादि सभी वर्ग की महिलाओं से सम्बन्धित हैं। प्रशिक्षण, वित्तीय सहयोग आदि के माध्यम से आर्थिक, सामाजिक विकास की संभावनाएँ वास्तविकता में परिणित हो रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से डेयरी, पोल्ट्री, मशरूम उत्पादन, फूड प्रोसेसिंग इकाई, कुटीर उद्योग व अन्य अनेक गतिविधियाँ संचालित की जा रही हैं। इन समूहों में सदस्य सामूहिक रूप से धन का उपयोग और ऋण की समय पर वापसी हेतु प्रयास करते हैं। स्वयं सहायता समूह योजना से ग्रामीण गरीबों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने, बर्बादी रोकने एवं सामाजिक संरचना के हाशिए पर खड़ी महिलाओं में आत्मसम्मान की भावना उत्पन्न करने की आशा की जाती है।

ग्रामीण विकास के क्षेत्र में भी स्वयं सहायता समूह योजना का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है यह ग्रामीण गरीबों को औपचारिक बैंकिंग के माध्यम से वित्तीय सेवाएँ प्राप्त करने की क्षमता देता है तथा प्राप्त ऋण के उद्देश्य को उपभोग के स्थान पर उत्पादन की गतिविधियों एवं सामूहिक परिसम्पत्ति के निर्माण के उद्देश्य की दिशा में परिवर्तित कर देता है। स्वयं सहायता समूहों के कारण सदस्यों और गैर सदस्यों के बीच मितव्ययिता और बचत की आदतों का विकास होता है जिसके कारण उसकी आत्मनिर्भरता और स्व वित्त पोषण में बढ़ोत्तरी होती है, गाँवों में उत्पादों के व्यवसायीकरण को बढ़ावा मिलता है, ग्राम स्तर पर वित्तीय प्रबन्धन व कौशल का प्रशिक्षण प्राप्त होता है, लघु उद्यमों के प्रोत्साहन हेतु आधारभूत संरचना तैयार होती है और उद्यम अनुभव की प्राप्ति होती है। बैंक को गाँवों से अधिक धनराशि प्राप्त होती है। सामाजिक मुद्दों और स्थानीय राजनीति में महिलाओं की ज्यादा भागीदारी परिवार नियोजन दर में वृद्धि, समूह के सदस्यों के बच्चों के स्कूल में नामांकन दर में वृद्धि, परिवार के सदस्यों द्वारा महिला प्रताड़ना की बुरी आदतों, बाल विवाह, बाल श्रम और दहेज जैसी कुप्रथाओं का विरोध करने की शक्ति का विकास होना आदि सम्मिलत है।

निःसंदेह रूप से स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से गरीब महिलाओं को ज्यादा पहुँच वित्तीय सेवाओं तक हुई है। साथ ही बैंकों को भी समूह से लाभ पहुँचा है। सामाजिक सुरक्षा और लैंगिक गतिशीलता भी स्वयं सहायता समूह योजना के कारण प्रभावित हुए हैं। आर्थिक प्रभावों के अतिरिक्त स्वयं सहायता समूहों का गैर आर्थिक प्रभाव राष्ट्रीय एकीकरण की भावना का विकास में, सामुदायिक समस्याओं को दूर करने में, स्थानीय संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि और अनेक सेवाओं और कार्यों के द्वारा अजीविका का संवर्द्धन के रूप में दिखाई दे रही है।

वर्तमान समय में स्वयं सहायता समूहों और उनके संघों द्वारा गरीबी उन्मूलन और महिला सशक्तिकरण की संभावनाओं को प्रान्तीय सरकारों, केन्द्रीय सरकार, दानदाता व गैर सरकारी संगठनों ने अनुभव किया है परिणामस्वरूप केन्द्र व राज्य की सरकारों द्वारा समूहों के विकास और स्थायित्व के सम्बन्ध में कई कदम उठाए जा रहे हैं, जिससे निर्धन महिलाओं को स्थायी रोजगार और अजीविका की प्राप्ति हो। वस्तुतः स्वयं सहायता समूहों द्वारा ग्रामीण महिलाएँ व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक दृष्टि से सशक्त हो रही हैं और ग्रामीण तथा राष्ट्रीय विकास में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से योगदान कर रही हैं।

संदर्भ-सूची

1. मौतियानी, पुष्पा- महिला विकास की नई दिशाएँ
2. मिश्रा इंदिरा- गरीब महिलाएँ उद्धार एवं रोजगार
3. श्रीवास्तव, डॉ. सुखपाल- महिलाओं को एकजुट करते स्वयं सहायता समूह कुरुक्षेत्र जून 2009
4. यादव, उत्तरा- ग्रामीण नारी परिवर्तन की ओर
5. कुमार, मनीष-महिला सशक्तिकरण दशा और दिशा

डॉ. सुजाता रोम्युएल
सहायक प्राध्यापक
शासकीय पातालेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
मस्तूरी, जि.-बिलासपुर (छत्तीसगढ़

Scanned with OKEN Scanner

ISBN - 978-93-80511-07-4

प्रकाशन संस्करण - 2016

5

महिला सशक्तिकरण का वर्तमान परिदृश्य

सम्पादक- दीपक कुमार, डॉ सुश्री भावना कमाने
डॉ० (श्रीमती) शशिकला सिन्हा

समता प्रकाशन, बजरंग नगर, रूरा, कानपुर देहात

महिला सशक्तिकरण: एक समाजशास्त्रीय विवेचन

किसी समाज में महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृति एवं शैक्षिक स्थिति उस समाज की वास्तविक स्थिति को प्रतिबिम्बित करती है। महिला सशक्तीकरण का अर्थ उनके द्वारा समाज की वर्तमान व्यवस्था और तौर- तरीकों को चुनौती में समान अवसर, राजनैतिक एवं आर्थिक नीति निर्धारण में भागीदारी, समान कार्य के लिए समान वेतन, कानून के तहत सुरक्षा, प्रजनन का अधिकार आदि है।

प्राचीनकाल से ही भारतीय समाज महिला को देवी-शक्ति के रूप में देखता आ रहा है। आज भी सम्पूर्ण मानव समाज में नवरात्र के अवसर पर माँ आदि शक्ति देवी की पूजा अर्चना किया जाता है। महिला में वह सम्पूर्ण शक्ति समाहित है, वह चाहे तो कभी भी कुछ भी कर सकती है। सिर्फ उसे अपनी उस असीम शक्ति को पहचानने की आवश्यकता है। महिला कब सबला से अबला हो गई यह पता ही नहीं चला। इसकी खोज कोई जासूस ही कर सकता है। आधुनिक सभ्यता के प्रसार के पहले यह सम्पूर्ण भारतीय समाज महिलाओं के लिए एक विशाल कारगाह की तरह ही था। इस सन्दर्भ में सभी धर्मों की स्थिति प्राय: एक सी ही थी। इसाई मिशनरियों के प्रभाव से भारतीय इतिहास में एक नया मोड़ आया। इसके पहले का भारतीय समाज वस्तुत: पुरुष प्रधान था, कम से कम एक डेढ़ हजार वर्ष पूर्व तो नि:संदेह पुरुषों का ही था। आवश्यकता इस बात की है कि महिला उस बनावटी चेहरे को उतार फेकें जो उसकी इच्छा के विरूद्ध लगाया गया है और कालान्तर में जिसे वह वास्तविक में अपना स्वयं का मानने लगी। क्योंकि निरन्तर काफी लम्बे समय से बनावटी चेहरे के साथ रहने से असली और नकली में अन्तर कर पाना काफी मुश्किल हो जाता है। फलस्वरूप महिला अपनी वास्तविक शक्ति को पहचान नहीं पाती है। अत: महिला सशक्तीकरण में प्रथम तथ्य आरक्षण से कहीं अधिक महत्वपूर्ण अपनी गढ़ी हुई बनावटी व्यक्तित्व से अपने आपको मुक्त करे, तभी महिला सशक्त बन सकती है। क्योंकि यह व्यक्तित्व मन मस्तिष्क में ही नहीं वरण सम्पूर्ण शरीर में रक्त के समान प्रवाहित हो रहा है।

महिलाओं के विकास के लिए विश्व स्तर पर सर्वप्रथम संगठित प्रयास 1903 में अमेरिका में वूमेन ट्रेड यूनियन के गठन के साथ प्रारम्भ हुआ। पाँचवें दशक में संयुक्त

Scanned with OKEN Scanner

राष्ट्र संघ द्वारा मानवाधिकार की घोषणा के साथ ही महिलाओं के लिए विश्व स्तर पर समानता की बात उठी। 1985 में नैरोबी में सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में सर्वप्रथम महिला सशक्तीकरण को परिभाषित किया गया। महिला सशक्तीकरण से तात्पर्य महिलाओं की पुरुषों के बराबर वैधानिक, राजनैतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में इनके परिवार, समुदाय समाज एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वायत्ता है। महिला सशक्तीकरण की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को ठोस रूप देने के लिए 1993 में बीजिंग में सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में विधायिका में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया गया।

महिला एवं पुरुष के बिना किसी भी मानव समाज की कल्पना ही नहीं किया जा सकता। परिवार रूपी गाड़ी के यह दो पहिये हैं। यदि एक पहिया खराब हो जाय तो गाड़ी वहीं पर रुक जायेगी। पुरुष प्रधान यह समाज ने महिला रूपी पहिये को खराब कर दिया है। क्या ऐसी दशा में समाज का सर्वांगीण विकास हो सकता है? कदापि नहीं, अतः आवश्यकता इस बात की है कि महिला भी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलें। यह शिक्षा के माध्यम से सम्भव हो सकता है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व भारत में महिलाओं की स्थिति अत्यन्त सोचनीय थी। वह शोषण तिरस्कार तथा कुप्रथा जैसी विसंगितयों का शिकार थी। समाज में कई प्रकार की रूढ़ियाँ व्याप्त थी जिन्हें बालविवाह, सती प्रथा तथा समाज में तिरस्कृत विधवाएँ आदि जैसी अन्य प्रथाएँ प्रमुख थीं, जिसका मुख्य कारण तत्कालीन सामाजिक विचार का पिछड़ापन एवं महिलाओं का अज्ञानता के बंधन में जकड़ा होना था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् महिलाओं की स्थिति में गुणात्मक सुधार हुआ है। शिक्षा, श्रम, सेवा और विशेषज्ञता के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुआ है। उन्होंने व्यावहारिक तौर पर निःसंदेह यह प्रदर्शित किया है कि वे किसी भी अर्थों में कहीं भी पुरुषों की तुलना में कम नहीं है। महिला राजदूत, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्री, प्रधानमंत्री तथा यहाँ तक कि देश की सर्वोच्च पद (राष्ट्रपति) पर असीन रही हैं। अब तक सेना में पुरुषों का ही अधिपत्य रहा है, लेकिन वर्तमान समय में महिला वायु सेना के जहाज उड़ाने लगी है तथा इससे भी आगे अन्तरिक्ष यात्री के रूप में एक वैज्ञानिक की हैसियत से पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपनी कर्तव्यों का निर्वाह कर चुकी है। इतनी प्रगति करने बाद भी आज महिला विचारों में, संस्कारों में पूर्ण समकक्षता प्राप्त नहीं कर पायी है। इसका मुख्य कारण समाज में काफी लम्बे समय से उपेक्षा का शिकार होना है। यह उपेक्षा व डर अभी भी उनकी मनोमस्तिष्क पर सर्प के समान कुन्डली मारकर बैठी हुई है आखिर क्या कारण है कि एक माँ बेटी के जन्म पर मातम मनाती है? माँ भी महिला है, बेटी भी एक महिला है, फिर एक महिला दूसरी महिला के विरोध में क्यों खड़ी हो जाती है। यह एक विचित्र विडम्बना है।

Scanned with OKEN Scanner

महिलाओं को जागरूक तथा साहसी बनाने में शिक्षा और आर्थिक स्वावलम्बन की काफी अहम् भूमिका होती है। ये दोनों कारक न केवल महिलाओं में स्वाभिमान और आत्मविश्वास पैदा करती है बल्कि उन्हें हर दृष्टि से सशक्त एवं अधिकार सम्पन्न बनाने में सहायक सिद्ध होती है। आर्थिक स्वावलम्बन और शिक्षा के पश्चात् सत्ता में भागीदारी महिला सशक्तीकरण का महत्वपूर्ण कारक है। निर्णय लेने के स्तर पर महिलाओं की भागीदारी के बिना उन्हें समानता और सम्मान का स्थान देने का सपना अपूर्ण ही रहेगा। स्व राजीव गाँधी ने पहली बार 73 वें संविधान संशोधन करते हुए पंचायती राज विधेयक में महिलाओं के लिए 30% आरक्षण का प्रावधान एक कारगर कदम सिद्ध हुआ है। इसका पूरा असर इसलिए दिखाई नहीं दे रहा, क्योंकि शिक्षा और आर्थिक स्वावलम्बन के चरण अभी अधूरी है।

अनेक स्थानों पर जब महिला प्रतिनिधि अपनी जागरूकता का परिचय देने या शक्तियों और अधिकारों के प्रति उत्सुकता दिखाने को आगे आती है तो समाज का अधिकांश सबल पुरुष वर्ग इन महिला प्रतिनिधियों के साथ बलात्कार, यौन उत्पीड़न, मारना-पीटना, अपशब्द कहना, निर्वस्त्र करके सरेआम बीच बाजार में घुमाना, कुर्सियों पर ना बैठने देना, उनके चाय के कप को उनसे ही धुलवाना (जातिगत भेदभाव), झण्डा न फहराने देना (अधिकार से वंचित करना) आदि अमानवीय व्यवहार करता है। इसी प्रकार की अनेक असामाजिक घटनाएँ समाचार पत्र-पत्रिकाओं में आये दिन प्रकाशित होते रहते हैं। शासन प्रशासन में असीन जनप्रतिनिधि (मंत्री) यह सब कुछ जानते हुए भी हाथ में हाथ बाँधकर मुक-बधिर के समान देखते रहते हैं। यदि कुछ कार्यवाही होती भी है तो वह मात्र रखना पूर्ति है। इससे महिलाओं में असुरक्षा की भावना बढ़ेगी और महिला सशक्तीकरण की दिशा में की गई संवैधानिक व्यवस्था सफल नहीं हो सकती। अत: इन घटनाओं को रोकने के लिए कड़ी से कड़ी कदम उठाने की आवश्यकता है।

मनु स्मृति के अनुसार धार्मिक दृष्टिकोण से पुत्र प्राप्ति को आवश्यक माना जाता है। क्योंकि पुत्र ही श्राद्ध एवं तर्पण द्वारा मृत पिता एवं पूर्वजों की आत्मा को स्वर्ग पहुँचाता है। जो आधुनिक युग में अपूर्ण, असत्य एवं शरासर मिथ्या प्रतीत होता है। क्योंकि आज कन्या भी श्राद्ध एवं तर्पण का कार्य सम्पन्न कर सकती है। क्या इनके पूर्वज स्वर्ग तक नहीं पहुँचती तो ऐसी दशा में नरक में मृत आत्माओं की अतिरेक की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। महिला हत्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कई रूपों में देखने को मिलता है। चाहे वह कन्या भ्रूण हत्या हो या जन्म के बाद उसे मार देना या दहेज के लोभ में बहु को जला देना या पीट-पीटकर मार देना, गलाघोट देना आदि। इस प्रकार की एक दो घटनाएँ प्राय: सभी समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता के साथ प्रतिदिन प्रकाशित होता रहता है। ऐसी घटनाएँ अधिकांश संभ्रात परिवारों में अधिक घटित होती हैं। अत: लिंगानुपात में अन्तर आना स्वाभाविक है। महिला सशक्तीकरण के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु इस प्रकार हैं।

Scanned with OKEN Scanner

1. शिक्षा के माध्यम से महिला अवश्य ही सशक्त हुई है क्योंकि शिक्षा एक ऐसी कुंजी है जिससे सभी बंद दरवाजे के ताले खुल जाते हैं। शिक्षा से महिलाओं के बौद्धिक, मानसिक एवं सामाजिक स्तर में सुधार हुआ है। फलस्वरूप आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है।

2. महिला को सशक्त होने के लिए संगठित होना आवश्यक है। राजनैतिक क्षेत्रों में प्रतिनिधित्व मिलने पर सत्ता के गलियारों तक अपनी आवाज एकजुटता के साथ पहुँचानी चाहिए। यह तभी सम्भव होगा जब महिला सुसंगठित होगी।

3. विभिन्न योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक स्वावलम्बी बनाया जा रहा है। जिससे वह पुरुषों पर आर्थिक दृष्टिकोण से निर्भर नहीं रहेगी। फलस्वरूप वह इस पुरुष प्रधान समाज में सिर ऊँचा करके अपने पैरों पर खड़ी हो सकेगी। अत: वह अबला से सबला बन जायेगी।

4. सत्ता में समान भागीदारी से वह उचित निर्णय ले सकेगी। तथा महिलाओं की प्रगति के संदर्भ में अपना सशक्त पक्ष नि:संकोच प्रस्तुत कर सकती है।

5. आज की महिला किसी भी क्षेत्र में किसी से भी कम नहीं है। उसे किसी पर भी निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है। अपना कार्य स्वयं करने की पहल करनी चाहिए तथा पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कार्य करना चाहिए।

6. महिला हत्या एवं कन्या भ्रूण हत्या के संदर्भ में पुरुष के अपेक्षा स्वयं महिला की भागीदारी भी कम नहीं होती है। वास्तव में देखा जाये तो महिला ही महिला की दुश्मन है। अत: सर्वप्रथम महिला को महिला के विरुद्ध होने वाले अपराधों को रोकने के लिए उठ खड़ा होना चाहिए। इसके लिए मानसिक सोच में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है।

7. इन सभी घटनाक्रमों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण तो यह है कि सदियों से समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता परम्पराओं एवं रुग्ण मानसिकता को समाप्त कर नवीन विचार धाराओं का श्री गणेश करना है। यह शिक्षा के सर्वांगीण विकास से ही सम्भव है। इस दिशा में शासन विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रयासरत है।

संदर्भ-सूची

1. गुप्ता एम.एल. एवं शर्मा डी.पी- समाज शास्त्र
2. श्रीवास्तव ए.पी- समाजशास्त्र
3. पण्डा बी.पी. जनसंख्या भूगोल
4. डॉ. मामोरिया चतुर्भुज: यूनीफाईड भूगोल

डॉ. के.आर. मतावले
सहायक प्राध्यापक भूगोल
शासकीय पातालेश्वर महाविद्यालय
मस्तूरी, जि०-बिलासपुर
(छत्तीसगढ़)

Scanned with OKEN Scanner

6

राजेन्द्र अवस्थी

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ. (श्रीमती) राजेश चतुर्वेदी

Scanned with OKEN Scanner

राजेन्द्र अवस्थी
व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डॉ. (श्रीमती) राजेश चतुर्वेदी

समता प्रकाशन, कानपुर-देहात

Scanned with OKEN Scanner

मूल्य : नौ सौ रुपये मात्र
ISBN : 978-81-934493-1-8

पुस्तक का नाम	:	राजेन्द्र अवस्थी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
लेखक	:	डॉ. (श्रीमती) राजेश चतुर्वेदी
कापीराइट	:	प्रकाशक
प्रकाशन	:	समता प्रकाशन बजरंगनगर, रूरा कानपुर-देहात - 209303 मोबाइल : 9450139012, 9455589663 9455589661, 9936345325
ई-मेल	:	Samataprakashanrura@gmail.com
संस्करण	:	प्रथम 2017 ई0
मूल्य	:	900.00 रुपये मात्र
शब्द सज्जा	:	यश ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	मधुर प्रिन्टर्स, किदवईनगर, कानपुर

RAJENDRA AWASTHI VYAKTITVA AVAM KRITITVA

By : Dr. Smt. Rajesh Chaturvedi

Price : Rs. Nine Hundred only

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

- राजेन्द्र अवस्थी का परिचयात्मक अनुशीलन
- राजेन्द्र अवस्थी के उपन्यासों का अनुशीलन
- राजेन्द्र अवस्थी की कहानियों का अनुशीलन
- राजेन्द्र अवस्थी के अन्य प्रदेय का अनुशीलन
- उपसंहार

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-923135-4-2

Pursuit of Happiness in Contemporary English Literature

Proceedings

4th National Conference

30-31 January 2018

Edited by

Dr Savita Singh
Convener

Editorial Board
Dr Shukla Banerjee
Dr GA Ghanshyam
Ms Charlotte D'Souza
Dr Rita Soni
Dr Sunayana Mishra
Dr Shashank Gupta

Published by
Chhattisgarh Gyan
For
The Chhattisgarh English Teachers' Association (Reg No. 5316)
Raipur, Chhattisgarh

Scanned with OKEN Scanner

51. In Pursuit of Happiness with Reference to *Mistress of Spices* by Chitra Banerjee Divakurni- Dr. Madhavi Lata Agrawal - 370
52. Transcending to Bliss in Pursuit of Happiness Dr. Shilpi Bhattacharya - 374
53. Astha's Conjugal Bliss to Lesbian Felicity in Manju Kapur's *A Married Woman*: An Image of the New Woman - Dr. Shruti Sangam- 378
54. Sarojini Naidu's Poems are Optimistic and Echo the Soul's Union with Eternal Happiness - Dr. Mahima Gautam - 387
55. Happiness Visible in William Golding's *Darkness Visible* Ms. Sakshi Prahari - 391
56. Quest for Happiness in Sudha Murthy's *The Mother I Never Knew* - Dr. Sunayna Mishra - 403
57. Happiness, a State of Mind: Manju Kapur's *A Married Woman*- Dr Smita Sharma - 416
58. Spiritual Happiness in Willa Cather's *My Antonia* - Mrs. Renuka Sharma & Dr. Sunayana Mishra - 425
59. The Feminism of Happiness - Ansulika Paul - 433
60. Paulo Coelho's *The Alchemist:* Searching for Happiness through Dreams - Chandan Soni - 439
61. Digital Teaching and Happiness - Neeta Johar - 444
62. Science, Technology, Religion and Happiness - Mrs Seema Jaisi - 452
63. Theme of Pursuit of Happiness in Indian Fiction in English Prof. Shubha Tiwari, - 459
64. The Pursuit of Happiness: Spirituality and its Resourcefulness on the basis of excerpts from Bhagavad Gita - Chandrahas Patel - 467
65. Theme of Divine Joy in Walt Whitman's Poetry- Dr. [illegible] Srivastava 474
66. The Postmodern Aesthetic of Freedom and Happiness: The Literature of the Future? - Dr Savita Singh - 486

Scanned with OKEN Scanner

Digital Teaching and Happiness

Neeta Johar,
Assistant Professor and Lieutenant NCC,
Department of English,
Govt Pataleshwar College Masturi,CG.

Abstract

Today we are digital natives, living in the age of computer revolution. Our literacy is incomplete without computers. Definitely the future generation will read the history of this age as a renaissance of digitalised world. Now what do we mean by this digitalisation of the digital teaching-learning experiences? Is it just a technological up gradation, an internet communication system or a transformation in instructional knowledge and personality? Certainly, it enhances the innovative, creative and communicative skills of the learner. Skilled youth is the need of the nation today.

A digital teaching-learning strategy may include online learning, e-textbooks, virtual reality, open educational resources, learning objects and analytics, classroom technologies and many more including mobile learning. In totality, digital teaching-learning is meant for quality enhancement of learning experience, but certainly not for making traditional methods of learning outdated, or to completely replace the old methods. We can say what we are undergoing a kind of blended learning-a traditional classroom and the digital media. John Keats once said a thing of beauty is joy forever. Undoubtedly, digital teaching is also a joy forever; it is a joy of linking together globally, a joy of building cross-cultural connections, a joy of developing innovation and proficiency, a confidence booster, a joy of creating variety, and obviously eternity.

Yet are we really providing ICT training in a real classroom situation? Are we really trained ourselves? Has the government but

Scanned with OKEN Scanner

successful in executing Digital India Campaign all over India? Is rural India also participating wholly in the globalisation? Or are we victims of superficies and a digital lacuna? Is it an overall development? Are we really happy??

Key Words: Digital Teaching- Learning, Technology, Joy, Skills.

Knowledge is power and Ideas rule the world'. Since time immemorial, human beings exhibit inquisitive minds which have led to the birth of civilizations, cultures, arts and sciences. Naturally human beings are adoptive to learning, but does it come so naturally? No. The holistic development takes commitment, dedication, diligence, creative thinking, innovations and much more. In the present scenario it also takes to be technically advanced so as to improve the condition of life, performing bigger task in lesser time, and acquire happiness, intellectual happiness. Now the question arises "Can digital technology and machines give happiness?" Undoubtedly, necessity is the mother of invention. Our needs have led contemporary technologies to become ubiquitous. We have become digital natives, living in the age of computer revolution. Our literacy is incomplete without computers. It has completely transformed the world we live in. Definitely the future generation will read the history of this age as a renaissance of digitalised way of life and creative innovative bliss. Therefore to stay-tuned in technology will let you feel uplifted and knowledge acquired will give mental peace. John Keats once said a thing of beauty is joy forever. Seemingly, digital teaching is also a joy forever; it's a joy of linking together globally, a joy of building cross-cultural connections, a joy of developing innovation and proficiency, a confidence booster, a joy of creating variety, and obviously eternity.

'The State of the World's Children-2017' a UNICEF study report says "one in three internet users worldwide is a child". Digital technology can be a game changer for disadvantaged children, offering them new opportunities to learn, socialize and make their voices heard- or it can be yet dividing line. The report further says: 'online gender gap is growing: Globally there are 12% more men

Scanned with OKEN Scanner

than women online, and gap is greatest in low-income countries" According to the study only 29% woman in India are using internets today, thus underlining a 'digital gender gap'?[1] Well, this is not happiness. We are still gender biased.

ICT uses in India are still the male preserve. Digital divides can mirror broader societal disparity. Whatever may be the reason, social norms, patriarchal mind-set or convictions, lack of literacy or safety purposes, it is a greatest hurdle for woman empowerment. Serious Consequences may arise if girls are excluded from the digital world. If going out is a problem for girls, ICT access should be free at Schools, Colleges, Universities and home for a holistic development. More is the exposure more will be the curiosity and even more interest will it generate. This endeavour will lead to an immense possibility outside their immediate environment.

Google has set a brand name for multimedia resources providing its sites, drive, documents, forms, sheets, whatsapp group and brodscast. For India Google's endeavour is 'Internet Saathi' a literacy program, which will empower women in rural India; it has already reached one lacks villages and will further cover three lacks in near future. This can solve the mentioned problem if people are aware of the same. There is also a report saying ICT users in India will see more than double growth to reach 829 million from 373 million users in 2016. This makes roughly 59% of Indian population will use Internet in near future.[2]

India is famous as an IT hub. 'Digital India' campaign was launched on 1st July 2015 as an initiative of Government promoting universal digital learning and emphasising safe, secure and stable digital infrastructure for an empowered society. As we already know present Z-generation child is exposed to technology at the very primal age through TV, Computers, Laptops, Tablets and Mobiles. They are entirely different from what their parents and teachers grew up in. They are constantly on smart devices. They mail, they tweet, they instagram, whatsapp, and they even design their own apps. It's like another Alexander set out to explore and conquer the new world.

Scanned with OKEN Scanner

They will certainly realise the importance and utilisation of them in present time for sustainable development and overall progression.

On the contrary, we teachers lecture, use green boards and make our students to write elaborate answers in exams and spend days in checking them wasting our holidays & spoiling our happiness. So this gap has to be bridged by familiarizing teachers with ICT tools and creating digital teaching-learning environment so that they can develop course sites using multimedia resources, set up discuss forum for engaging learners in creating new knowledge, to conduct formative assessment to check learners about their learning's. Digital teaching-learning environment may include online learning, e-textbooks, virtual reality, open educational resources, learning objects and analytics, classroom technologies and many more including mobile learning. In the totality it is meant for quality enhancement of learning experience but certainly not for making traditional or conventional methods of learning outdated or to completely replace it. The department of ministry of human resources and development, Higher Education, MHRD is fostering various schemes to make the vision of Digital India to be a virtual reality and expecting the co-operation of all sectors irrespective of private, semi-government or government institutions.

The National Convention on Digital Initiatives meet of July 2017 has issued a 17 point action plan to be implemented in December 2017 for providing techno tonic and digital campuses for the Vice Chancellors of all central, state, private and deemed universities and Directors of all institutes of national importance like IITs; called SWAYAM (study webs of active learning for young aspiring minds: an indigenous MOOCs portal) and SWAYAM-Prabha (DTH channel for transmitting high quality educational contents 24*7 to every home free of cost), NDL and NAD, for providing digital learning platform opportunity for lifelong learning accessible to anyone, anytime and anywhere with an aim to raise the GER (gross enrolment ratio) in the higher education from24.5in 2015-16 to 30 by 2020[3]. Now this is an ideal state of happiness. With this launch India now has its own interactive learning platform

Scanned with OKEN Scanner

providing videos lectures, e-contents, reading material, self-assessment quizzes & assignment, hybrid models etc to add the quality of class room teaching. It will also enhance the employability quotient in the youth.

According to the findings of this plan any university can prepare new course and teacher can have a direct access. Universities are also expected to form a digital learning monitoring cell to review the current use of the resources available and suggest ways to improving their utilisation. The plan further say to take DTH connections for free to be installed in classrooms and provide orientation sessions for teacher's up gradation. Not only this they can get access to National Digital Library NDL (dream project sanctioned to IIT Kharagpur) and benefit from more than 72 lacks digital books free of cost. More than 10 lacks students are already registered themselves to NDL. Apart from this Amazon-kindle app also help you browse over thirty lacks title across genre such as fiction, science-fiction, children, fantasy, biographies, classics, academic books etc. You can add huge amount of books in personal library and they are available for free and paid basis and also in regional languages like Hindi, Marathi and Gujarati.

NDL is a heaven of joy for researchers and will be accessible to all irrespective of State and UT of India. Currently it has both Indian and Foreign language contents. The UGC-info net digital library consortium was launched by APJ Abdul Kalaam, the missile man of India. The e-contents can be browsed from NPTEL, Virtual Labs, A-View, Spoken tutorial, CEC, E-Yatra, Inflibnet, FOSSEE, E-Kalpa, E-sodhsindhu etc; all are website and videos on various subjects providing access to college and universities. Similarly there are blogging platform like Edublog, Dropbox, Classdojo, Edmodo, Educreations, tedtalks, Unplug, Stack, Socrative, kahoot, plickers, nerapod etc containing number of features that can allow teachers to share folders with students through computer and mobile. Now don't you think it's a contemplative world and a great source of perennial joy?

Scanned with OKEN Scanner

The happiness does not end here. The Awards, Degrees, Diplomas etc. can be uploaded to NAD depository, making Digital Academic Certificates easy for students in collecting them. Every institution will bear digital campus for administration, smart campus for management highlighting solar panel and water harvest, clean campus with waste management and Swachh Bharat Abhiyan and rewarding the best institution of their glory on performance basis. This digitalisation will also breach urban and rural divide as every institute will adopt five villages to spread awareness. There shall be innovative drives for students for encouraging thinking-out-of-box and participating in hackathons organised by various agencies other than Government ones. The institute will also constitute three or seven or even fifteen years plan to view and review their growth graph.

As said earlier majority of the population in India live in rural and semi-urban areas and digitalisation is still abstract reality for them. Hindering free asses to technologies at learning centres is an attack on emotional health of learners. The infusion of technology should be available at the grass-root level, making it more adoptable, breaking the monotony of conventional learning. No doubt, in last few decades teaching in higher education has made a drastic change, but for making classroom learning more interesting and creating techno-friendly environment, engaging wider section of learners there needs to hold free training session and workshops for faculties in all sectors irrespective of any stream crossing the barrier of medium and language. The unprecedented development of technology has certainly influenced English language education as well. ICT has revolutionized pedagogy, roles of learners, teachers, parents, policy makers, teaching tools, learning material, teaching and learning strategies etc. However we the teachers are not yet fully exploited the potentials of ICT world and not acquainted to meet the challenges in preparing the generation Z learners.

Factually, leader and community support, honest execution and environment adaptable to change are desirable. Merely availability of resources is not enough to bring meaningful progress in

Scanned with OKEN Scanner

digital teaching and learning process and keeping up to the pace of global time. Teachers should also be fully equipped with strategies that are known to improve student's learning. Frequent capacity building training workshop for using E-contents should be organised to enlighten instructor desirable to apply them in virtual class enhancing artificial intelligence. Then there should also be researches upon how students are adopting and learning them, what are problems raised in achieving them, how to overcome them and even how fast they are improving and how often techno-adds are getting outdated, boring and dull and what measures are to be taken to overcome them.

Changes are inevitable. Technologies are constantly altering. While it's difficult for traditional learner to cope up with new inventions; new generations are playing with it and getting bugged too easily. In such a situation it is mandatory for teachers to keep up the spirit of happiness high as they have to be ten times more advanced then pupil. The survey should also be done on the percentage of teachers who are familiar with this advanced technologies of teaching and who are not. Certainly language is not the barrier today but on the global perspectives it becomes necessary to research whether the transforming of techno-education is available in languages easily understood in common. I think we fail here.

In most of the colleges and universities the burden of imparting digital knowledge solely fall on very less number of teachers who are computer experts and equipped with resources, but, at the same time having a small number of experiences as a teacher. In some parts of the Nation even trained teachers are not getting free access to ICT and nothing is done for training the senior pool of teachers who are holding the majority. UGC has provided funds for resources but real classroom situations are telling a different story. So, lesser awareness and non availability of tools are hindering a way for digital learning. Then there is lack of innovative culture as well. No doubt, govt is investing heavily in education technology, aiming to transformational change in student learning but crucial steps are to be taken for effectively integrating technology with instruction to improve learning outcome. Using these ICT tools effectively will

Scanned with OKEN Scanner

delete the toads and improve interacting learning in all situations even when gainers are less participating, shy, impulsive, inquisitive, and hyperactive or introvert.

Finally, the safety and security of the users is needed. Indian users should affirm the protection from the perils of digital world, make themselves aware of the risks, cyber bullying, violence etc. and mitigate the harms. Governments endeavour should be to breach the gap of male and female users. Then only we can reach the state of complete thrill and zest in this virtual world or so called Z generation.

References

http://www.unicef.org>SWOC 2017
http://www.unicef.org>SWOC 2017
http://www.swayam.gov.in MHRD webpage browsing.

Scanned with OKEN Scanner

ISBN - 978-81-904909-9-7

पर्यावरण चेतना एवं साहित्य

मूल्य - 800/-

संपादक - डॉ. सतीश चतुर्वेदी

मुद्रक - ऋचा प्रेस, गुना

प्रकाशक - राजेश्वरी प्रकाशन, गुना

ग्रंथ के आलेखों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
पुस्तक के संबंध में किसी भी विवाद में न्यायक्षेत्र गुना (म.प्र.) होगा।

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

खण्ड (अ) - पर्यावरण चेतना

1. पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन में शैक्षिक संस्थानों की भूमिका
डॉ. ऋषि कुमार सक्सेना 17
2. पर्यावरण प्रबंधन : एक महती एवं वैश्विक आवश्यकता
डॉ. व्ही.पी. श्रीवास्तव, डॉ. देवेंद्र भड़ेरिया 23
3. हिन्दू धर्म की लोक परम्पराओं में पर्यावरण-रक्षा
डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' 29
4. An Interpretative Review of Application of Internet...
Dr. B.K. Tiwari 35
5. जलवायु परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक चुनौती : एक अध्ययन
डॉ. पुनीत कुमार 41
6. जलवायु संरक्षण : एक अनिवार्य नैतिक्र एवं सामाजिक उत्तरदायित्व
डॉ. (श्रीमती) शारदा दुबे, डॉ. (श्रीमती) दुर्बा बाजपेयी 49
7. भारत की पर्यावरण नीतियाँ एवं कानून : एक अध्ययन
डॉ. मनोज भिरोरिया 53
8. पर्यावरण संरक्षण और हमारा दायित्व
डॉ. (श्रीमती) माया परस्ते 69
9. पर्यावरणीय विसंगतियों से उपजती सामाजिक चुनौतियाँ...
डॉ. हरेन्द्र सिंह, डॉ. हरीशचंद्र पाटनी 73
10. आधुनिकता में उपेक्षित पर्यावरण
डॉ. शिशिर कुमार कश्यप 77
11. भारतीय संस्कृति में पर्यावरण का महत्व
श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 80
12. पर्यावरण संरक्षण में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका
डॉ. डी. पी. सिंह, शालिनी अस्थाना 85
13. पर्यावरण और समाज
डॉ. (श्रीमती) सुजाता सेमुएल, डॉ. सपना कॉर 91
14. सांस्कृतिक चेतना और पर्यावरण
डॉ. माधुरी गर्ग 95

Scanned with OKEN Scanner

पर्यावरण संरक्षण :-
एक अनिवार्य नैतिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व

डॉ. (श्रीमती) शारदा दुबे
डॉ. (श्रीमती) दुर्गा बाजपेयी

"पृथ्वी हर व्यक्ति की आवश्यकता की संतुष्टि के लिए पर्याप्त है न कि हर व्यक्ति के लोभ को पूरा करने के लिए"

.......महात्मा गांधी।

पर्यावरण शब्द परि + आवरण दो शब्दों से मिलकर बना है। 'परि' का अर्थ निकटवर्ती एवं आवरण का अर्थ आच्छादित एवं घिरे होने से है। पर्यावरण का तात्पर्य हमारे चारो ओर के उस वातावरण एवं परिवेष से हैं जिससे हम घिरे है।

किसी भी जीव के चारो ओर उपस्थित समस्त जैविक तथा अजैविक पदार्थों को पर्यावरण के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। पर्यावरण के प्रत्येक घटक का चाहे वह जैविक हो अथवा अजैविक अपना विषिष्ट स्थान होता है।

मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये प्रकृति पर निर्भर है। मनुष्य का प्रकृति से गहरा रिश्ता है तथा प्रकृति में उनके घटकों का सन्तुलन एवं समन्वय बना रहता है। यदि उनमें असंतुलन आ जाये तो पर्यावरण के घटक संकट में पड़ सकते है। ऐसी स्थिति में ये घटक लाभप्रद के स्थान पर जीवधारियों के लिए हानिप्रद भी हो सकते है। जैसे – जैसे विश्व ने आर्थिक विकास की ओर कदम बढ़ाये, लोगो की आवश्यकतायें बड़ी तथा मनुष्यों ने अपनी बढ़ती हुई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रकृति का अंधाधुन्ध दोहन प्रारंभ कर दिया।

परिणामस्वरूप वनों की विरलता, जीवों की प्रजातियों का विलुप्त होना, ओजोन परत का क्षरण , तथा उद्योग जनित प्रदूषण का प्रभाव, ग्रीन हाउस प्रभाव एवं अम्लीय वर्षा के रूप में महसूस किया जा रहा है। आज पर्यावरण प्रदूषण एक राष्ट्र विशेष की निजी समस्या न होकर एक सार्वभौमिक चिन्ता का विषय है। पारिस्थतकीय असन्तुलन हर प्राणी को प्रभावित करता है, अतः यह जरूरी हो जाता है कि विश्व के सभी नागरिक पर्यावरण संरक्षण के लिए इकाई स्तर पर प्रयत्न करें।

यदि हम यह सोचे कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार या कुछ

Scanned with OKEN Scanner

विशेषज्ञों की सेवाओं या प्रयत्नों तक ही सीमित है और हम उसमें कुछ भी योगदान नहीं दे सकते तो यह हमारी सबसे बड़ी भूल है, क्योंकि पर्यावरणीय समस्याओं के मूल में पर्यावरणीय जागरूकता एवं नैतिकता की कमी एक महत्वपूर्ण बिन्दु है। अनेक पर्यावरणीय समस्याओं ऐसी होती है जिसे एक सामान्य व्यक्ति भी जानता है जैसे हम जल का सदुपयोग करें एवं व्यर्थ पानी न बहाये, अपशिष्ट पदार्थो का निस्तारण सही ढंग से करें, पॉलिथीन की थैलियों का उपयोग न करे, वन्य प्राणियों की खाल एवं हड्डियों से बनी वस्तुओं को क्रय न करें, जीवों के प्रति दया भाव तथा सार्वजनिक स्थलों पर लगे पेड़–पौधों की रक्षा करें। हम बच्चों को भी पर्यावरणीय नैतिकता का पाठ पढ़ाकर उन्हे भी जागरूक कर सकते है ताकि वे कोई भी ऐसा कार्य न करें जिससे पर्यावरण को नुकसान पहुँचें क्योंकि केवल सैद्धातिक तौर पर पर्यावरण संरक्षण की बात करें तो कभी भी इस समस्या से निजात नहीं मिल सकता। अतः हर नागरिक को चाहिए कि वे अपने जन्मदिन या किसी भी ऐसे महत्वपूर्ण दिवस पर एक पौधा अवश्य लगायें तथा उसका संरक्षण करें। जन्मोत्सव गृह प्रवेश अतिथि सत्कार आदि के अवसर पर भेंट स्वरूप पौधे दिये जाये जिससे लोगों के मन में अपने आप पौधों के रोपण एवं सरंक्षण की विचारधारा प्रस्फुटित होगी तथा अन्य लोग भी धीरे–धीरे इस विचार से जुड़ेगें और हम इसे एक सामाजिक क्रांति का रूप दे सकेंगें। हम एक संकल्प ले कि सप्ताह में कम से कम एक दिन वाहन का उपयोग नही करेंगें। पॉलिथीन की बजाय कागज के लिफाफें का उपयोग करेंगें। यदि हम अपने इन उत्तरदायित्वों को सही तरीके से निभाये तो निश्चित रूप से पर्यावरण को शांत और सुन्दर बनाने में हम अपनी भूमिका निभा सकते है।

वर्तमान पर्यावरण प्रदूषण का जनक आधुनिक मानव समाज ही है। आदिकालीन मानव संख्या में कम तथा बुद्धि से सरल होने के कारण पर्यावरण में बहुत कम बदलाव कर सकता था। इसलिए उस समय पर्यावरण के संघटक तत्व में पूर्ण सन्तुलन था। लेकिन जैसे – जैसे मानव ज्ञान का विकास होता गया, उस पर प्रकृति का नियंत्रण कमजोर पड़ता गया तथा अतिविकसित मस्तिष्क का स्वामी होने के कारण मनुष्यों ने पर्यावरणीय तत्वों को अपनी अभिरूचि तथा जरूरतों के हिसाब से परिवर्तित करने की शक्ति अर्जित कर ली है। प्राकृतिक संसाधनों का लोलुपतापूर्ण दोहन एवं विध्वंसकारी क्रियाओं के कारण विश्व स्तर पर पर्यावरण प्रदूषण में बढ़ोतरी हो रही है।

Scanned with OKEN Scanner

पूर्व की पीढ़ियों ने अपने समय में प्रकृति का पूर्ण विकास कर उसको भौतिक सम्पत्ति के रूप में बदलकर अगली पीढ़ी को प्रदान किया ताकि आने वाली पीढ़ी उनका उपकार मान सकें। किन्तु वर्तमान पीढ़ी आने वाली मानव जाति के लिए जटिल समस्यायें तथा प्रकृति के माध्यम से विध्वंस तथा नुकसान पहुँचाने वाली संभावनायें छोड़कर जाने का रास्ता चुन रही है।

प्रकृति का सही ढंग से दोहन व उपयोग करने हेतु नये दृष्टिकोण की आवश्यकता है। जो व्यक्ति , समाज एवं राष्ट्र के हित से ऊपर उठकर मानव मात्र के हित में सोचने का संकल्प ले क्योंकि मनुष्य–मनुष्य में कोई भेंद नही है। प्रकृति व विज्ञान किसी देश विशेष के लिए नही है। मानव ज्ञान की भौतिक शक्तियाँ आज प्रकृति की शक्तियां के बराबर पहुँच गई है। और यह भी आवश्यक है कि इन भौतिक शक्तियों के साथ नैतिक गुण भी उसी अनुपात में विकसित हो। मनुष्य अपनी जागृति का उपयोग मनुष्य और प्रकृति की एकता के लिए करें।

वर्तमान परिवेश में संयुक्त राष्ट्र संघ का यह मत सही प्रतीत होता है कि

" विकास मानव की केवल भौतिक आवश्यकताओं से नही बल्कि उसके जीवन की सामाजिक दशाओं में सुधार से संबंधित होना चाहिए"

विकास और पर्यावरण एक दूसरे के विरोधी नही बल्कि एक दूसरे के पूरक है। एक संतुलित एवं प्रफुल्ल पर्यावरण के माध्यम से ही विकास के प्रयास हो सकते है, तथा मानव जीवन उच्च स्तर तक पहुँच सकता है। विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन आवश्यक है। किन्तु विकास की इस अन्धी दौड़ में मनुष्य इन संसाधनों का दोहन इतनी तीव्रता से कर रहा है, कि पृथ्वी के जीवन को पोषित करने की क्षमता तेजी से नष्ट हो रही है।

भारत में पर्यावरण चेतना के अभियान सफल रहे है। इसमें 1970 के दशक के चिपको आंदोलन, अप्पिको आंदोलन, केरल में प्रस्तावित जल विद्युत परियोजना जिससे पश्चिमी घाट के वनों एवं जैव विविधता का सरंक्षण हुआ। राजस्थान का अरावली बचाओं आंदोलन तथा दून घाटी आंदोलन महत्वपूर्ण है जो पर्यावरण संचेतना विकसित करने में सफल रहें।

आज प्रदूषण के दानव से हमारा जीवन त्रस्त है लेकिन इससे मुक्ति पाने के लिए वैज्ञानिकों नियोजकों, प्रशासकों, व्यवस्थापकों तथा सरकारी प्रयासों के साथ – साथ सामान्य ग्रामीण जनता को भी विवेकपूर्ण

Scanned with OKEN Scanner

एवं संयमित पद्धति से जीवन यापन करना होगा। जब तक शैक्षिक माध्यम से जागरूकता तथा चेतना विकसित नही की जाएगी तब तक देश का हर नागरिक न तो पर्यावरण संरक्षण में प्रतिभागी होगा और न ही अपना पूर्ण योगदान दे पाएगा।

आज आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपने भौतिक पर्यावरण को स्वच्छ रखने के प्रति जागरूक हो तथा समाज , राष्ट्र एवं विश्व के .पर्यावरण को स्वच्छ रखने में अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करते हुए स्वस्थ जीवन यापन करें।

संदर्भ ग्रंथ :—

भारतीय समाज मुद्दे एवं समस्यायें — डॉ. एस. अखिलेश एवं डॉ. संध्या शुक्ला।
गायत्री पब्लिकेशन्स — रीवा म. प्र. ।
उद्धृत — पर्यावरणीय नैतिकता — डॉ. आर.सी. गुप्ता।
पर्यावरण संरक्षण — डॉ. एस. अखिलेश एवं डॉ. संध्या शुक्ला।
गायत्री पब्लिकेशन्स — रीवा म.प्र.।
कृतिका — वर्ष 8 सयुक्तांक — 15—16 संपादक — डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव
उद्धृत — डॉ. अंजूलता — भारत में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता ।
योजना — अक्टूबर 2010।

डॉ. (श्रीमती) शारदा दुबे
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र
शा.बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महा.
बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. (श्रीमती) दुर्गा बाजपेयी
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र
शा.पातालेश्वर महा. मस्तूरी
बिलासपुर (छ.ग.)

Scanned with OKEN Scanner

ISBN - 978-81-904909-9-7

पर्यावरण चेतना एवं साहित्य

मूल्य - 800/-

संपादक - डॉ. सतीश चतुर्वेदी

मुद्रक - ऋचा प्रेस, गुना

प्रकाशक - राजेश्वरी प्रकाशन, गुना

ग्रंथ के आलेखों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
पुस्तक के संबंध में किसी भी विवाद में न्यायक्षेत्र गुना (म.प्र.) होगा।

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

खण्ड (अ) - पर्यावरण चेतना

1. पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन में शैक्षिक संस्थानों की भूमिका
डॉ. ऋषि कुमार सक्सेना 17
2. पर्यावरण प्रबंधन : एक महती एवं वैश्विक आवश्यकता
डॉ. व्ही.पी. श्रीवास्तव, डॉ. देवेंद्र भड़ेरिया 23
3. हिन्दू धर्म की लोक परम्पराओं में पर्यावरण-रक्षा
डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' 29
4. An Interpretative Review of Application of Internet...
Dr. B.K. Tiwari 35
5. जलवायु परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक चुनौती : एक अध्ययन
डॉ. पुनीत कुमार 41
6. जलवायु संरक्षण : एक अनिवार्य नैतिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व
डॉ. (श्रीमती) शारदा दुबे, डॉ. (श्रीमती) दुर्वा बाजपेयी 49
7. भारत की पर्यावरण नीतियाँ एवं कानून : एक अध्ययन
डॉ. मनोज भिरोरिया 53
8. पर्यावरण संरक्षण और हमारा दायित्व
डॉ. (श्रीमती) माया परस्ते 69
9. पर्यावरणीय विसंगतियों से उपजती सामाजिक चुनौतियाँ...
डॉ. हरेन्द्र सिंह, डॉ. हरीशचंद्र पाटनी 73
10. आधुनिकता में उपेक्षित पर्यावरण
डॉ. शिशिर कुमार कश्यप 77
11. भारतीय संस्कृति में पर्यावरण का महत्व
श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 80
12. पर्यावरण संरक्षण में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका
डॉ. डी. पी. सिंह, शालिनी अस्थाना 85
13. पर्यावरण और समाज
डॉ. (श्रीमती) सुजाता सेमुएल, डॉ. सपना कॉर 91
14. सांस्कृतिक चेतना और पर्यावरण
डॉ. माधुरी गर्ग 95

Scanned with OKEN Scanner

पर्यावरण और समाज

डॉ. (श्रीमती) सुजाता सेमुएल

डॉ. सपना कौर

मनुष्य निःसदेह इस सृष्टि के जीवित सर्वाधिक बुद्धिमान प्राणियों में से है, जो एक सुसंगठित और अत्यंत जटिल संरचनावाले समाज के रूप में अपने पर्यावरण के साथ अनुक्रियाएं करता है, उसे प्रभावित करता है, उससे प्रभावित होता है और कुछ अंशो में उसे परिवर्तित करने की क्षमता भी रखता है। यह परिवर्तन सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही सकते है लेकिन एक सीमा के भीतर ही होते है।

प्रस्तुत शोध पत्र में पर्यावरण एवं उसके विभिन्न संदर्भों को आधुनिक समाज के परिप्रेक्ष्य के समझने का प्रयास किया गया है। इस शोध पत्र की प्रकृति वर्णनात्मक है तथा यह व्यक्तिगत अनुभवों और द्वैतीयक स्रोतों पर आधारित है। वर्णनात्मक प्रकृति का होने के कारण सांख्यिकीय परीक्षण का प्रयोग नहीं किया गया है। पूर्व में इस विषय पर लिखे गये साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं तथा इंटरनेट आदि के माध्यम से द्वैतीयक स्रोत के रूप में तथ्य संकलित किये गये हैं।

पर्यावरण शब्द संस्कृत भाषा के उपसर्ग परि (चारों ओर) आवरण से मिलकर बना है जिसका अर्थ है, ऐसी चीजों का समुच्चय जो किसी व्यक्ति या जीवधारी को चारों ओर से घेरे हुए है। परिस्थितिकी और भूगोल में यह शब्द अंग्रेजी के environment के पर्याय के रूप में इस्तेमाल होता है।

आंग्लभाषा का शब्द environment स्वयं फ्रांसीसी भाषा से उत्पन्न हुआ जहां यह State of being environed के अर्थ में प्रयोग किया जाता था और इसका सर्वप्रथम प्रयोग कार्लाइल द्वारा जर्मन शब्द umgebung के अर्थ को फ्रांसीसी में व्यक्त करने के लिए हुआ।

प्रारंभिक दौर में शब्द invironment आसपास की सामान्य दशाओं के लिए प्रयोग होता था।

एक पृथक इकाई के रूप में तो नहीं परंतु समाज के रूप में संगठित मनुष्य पर्यावरण को प्रभावित करता और प्रभावित होता है। पृथ्वी पर मनुष्य के अस्तित्व में आते ही प्रारंभ हुई और निरंतर चल रही इस प्रक्रिया में तीन प्रमुख कारक है।

जैवभौतिक सीमाएं (Biophysical Limitations)

आचारपरक नियंत्रणों द्वारा (Behavioural Centrols)

Scanned with OKEN Scanner

संसाधनों की उपलब्धता

जैवभौतिक सीमाएं :– पूरी पृथ्वी पर पर्यावरण विभिन्न परिस्थितियों में बटा हुआ है, एक ओर अंटार्कटिक के बर्फानी क्षेत्र है तो दूसरी ओर अत्यंत उष्ण कटिबंधीय प्रदेश। जहां इसमें अनेक महासागर हैं वही अतिविस्तृत जलविहीन मरूस्थल भी हैं।

जैविकीय दृष्टि से मनुष्य और उनके समाज इतने सक्षम नहीं होते कि सभी जलवायु दशाओं में समान कार्यक्षमता या समान सांगठनिक संरचना का प्रदर्शन कर सकें बल्कि वे अधिक सुगम परिस्थितियों पर निर्भर करते है। बर्फ से ढके उत्तरी ध्रुव या सहारा मरूस्थल या साईबेरिया या अलअजीजिया जो विश्व का सर्वाधिक गर्म स्थल हैं। प्रायः मनुष्य विहीन हैं जो थोड़े बहुत लोग आसपास के क्षेत्रों में निवास करते भी हैं, उनकी शारीरिक संरचनाएं और सामाजिक व्यवस्थाएं इस प्रकार विकसित होती है, जो दूसरे प्रकार की परिस्थितियों में अनुकूलता स्थापित नहीं कर पाती। मैदानी क्षेत्रों में रहनेवाले लोग जब कभी भ्रमण हेतु ऊंचे पहाड़ी क्षेत्रों में जाते है जहां जलवायु विरल होती है तो सांस फूलने की समस्या उनमें आम होती है, वहां का भोजन, वस्त्र आदि के अनुकूल होने में भी उन्हे काफी समय लगता है।

आचार परक नियंत्रण. पर्यावरण से मनुष्य की क्रिया शीलता, विचारधाराएं, संस्कृति और व्यवहारों के साथ. साथ उसका संपूर्ण सामाजिक ढांचा भी सीधे तौर पर प्रभावित होता है। ठंडे प्रदेशों में रहने वाले लोगों की जीव. शैली, आचार. विचार, खानपान आदि गर्म प्रदेशों में रहने वाले लोगों से काफी अलग होता है, साथ ही जो लोग प्रतिकूल पर्यावरण जैसे अत्यधिक ठंड अत्यधिक उष्णता अत्यधिक ऊंचाईवाले प्रदेशों में रहनेवाले व्यक्ति शारीरिक रूप से उन लोगों से अधिक सक्षम होते है जो मैदानी अनुकूल समशीतोष्ण होती है।

संसाधनों की उपलब्धता सभ्यता के विकास हेतु आवश्यक संसाधन संपूर्ण पृथ्वी पर यंत्र–तंत्र बिखरे पड़े है। मध्यपूर्व के रेगिस्तानों में तेल के विशाल भंडार मिले है तो ऐशिया में खनिजों की पर्याप्त उपलब्धता है।

प्राकृतिक पर्यावरण और संसाधनों की उपलब्धता ने विभिन्न समाजों की संरचना और अन्ततः क्रियाशीलता को गहरे तक प्रभावित किया है। सामाजिक रीतिरिवाज संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर स्वयंमेव परिवर्तित होते रहे है। मध्यपूर्व में तेल के कुएं प्राप्त होने से पूर्व आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्थाएं दूसरी थी। संसाधन उपलब्ध हो जाने और उनके द्वारा विपुल धन प्राप्त कर लेने के बाद मध्यपूर्व के

Scanned with OKEN Scanner

देशों ने अपनी परंपराओं मे पर्याप्त बदलाव किये। साथ ही संगठित होकर उन्होने समूचे विश्व में ऊर्जा उत्पादन और संरक्षण के तरीकों को बदलने में उल्लेखनीय भूमिका निभायी है।

भारतीय समाज और पर्यावरण :- भारतीय समाज की यह विशेषता है, कि यह विश्व के सर्वाधिक प्राचीन परंपराओंवाली जीवित सभ्यताओं में अग्रगण्य है। ईश्वर ने इस उपमहाद्वीप में ऐसे और इतने प्राकृति संसाधन प्रदान किये है,जो सभ्य जीवन के विकास के लिए आवश्यक और पर्याप्त थे। परिणाम स्वरूप भारत में एक विद्वान और अतिशीघ्र सभ्यता का विकास हुआ जिसने प्रकृति के रहस्यों को समझने और उसके साथ तादम्य स्थापित करने के सर्वथा मौलिक उपायों का अनुसरण किया।

प्राचीनकाल से ही भारतीयों ने प्रकृति के विविध रूपों को जैसे जल, अग्नि, पेड़ पौधे, वन्य पशु आदि को पवित्र माना और उनके संरक्षण और संवर्धन का भरसक प्रयत्न किया। धरती को वे माता मानते थे और यह रहस्य उन्हे अच्छी तरह पता था कि पर्यावरण में प्रत्येक अंग चाहे वह जीवित पशु पक्षी हो अथवा अजीवित नदी नाले, वृक्ष पर्वत आदि का अपना महत्वपूर्ण स्थान है, और यदि किसी एक अंग की असामान्य वृद्धि अथवा ह्रास होता है तो इसका प्रभाव पूरे पर्यावरण पर नकारात्मक रूप से पड़ता है और अंततः प्रकृति संतुलन स्थापित करती है और इस संतुलन स्थापना में उस अंश को समाप्त या सीमित होना पड़ता है, जो पर्यावरण को क्षति पहुंचा रहा हो।

अपनी इसी सोच के कारण भारतीय सभ्यता जीवित और विकासशील बनी रही, जबकि इसके साथ या इसके बाद उत्पन्न होने वाली अधिकांश सभ्यताएं लुप्त हो चुकी हैं।

पर्यावरण के साथ भारतीय सभ्यता का यह सहकारी रूप बहुत लंबे अर्से तक चला लेकिन ब्रिटिश शासन तदुपरांत औद्योगिकीकरण की लहर में प्रकृति के तारतम्य का यह महत्वपूर्ण सूत्र कहीं टूट गया प्रतीत हो रहा है। वर्तमान भारतीय सभ्यता का अधिकांश भाग अधिकतम संचय और अधिकतम उपभोग की नीति पर चल रहा है। इस संबंध में दिये जानेवाले निर्देशों की उपेक्षा शक्तिशाली व्यक्तियों द्वारा ही नही जनसामान्य द्वारा भी अपनी इच्छानुरूप किया जा रहा है। भारत में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा ध्वनि और वायु प्रदूषण रोकने के लिए पटाखे चलाने की समय-सीमा का उल्लंघन इसका एक अच्छा उदाहरण है।

वर्तमान युग में समूचे विश्व में पर्यावरण को मानव नियंत्रण में लेने में और सुविधाओं के अधिकतम उपभोग के जो प्रयास किये जा रहे

Scanned with OKEN Scanner

है। उनके प्रति उत्तर में प्राकृतिक आपदाओं की एक निरंतरता हम देख सकते हैं। समूचा विश्व या तो भीषण गर्मी अथवा बाढ़ सूखा आदि की चपेट में है, स्पष्ट है कि प्रकृति अब नियंत्रण और संतुलन के प्रयास में है, और इसका अधिकतम दंड मानव समाज को ही भोगना होगा।

यदि समाज को नष्ट होने से बचना है तो उसे पर्यावरण को नष्ट होने से बचाना होगा। इस संबंध में पर्याप्त नियम पहले ही बताए जा चुके है। भारत में पर्यावरण कानून पर्यावरण (रक्षा) अधिनियम 1986 से नियमित होता है, जो स्वंय में एक व्यापक विधान है। इसकी रूप रेखा केंद्रीय सरकार के विभिन्न केंद्रीय और राज्य प्राधिकरणों के क्रियाकलापों के समन्वयन के लिए तैयार किया गया है जिसकी स्थापना पिछले कानूनों के तहत की गई है, जैसा कि जल अधिनियम और वायु अधिनियम। अन्य विधियों में भारतीय वन अधिनियम 1927 और वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 प्रमुख है।

आवश्यकता इस बात को हैं कि इन नियमों का पालन पूर्णतः किया जाए, समाज को यह स्वीकार करना ही होगा कि पर्यावरण स्वंय में एक स्वतंत्र शक्ति है, उससे छेडछाड़ करना या उस पर नियंत्रण प्राप्त करना संभव नहीं है, पर्यावरण विदोहन समझदारी से करना होगा और पर्यावरण संतुलन के प्रति अधिकाधिक ईमानदारी बरतनी अभीष्ट है और यह कार्य समाज को किसी प्रोत्साहन अथवा दंड के भय से नहीं अपितु स्वेच्छा से अपना दायित्व समझकर करना होगा, यही समाज के हित में है कि पर्यावरण सुरक्षित और संपूर्ण रहे।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- [1] An English-Hindi Dictionary-Fr. Camil Bulcke, S. Chand-2007, P-289
- [2] Online etymology dictionary
- [3] Geography and you 20 December 2017 P 1
- [4] Ibid P 1
- [5] http/hindi. speakingtree in/sbintuat-articles/science-of-spirituality/content-246889
- [6] http//w.vikas pedia. In/rural-energy/policy-support/92d930924-915940
- [7] चतुर्वेदी पंकज-जनसत्ता-राजनीतिक पर्यावरण-समाज और सरकार मार्च 28 2018
- [8] http://envfor. Nic. In/hi/rules-regulations/national-green-tribunal-ngt

डॉ. (श्रीमती) सुजाता सेमुएल
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग
शासकीय महाविद्यालय
मस्तूरी, जिला बिलासपुर, छ.ग.

डॉ. सपना कौर
प्रभारी प्राचार्य
शासकीय महाविद्यालय
टरमरीकला
जिला बालोद, छ.ग.

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप एवं विकास

संपादक
डॉ. शिव कुमार शर्मा
सहयोगी सम्पादक
डॉ. मनोज अवस्थी, डॉ. सरिता दीक्षित, डॉ. (श्रीमती) राजेश चतुर्वेदी

संकल्प प्रकाशन
कानपुर (उ.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-939871-5-5

पुस्तक का नाम :
भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप एवं विकास

संपादक
डॉ. शिव कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण 2019

मूल्य : 1195/-

प्रकाशक :
संकल्प प्रकाशन
1569/14 नई बस्ती बक्तौरी पुरवा, बृहस्पति मन्दिर
नौबस्ता, कानपुर-208 021
दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

शब्द सज्जा :
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक :
साक्षी आफॅसेट, कानपुर

Bhartiya Rastravad : Swaroop Evam Vikas
Editor : Dr. Shiv Kumar Sharma
Price : One Thousand One Hundred Ninety Five Only.

Scanned with OKEN Scanner

14. भारतीय राष्ट्रवाद का अवलोकन 69
अंजना देवी
15. असमिया साहित्य की राष्ट्रीय चेतना 72
डॉ. सुशील कुमार शर्मा
16. राष्ट्रवादी चेतना की पृष्ठभूमि में हिन्दी साहित्य 77
जिज्ञासा पाण्डेय
17. ब्रिटिश इतिहास और राष्ट्रवाद 81
डॉ. राघवेन्द्र यादव, प्रो. के. रत्नम
18. राष्ट्र की अवधारणा और भारतीय चिन्तन 85
डॉ. (श्रीमती) राजेश चतुर्वेदी
19. विश्व में बढ़ता हिन्दी का वर्चस्व 90
डॉ. शशि गुप्ता
20. साहित्य और राजनीति 93
डॉ. (श्रीमती) सुजाता सैमुएल
21. राष्ट्र के विकास में कवियों का योगदान 97
ज्योति कुशवाहा
22. राष्ट्रवाद और समाज 102
डॉ. बी.एल.मंडलोई, श्री जे.एस. पैकरा
23. हिन्दी कविता और राष्ट्रबोध 105
श्रीमती भारती घुमाल
24. सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और राष्ट्रवाद 108
डॉ. (श्रीमती) दुर्गा बाजपेयी, डॉ. (श्रीमती) शारदा दुबे
25. भाषा, संस्कृति एवं राष्ट्रीय चेतना 114
डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य
26. राष्ट्र के आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका 120
डॉ. राजकरण सिंह
27. सिमटते समाजवाद और पसरते पूँजीवादी समाज के बीच राष्ट्रवाद की अर्थवत्ता 123
डॉ. हरेन्द्र सिंह, डॉ. हरीशचन्द्र पाटनी
28. राष्ट्रवाद बनाम समाजवाद : एक तुलनात्मक अध्ययन 126
डॉ. दीपक शुक्ला
29. पं.दीनदयाल उपाध्याय का राष्ट्र चिंतन 129
श्रीमती कांति अंचल
30. भारतीय सामाजिक समस्याएँ और साहित्य 133
डॉ. (सुश्री) सपना कौर

Scanned with OKEN Scanner

24.

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और राष्ट्रवाद

*डॉ. (श्रीमती) दुर्गा बाजपेयी
**डॉ. (श्रीमती) शारदा दुबे

राष्ट्रीयता अथवा राष्ट्रवाद किसी निश्चित क्षेत्र (राष्ट्र) के प्रति निष्ठा की भावना है। जो इन व्यक्तियों को अन्य राष्ट्रों के व्यक्तियों से पृथक करती है।

ए. आर. देसाई के अनुसार–"जिस अर्थ में राष्ट्र शब्द का प्रयोग आज किया जाता है। वह मध्यकाल के राष्ट्र के अर्थ से भिन्न है। मध्य युग के अंतिम चरण में राष्ट्र राज्यों का निर्माण हुआ तथा जिन व्यक्तियों की निश्चित संस्कृति थी, निश्चित भूभाग पर निवास करते थे पृथक सभ्यता थी तथा एक भाषा थी, उन्हें अन्य व्यक्तियों से मनोवैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से पृथक माना जाने लगा।

श्री जयप्रकाश नारायण ने भी राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद के बारे में अपने विचार व्यक्त किये हैं। इनके अनुसार राष्ट्रत्व अनेक मूर्त एवं अमूर्त तत्वों से निर्मित होता है। यद्यपि अमूर्त तत्वों की संख्या अधिक होती है। राष्ट्रवाद के अधिक मूर्त तत्व निम्नांकित है।

(अ) एक सुस्पष्ट भू–भाग

(ब) राजनीतिक एकता जिसके द्योतक हैं।

1. एक संविधान (लिखित अथवा अलिखित)
2. सामान्य नागरिकता
3. एक सरकार जिसकी समस्त राष्ट्रीय भू भाग पर सत्ता है तथा अन्य राष्ट्रों से निपटने की शक्ति है।

(स) बहुत प्रतिवेष्टित (बहु भाषायी) राष्ट्रों के विभिन्न घटकों में संचार के एक या अनेक व्यवहार माध्यम।

राष्ट्रवाद के निर्माण में मूर्त तत्वों के अतिरिक्त कुछ अमूर्त तत्व भी अनिवार्य है। वास्तव में अमूर्त तत्व मूर्त तत्वों की अपेक्षा अधिक संख्या में ही नहीं है। अपितु महत्वपूर्ण भी है। ये तत्व जो मन की अभिवृत्तियों द्वारा अभिव्यक्त होते हैं। निम्नांकित हैं–

(क) मन की वह अभिवृत्ति जो सभी नागरिकों की निष्ठा, समूह या खण्डीय निष्ठाओं की अपेक्षा राष्ट्र के प्रति स्वाभाविक एवं सामान्य रूप से निर्मित करती है।

(ख) मन की वह अभिवृत्ति जो राष्ट्र की प्रत्येक समूहों या खण्डों के हितों को स्वाभाविक एवं सामान्य रूप से राष्ट्रीय हितों के अधीन बनाती है।

(ग) मन की वह अभिवृत्ति जो प्रत्येक राष्ट्र को राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक समूह तथा खण्ड के हितों के बारे में स्वाभाविक एवं सामान्य रूप से विचार करने के लिये प्रेरित करती है।

जय प्रकाश नारायण के उपर्युक्त विचारों से स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्र के निर्माण में केवल निश्चित भू–भाग एवं स्वायत्त शासन ही महत्वपूर्ण नहीं है अपितु व्यक्तियों में आध्यात्मिक एवं बौद्धिक एकता का पाया जाना भी अनिवार्य है।

राष्ट्रीयता की सटीक व्याख्या करते हुये नील जे. स्मेलसर लिखते हैं कि "राष्ट्रीयता से मेरा अर्थ उस विचार से है जो कि कोई एक राष्ट्र राज्य व्यक्ति से प्राथमिक निष्ठा के रूप में प्राप्त करता है। यह निष्ठा क्षेत्र प्रजाति संप्रदाय अथवा भाषा जैसी निम्नतर निष्ठाओं से ऊपर होती है।

प्राचीन भारत में राष्ट्रवाद – राष्ट्रवाद जनसमूह में विद्यमान एकता की उस विशेष भावना का नाम है जो इस जनसमुदाय को साथ रहने और किसी भी बाहरी आघात का सामूहिक प्रतिरोध करने के लिये प्रेरित करती है। सदस्यों में आत्मीयता साहचार्य राष्ट्र का प्रधान लक्षण है। वैदिक काल में वैदिक ऋषि कामना करता है। कि हम सुमार्गगामी हो, कुपथगामी न हो। हम कुबुद्धि से मुक्ति पाये। व्यक्ति को अपने सुख में तथा दूसरों के दुख में मुदित नहीं होना चाहिये।

भारतीय राष्ट्रवाद मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा का भाव है। बाल्मीकि रामायण के अनुसार हमारी राष्ट्रीयता 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' की भावना से अनुप्राणित रही है।

लोकमान्य तिलक 'गीता रहस्य' में उदार चरितानाम् वसुधैव कुटुम्बकम् को उद्धृत करते हुये लिखते है, "देश भक्ति विश्वभक्ति के मार्ग में केवल एक कदम है।

मध्यकालीन भारत में राष्ट्रवाद का स्वरूप – आठवीं शताब्दी में अरबों द्वारा सिन्ध अभियान और फिर ग्यारहवीं सदी में तुर्कों द्वारा पंजाब के मैदानों में लूटमार ऐसी राष्ट्रीय दुर्घटनायें थी जिनसे भारतीय राजाओं को सावधान हो जाना चाहिये था। राष्ट्रीय प्रतिरक्षा की भावना का अभाव उस युग में भी नहीं था। तोमर तेजपाल प्रथम (1081–1105 ई.) में समस्त उत्तर भारत के राजाओं को जो रण निमंत्रण भेजा था वह इस भावना का दिग्दर्शक है।"यदि महमूद रूपी महानंद के मार्ग में प्रबल बांध न खड़ा किया तब समस्त भारत देश उसके प्रवाह में बह जायेगा तथा सभी छोटे बड़े राज्य नष्ट हो जायेंगे लेकिन उत्तर भारत में अब साम्राज्यों का युग समाप्त हो रहा था और अनेक राज्यों का उदय हो रहा था। सब केवल आत्मरक्षा के लिये चिन्तित थे। परिणामस्वरूप मोहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण किया और गुलाम वंश की स्थापना की।

दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पश्चात् इस्लामी देशों से सूफी संत भारत आये और यहाँ की परम्पराओं से प्रभावित हुये। सूफी मत का प्रारंभिक रूप इस्लामिक देशों में निःसंदेह अलग रहा होगा।

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव इस संबंध में लिखते हैं 'एक इष्टदेव का विचार और आत्मा तथा परमात्मा के बीच प्रियतमा और प्रियतम जैसे संबंध होने की बात हिन्दू धर्म की अपनी विशेषता है, जिसे भारत के सूफियों ने अपना लिया था।

सूफी शांति, अहिंसा उपवास यातना सहने आगत को जल देन, भक्त मंडलियाँ बनाने जैसे कार्य करते थे। जो स्पष्टतः भारतीय संस्कृति हिन्दू तथा बौद्ध धर्म का प्रभाव है। सूफी धर्म का आधार ही प्रेम है।

इस प्रकार सूफी संतों ने अपनी उदारता के कारण तत्कालीन समाज पर गहरा प्रभाव डाला और इस्लाम में व्याप्त कट्टरता को कम करने के साथ ही विरोधी धर्मों में सामंजस्य और समन्वय स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसी तरह भक्ति आंदोलन में सौहार्दपूर्ण वातावरण का निर्माण किया। भारतीय संस्कृति की यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषता है। कि यह एक सर्वकल्याणकारी संस्कृति है और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' तथा वसुधैव कुटुम्बकम' को मानती हैं।

आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद—भारत का साक्षात्कार जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारियों से हुआ तब किसी को यह नहीं मालूम था कि यहाँ से उपनिवेशवाद का नया अध्याय लिखा जाने वाला है। भारत के राष्ट्रवाद पर यह आघात था—देश गुलाम होने जा रहा है। उसकी संपूर्ण पहचान समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। यह केवल उपनिवेश है—ब्रिटिश उपनिवेश जो कभी सोने की चिड़िया था वह मात्र गुलाम है। पश्चिम के अपने मानदण्डों के अनुसार उन्होंने भारत को एक राष्ट्र ही मानने से इंकार कर दिया। तुर्क, अफगान और मुगल तो भारत में आकर यहीं बस गये थे। किन्तु अंग्रेज यहाँ बसने नहीं शोषण करने आये थे उन्होंने भारत को अपनी आर्थिक समृद्धि का साधन बनाया था। भारत को पराधीनता का दंश झेलना पड़ा। इसका कारण था राष्ट्रीयता, देश प्रेम का अभाव, क्षेत्रीयता का बढ़ना, अंग्रेजों की चतुराई और धूर्तता। इसका शिकार भी भारतीय इसी कारण बने कि वे आपस में लड़े मराठे, राजपूत, सिक्ख, जाट, मुगल, बंगाल, हैदराबाद यदि एकता होती तो पराधीनता न होती।

अंग्रेजी राजनैतिक सत्ता की स्थापना के साथ-साथ आर्थिक शोषण, सामाजिक भेदभाव तथा भारतीयों के प्रति घृणा भारतीयों का अपने ही देश में गुलाम बन जाना, तिरस्कृत होना, इसने जिस प्रतिक्रिया को ब्रिटिश विरोधी भावना को जन्म दिया वह राष्ट्रवादी भावना थी। जब भारतीयों को अपने ही देश में न्यायोचित अधिकारों से वंचित होना पड़ा और उनका सामाजिक आर्थिक विकास बाधिक होने लगा, तब ब्रिटिश शासन के विदेशीपन के विरुद्ध राष्ट्रवाद जन्मा। यह क्रिया के विरुद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त था। भारत में अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार ने पश्चिमी ज्ञान ने भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग में स्वतंत्रता समानता, राष्ट्रीयता स्वशासन जैसे पाश्चात्य उदारवादी विचारधारा से साक्षात्कार कराया।

इस दृष्टि से देखें तो भी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलनकाल में राष्ट्रवाद एक प्रतिक्रिया है जो जिससे उत्पन्न हुई उसी के विरुद्ध खड़ी हुई। पार्थ चटर्जी और आशीष नंदी का भी यही मत है।

उन्नीसवी शताब्दी में देशी भाषाओं का भी विकास हुआ। बंकिम चन्द्र चटर्जी के सुप्रसिद्ध उपन्यास आनंद मठ में ब्रिटिश शासन के कुप्रभावों का वर्णन था, उसी उपन्यास में 'वन्दे मातरम्' नामक गीत ने देशभक्ति की प्रेरणा दी। हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने गुजरात में नर्मदा ने मराठी में चिपलूणकर ने तमिल में भारती तथा अन्य साहित्यकारों ने राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण साहित्य का सृजन किया।

भारतीय समाचार पत्रों में संवाद कौमुदी बान्बे समाचार बंगदूत, रस्त गोफ्तार, अमृत बाजार पत्रिका आदि महत्वपूर्ण हैं ब्रिटिश प्रशासन की नवीन प्रक्रिया से शहरों में एक नवीन शिक्षित मध्य वर्ग का उदय हुआ जिसने शासकीय पद प्राप्त किये। इस संगठित वर्ग की विचारधारा और मूल्य एक से थे यह वर्ग भारत की राष्ट्रीयता का सूत्रधार बना।

भारत की बहुल भाषी संस्कृति में एक राष्ट्र कैसे हो सकता है। ये अंग्रेज कभी समझ ही नहीं सकते थे उनके लिये जातियों, उपजातियों, धर्म सम्प्रदायों, भाषाओं रीति रिवाजों में बंटा हुआ भारत कभी राष्ट्र हो ही नहीं सकता था। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के भूतपूर्व छात्रों को संबोधित करते हुए सन् 1884 में जान स्ट्रांची जो एक भूतपूर्व भारतीय सिविल सर्वेन्ट ने कहा था भारत के विषय में सबसे पहली तथा आवश्यक जानने योग्य बात यह है कि भारत न एक है और न था और अंत में यह भी जोड़ दिया कि भारत कभी राष्ट्र नहीं बन सकेगा' इस प्रकार अंग्रेज शासकों ने एक राष्ट्र के रूप में भारत के अस्तित्व को अस्वीकार कर दिया। वे भारतीयों में आत्मविश्वास कभी भी पैदा हो यह नहीं चाहते थे। उन्हें इतना कुचल देना चाहते थे कि गुलामी में जीना अपनी नियति स्वीकार लें।

उनके सारे प्रयासों के बावजूद जब भारतीय राष्ट्रवाद 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रस्फुटित हुआ तो अंग्रेजों ने उसका श्रेय स्वयं ले लिया। डूफरीण्ड ने कहा कि भारतीय राष्ट्रवाद अंग्रेजी राज्य की संतान है। इसी प्रकार रैन्जे मैकडोनाल्ड ने कहा कि भारतीय राष्ट्रवाद अंग्रेजी राज की संतान है। इसी प्रकार रैन्जे मैकडोनाल्ड ने कहा कि अंग्रेजों ने भी भारतीयों को राजनैतिक मानसिक और वैचारिक दृष्टि से इतना सक्षम बनाया था कि उनके अंदर राष्ट्रीयता की भावना जागृत हो सके निःसंदेह अंग्रेजी शिक्षा का लाभ भारतीयों को मिला था तथा भारत के सभी क्षेत्रों में यह शिक्षित भारतीयों के बीच एक संपर्क भाषा के रूप में स्वीकृत की गयी थी। इस प्रकार अंग्रेजी भाषा ने ब्रिटिश साम्राज्य के विरोधाभास को भी उजागर कर दिया। अंग्रेज अपने देश में उदारवाद, मानव अधिकार, समानता, स्वतंत्रता के आदर्शों को जी रहे थे और पूरे यूरोप में इन्हीं आदर्शों के कारण उनकी प्रतिष्ठा थी। उनके दोहरे मापदण्ड भारतीयों के सामने

Scanned with OKEN Scanner

उजागर हो गये। जब भारत की बात आती तो उन्हें काला मानुष कहकर जानवरों की तरह बर्ताव करते। ब्रिटिश शासन के प्रति घृणा ने भारत में अपेन देश के प्रति भ्रम पैदा किया जिसे दूसरे शब्दों में राष्ट्रीयता कहा जाता है।

अंग्रेज शासक वर्ग यह भली भांति समझते थे कि अंग्रेजी भाषा और साहित्य के अध्ययन तथा ईसाईयत के प्रचार से भारत की राष्ट्रवादी भावना शिथिल पड़ जायेगी। धर्मांतरण का सहारा लेते हुये यह सफाई पेश की गयी कि ये श्वेत वर्ग के लोग असभ्य काले भारतीयों को सभ्य बनाने आये हैं।

इस प्रकार एक ओर शिक्षित वर्ग को अंग्रेजी शिक्षा की संतति कहा गया तो दूसरी ओर भारतीय नवजागरण पुनर्जागरण आंदोलन ब्रिटिश शासन की नीतियों के विरुद्ध प्रतिक्रिया थी। विशेषकर पुनर्जागरण का दूसरा चरण या दूसरी प्रवृत्तियाँ स्वरूप जिसे हिन्दु पुनरुत्थानवाद भी कहा गया है और जो स्वामी दयानंद सरस्वती से प्रारम्भ होती है। उन्होंने भारत के गौरवशाली अतीत से ही प्रेरणा ली और वेदों की ओर वापस' जाने का आवाहन किया। वेद ज्ञान और विज्ञान का भंडार है। आर्य समाज ने भारत के खोये हुये आत्मविश्वास तथा आत्म सम्मान को जगाया। उसने भारतीय समाज को राष्ट्रवाद की भावना से प्रेरित करके समाज में एक नया जीवन फूँका।

महर्षि अरविन्द के अनुसार–"स्वामी दयानंद ने वेदों को भारत के युगों की चट्टान समझ कर पकड़ लिया और उसमें उन्होंने तारुण्य की समग्र शिक्षा, एक समग्र पुरुषत्व तथा एक समग्र राष्ट्र को जो दर्शन किया उसके ऊपर निर्णय करने का साहस दिखलाया, उनमें राष्ट्रीयता की भावना थी और उन्होंने उस भावना को एक आत्मानुभूमित का रूप देकर उसे ज्योतिर्मय बना दिया इस प्रकार धार्मिक सांस्कृतिक क्षेत्र में राष्ट्रवाद का सूत्रपात स्वामी दयानंद सरस्वती ने किया। थियोसिफकल सोसाइटी और रामकृष्ण मिशन ने इसे बल प्रदान किया। बाल गगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल और लाला लाजपत राय ने इस राष्ट्रीय धारा को प्रवाहित कर राष्ट्रीय आन्दोलन का संचालन किया। विपिन चन्द्रपाल ने इसे 'अभिनव राष्ट्रवाद' की संज्ञा दी है। राष्ट्र संस्कृति है जब संस्कृति पर आघात हुआ तब राष्ट्र पर आघात हुआ प्रतिक्रियास्वरूप सुधारात्मक और आक्रामक दोनों ही स्वर उभरे। साहित्य में दिखाई दिये परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आन्दोलन को गति मिलती रही। जिसकी अंतिम परिणति भारत की स्वाधीनता प्राप्त थी।

इस प्रकार राष्ट्रवाद भारत में एक अविछिन्न सांस्कृतिक धारा के रूप में पांच हजार वर्षों से सतत प्रवाहित हो रही है। इसी राष्ट्रवाद ने आक्रान्ताओं को भी आत्मसात कर अपना बना लिया था और साम्राज्यवादियों को भी प्रत्युत्तर देकर अपने अस्तित्व की रक्षा करते हुये अपना मस्तक सदैव ऊँचा उठाकर रखा।

संदर्भ

1. डॉ. सिंह वंश गोपाल एवं डॉ. रावदेवा राजकुमार सत्यान्वेषी भारत, छ.ग राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी संस्कृति, राष्ट्र और राष्ट्रवाद : संदर्भ भारत उद्घृत प्रो. आभा रूपेन्द्र पाल
2. ऋग्वेद
3. महाभारत, उद्योगपर्व
4. डॉ. महाजन संजीव–भारतीय समाज अर्जुन पब्लिशिंग हाउस दरियागंज नई दिल्ली

•विभागाध्यक्ष– (समाजशास्त्र)
शासकीय पातालेश्वर महाविद्यालय
मस्तूरी जिला–बिलासपुर (छ.ग.)

••विभागाध्यक्ष– (समाजशास्त्र)
शासकीय बिलासा कन्या स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बिलासपुर
जिला– बिलासपुर (छ.ग.)

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय राष्ट्रवाद
स्वरूप एवं विकास

डॉ. शिवकुमार शर्मा

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-939871-5-5

पुस्तक का नाम :
भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप एवं विकास

संपादक
डॉ. शिव कुमार शर्मा

प्रकाशक :
संकल्प प्रकाशन
1569/14 नई बस्ती बक्तौरी पुरवा, बृहस्पति मन्दिर
नौबस्ता, कानपुर-208 021
दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

शब्द सज्जा :
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक :
साक्षी आर्फसेट, कानपुर

प्रथम संस्करण 2019

मूल्य : 1195/-

Bhartiya Rastravad : Swaroop Evam Vikas
Editor : Dr. Shiv Kumar Sharma
Price : One Thousand One Hundred Ninety Five Only.

Scanned with OKEN Scanner

22.

राष्ट्रवाद और समाज

*डॉ. बी.एल.मंडलोई

**श्री जे.एस. पैकरा

राष्ट्रवाद एक भाव है, जिसकी चर्चा वाङ्मय में अनेक स्थानों पर अनेक रूपों में मिलती है। यजुर्वेद में 'राष्ट्र' की पुनरुक्ति हुई है और अनेक बार राष्ट्र मे देहि और राष्ट्र दा, कह कर राष्ट्र की कामना की गयी है। इस प्रकार 'राष्ट्रवाद' अर्वाचीन नही है, प्रारम्भिक काल से ही राष्ट्रजन इसका प्रयोग समुचित रूप से भावानुरूप में करते आये हैं। विभिन्न तत्वों के आकस्मिक संयोग से एकता की भावना उत्पन्न होती है। जिससे राष्ट्रीयता विकसित होती है। राष्ट्रवाद जनसमूह मे विद्यमान एकता की उस विशेष भावना उत्पन्न होती है। जिससे राष्ट्रीयता विकसित होती है। राष्ट्रवाद जनसमूह में विद्यमान एकता की उस विशेष भावना का नाम है। जो इस जनसमुदाय को साथ रहने और किसी भी बाहरी आघात का सामूहिक प्रतिरोध करने के लिये प्रेरित करती है। वैदिक काल मे ऋषि जन कामना करते थे कि हम सुमार्गगामी हो,कुपथगामी ना हो और कुबुद्धि से मुक्ति पायें। स्वार्थी मानव राष्ट्रीय एकता के लिये स्वार्थ त्याग करने में असमर्थ होता है, परन्तु हित चिंतक व्यक्ति स्वर्ग, मोक्ष आदि की इच्छा न करके दुखियों के दुख को स्वयं झेलना चाहता है। ताकि दु:खी व्यक्ति सुख प्राप्त कर सके।

समाज में प्रारम्भ से ही 'वसुधैव कुटुम्बकम' की धारणा देखने को मिलती है। यह समाज जाति, रंग धर्म सम्प्रदाय आदि भेद को छोड़कर राष्ट्र की भावना अपने हृदय मे संजोये हुये विश्व कल्याण की कल्पना करता है। समाज और राष्ट्रवाद एक दूसरे से अनभिज्ञ नही है बल्कि वह राष्ट्रवाद ही था जिसके कारण समाज को एक नई दिशा मिली, चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, राजनीतिक का क्षेत्र हो, संस्कृति का क्षेत्र हो या धर्म का। सभी क्षेत्रों में राष्ट्रवाद ही समाहित है जब देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, अपने ही देश में तिरस्कृत महसूस कर रहा था तब देशवासियों को अपने ही देश में न्यायोचित अधिकारों से वंचित होना पड़ा था और उनका सामाजिक, आर्थिक विकास बाधित होने लगा था। तब ब्रिटिश शासन के विरुद्ध राष्ट्रवाद का जन्म हुआ साथ ही देश मे अंग्रेजी शिक्षा के स्वतंत्रता आन्दोलन काल में राष्ट्रवाद एक प्रतिक्रिया थी जो अंग्रेजों के विरुद्ध जन्मी थी।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति और उत्थान के लिये वहाँ के जन समुदाय में राष्ट्रवाद का भाव होना आवश्यक है। यह भाव उन राष्ट्रों के लिये विशेष रूप से आवश्यक है जो पिछड़े हुये है या जहाँ अनेक धर्म, भाषायें तथा जातियाँ है। ऐसे राष्ट्रों को एकता के सूत्र मे बांधने के लिये राष्ट्रवाद का भाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस भाव को बढ़ाने में शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। बच्चों मे प्रारम्भ से ही राष्ट्रवादी चेतना की उत्पत्ति के लिये प्रयत्न करना चाहिये। इस चेतना के विकास के लिये परिवार स्कूल और समाज का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा समाज में राष्ट्रवादी चेतना का विकास करके बहुत कुछ बदलाव लाया जा सकता है।

आज महिलाये समाज को एक नई दिशा की ओर ले जाने तथा राष्ट्रवाद के आधार पर जनता में संवेदनशीलता की भावना को जागृत करने में अपनी अहम भूमिका निभा रही है। जिसके फलस्वरूप लोगों की सोच में परिवर्तन हुये हैं। आज महिला केवल घर की सजावट की वस्तु नही रह गयी है बल्कि समाज की भी। अपेक्षायें महिलायें से अत्यधिक बढ़ गयी है। अब तो घर और बाहर दोनो ही भूमिकाओं में पूर्णतया संतुलन बनाये रखने का प्रयास निरन्तर करती रहती है। वर्तमान समय में महिला केवल पर्दे में लिपटी घर की चार दीवारी में बन्द जीव नहीं है। बल्कि वेघर की धुरी है एक ऐसी धुरी जिसके बिना जीवन का सतुलन सम्भव नही है। वह समाज में अपनी पहचान बनाने के लिये निरन्तर तैयार रहती है। आज वह दूसरों की पहचान जैसे–पिता की बेटी, पति की पत्नी, बेटे की माँ जैसे संबोधनों से स्वयं को मुक्त कर अपनी पहचान बनाना चाहती है। इस दिशा में सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास भी कम सराहनीय नही है। वर्तमान में ऐसा कोई भी क्षेत्र नही है जिसमे महिलाये अपनी सहभागिता न दे रही हो, चाहे वह आर्थिक, शिक्षा, खेलकूद, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक, स्वास्थ्य और कानून क्षेत्र ही क्यों न हो, नारी की यह स्थितियाँ आज राष्ट्रवाद और राष्ट्र विकास की परिचायक हैं।

आतंकवाद की समस्या आज की भयानक समस्या है। इस समस्याओ ने समाज को पूरी तरह कलंकित कर दिया है जो धार्मिक उन्मादी, शासन एवं सरकार का ध्यान आकृष्ट करने के लिये हिंसा का प्रयोग करते है। सभी लोग इस बात से भली भांति परिचित है कि स्वार्थ, मानवता के दुश्मन, गुमराह लोगों की सनक का दुष्प्रभाव आज पूरी दुनिया झेल रही है। राष्ट्र के लिये यह सबसे दुर्भाग्य की बात है कि कुछ मुट्ठी भर लोग अपने ही राष्ट्र मे बच्चों, युवाओं और महिलाओं को आतंकवाद की ट्रेनिंग दे रहे हैं। इस समस्या से छुटकारा पाने के लिये जनता को संवेदनशील होना होगा और यही संवेदना राष्ट्रवाद से ही उत्पन्न होगी।

वैश्वीकरण एक व्यापक प्रक्रिया है जो राजनीति, तकनीकी अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति को तीव्र गति से विकास की ओर ले जाती रही है। इसने भौतिक संसार की दूरियों को मिटाकर हमारे मूल्यों, मान्यताओं, विचारों को नई अर्थवत्ता दी है वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया में स्थान और समय की दूरी सिमट जाने के कारण विकासशील और पिछड़े क्षेत्रों में प्रभुत्वशाली समाज को सांस्कृतिक आदर्श

का स्वरूप प्रदान कर दिया है। वैज्ञानिक उन्नति, औद्योगिक विकास, कम्प्यूटर इंण्टरनेट, फैक्स, ई–मेल ने सोचने समझने और विकास के सारे मानदण्ड ही बदल दिये हैं और यह सब राष्ट्रवाद द्वारा ही संभव हो पाया है।

राष्ट्रवाद के इस भाव को जागृत रखने के लिये आवश्यक है कि हमें सामाजिक मूल्यों के क्षरण को रोकना होगा। प्रत्येक समाज में परिवार, विवाह नैतिकता, शिष्टाचार, मनोरंजन, धार्मिक क्रियायें जीविकोपार्जन अतिथि–सत्कार तथा राजनीति आदि से सम्बन्धित बहुत से मूल्य होते हैं। जो समाज में दया क्षमा अहिंसा तथा पुरुषार्थ के रूप में धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष आदि जो भावों को जन्म देते हैं। ये सभी मूल्य एक विशेष दृष्टिकोण को लेकर मानव को विभिन्न व्यवहार करने की प्रेरणा देते हैं। वेद पुराण, स्मृतियाँ, ब्राह्मण ग्रंथ, रामायण, गीता महाभारत की गाथायें जीवन मूल्यों के सशक्त स्त्रोत रहे हैं। इन्हें आधार मानकर ही राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, ज्योतिबा फूले, रामकृष्ण परमहंस विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द, महावीर स्वामी, गौतम बुद्ध महात्मा गांधी इत्यादि ने सामाजिक मूल्यों को प्रोत्साहित किया है। धार्मिक ग्रंथों और महापुरुषों ने व्यक्ति और समाज के लिये जिन मूल्यों पर अधिक बल दिया उनमें धर्म ईमानदारी सत्य, अहिंसा, संवेदनशीलता, भावनात्मकता प्रेम, सहयोग, सहानुभूति, विश्वास, शांति और भाईचारा प्रभुत्व है। अकेले गांधी जी ने सत्य और अहिंसा के मूल्यों के बल पर सत्याचरण और सत्याग्रह के द्वारा राष्ट्र में अंग्रेजों के साम्राज्यवाद का अंत तो किया ही साथ ही विश्व ने उन्हें युगदृष्टा का सम्मान भी दिया। हमें अपने अंदर भी इसी राष्ट्रवाद को जाग्रत रखना होगा और संवेदनशील बनना होगा, ताकि हमारा समाज एक नई ऊँचाइयों को छू सके।

संदर्भ

1. समकालीन भारतीय समाज–समकालीन भारतीय समाज–डॉ. मीनाक्षी व्यास–विकास प्रकाशन कानपुर
2. भारतीय साहित्य–डॉ. रामछबीला त्रिपाठी वाणी प्रकाशन
3. सत्यान्वेषी भारत–डॉ. वंश गोपाल सिंह, डॉ. राजकुमार सचदेव, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी
4. हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक चेतना–सं.प्रा. के.एम. मायावंशी, प्रा. मीना पटेल चिन्तन प्रकाशन

*सहा. प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
शासकीय पातालेश्वर महाविद्यालय
मस्तूरी, जिला–बिलासपुर (छ.ग.)

**सहा. प्राध्यापक (समाजशास्त्र)
शासकीय पातालेश्वर महाविद्यालय
मस्तूरी, जिला–बिलासपुर (छ.ग.)

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय राष्ट्रवाद
स्वरूप एवं विकास

डॉ. शिवकुमार शर्मा

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप एवं विकास

संपादक

डॉ. शिव कुमार शर्मा

सहयोगी सम्पादक

डॉ. मनोज अवस्थी, डॉ. सरिता दीक्षित, डॉ. (श्रीमती) राजेश चतुर्वेदी

संकल्प प्रकाशन

कानपुर (उ.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-939871-5-5

पुस्तक का नाम :
भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप एवं विकास

संपादक
डॉ. शिव कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण 2019

मूल्य : 1195/-

प्रकाशक :
संकल्प प्रकाशन
1569/14 नई बस्ती बक्तौरी पुरवा, बृहस्पति मन्दिर
नौबस्ता, कानपुर-208 021
दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

शब्द सज्जा :
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक :
साक्षी आफॅसेट, कानपुर

Bhartiya Rastravad : Swaroop Evam Vikas
Editor : Dr. Shiv Kumar Sharma
Price : One Thousand One Hundred Ninety Five Only.

Scanned with OKEN Scanner

14. गोपालदास नीरज का वैचारिक चिन्तन

डॉ. डी. एस. ठाकुर

15. भारतीय राष्ट्रवाद का अवलोकन

अंजना देवी

16. असमिया साहित्य की राष्ट्रीय चेतना

डॉ. सुशील कुमार शर्मा

17. राष्ट्रवादी चेतना की पृष्ठभूमि में हिन्दी साहित्य

जिज्ञासा पाण्डेय

18. ब्रिटिश इतिहास और राष्ट्रवाद

डॉ. राघवेन्द्र यादव

प्रो. के. रतमन्

19. राष्ट्र की अवधारणा और भारतीय चिन्तन

डॉ. (श्रीमती) राजेश चतुर्वेदी

20. विश्व में बढ़ता हिन्दी का वर्चस्व

डॉ. शशि गुप्ता

21. साहित्य और राजनीति

डॉ. (श्रीमती) सुजाता रौगुएल

22. राष्ट्र के विकास में कवियों का योगदान

ज्योति कुशवाहा

23. राष्ट्रवाद और समाज

डॉ. बी.एल.मंडलोई

श्री जे.एस. पैकरा

24. हिन्दी कविता और राष्ट्रबोध

श्रीमती भारती घुमाल

25. सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और राष्ट्रवाद

डॉ. (श्रीमती) दुर्गा बाजपेयी

डॉ. (श्रीमती) शारदा दुबे

26. भाषा, संस्कृति एवं राष्ट्रीय चेतना

डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य

27. राष्ट्र के आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका

डॉ. राजकरण सिंह

28. सिमटते समाजवाद और पसरते पूँजीवादी समाज के बीच राष्ट्रवाद की अर्थवत्ता

डॉ. हरेन्द्र सिंह

डॉ. हरीशचन्द्र पाटनी

Scanned with OKEN Scanner

साहित्य और राजनीति

डॉ. (श्रीमती) सुजाता सैमुएल

प्रत्येक समाज की संरचना अनेक उपव्यवस्थाओं, धार्मिक, आर्थिक राजनीतिक आदि का एक जटिल समुच्चय होती हैं, यह उपव्यवस्थायें परस्पर अन्तः संबंधित होती हैं। एक दूसरे को निश्चयात्मक रूप से प्रभावित करती है। और प्रभाव ग्रहण भी करती हैं।

राजनीति उपव्यवस्था समाज के भीतर सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपव्यवस्था है, क्योंकि यह बाध्यकारी रूप से अपने आदेशों का अनुपालन कराने की क्षमत रखती है। स्वाभाविक है कि साहित्य जिसे 'समाज का दर्पण' की संज्ञा दी गयी है, से राजनीति का अन्योनाश्रित संबंध दृष्टिगत होता है जहाँ एक ओर साहित्य में प्रमुख राजनीतिक घटनाओं का वृहद और कभी कभी तो अतिशयोक्ति पूर्ण चित्रण मिलता है। वहीं दूसरी ओर प्रबुद्ध लेखकों के विचारोत्तेजक साहित्य सृजन का प्रभाव भी राजप्रमुखों पर स्पष्ट परिलक्षित होता है।

साहित्य और राजनीति का संबंध वास्तव में एक बहुपथगामी वृहद राजमार्ग की तरह होता है। जिसमें दोनों ही दिशाओं से निर्बाध आवागमन जारी रहता है। कोई भी साहित्यिक का व्यक्तित्व उसके समय की सामाजिक कारकों की उपज होता है और किसी भी साहित्यकार का व्यक्तित्व उसके समय की सामाजिक और रानीतिक पर्यावरण द्वारा निर्धारित होता है।[1] डनिंग ने मैयिकावली के साहित्य पर तत्कालीन राजनीतिक परिस्थतियों का इतना प्रभाव पाया कि उसने लिखा– यह प्रतिभा सम्पन्न फ्लोरेंसवासी वास्तविक अर्थो में अपने युग का शिशु था।[2] यह बात कमोवेश हर साहित्यकार पर लागू होती है। हमारे विचार वास्तव में हमारे मूल्यों द्वारा निर्धारित होते हैं।

कई प्रबुद्ध व्यक्ति राजनीति को संकुचित अर्थों में लेते हैं जिसके अंतर्गत दलगत राजनीति, चुनावी राजनीति और राजनीतिक नेतृत्व जैसी चीजे ही समाहित होती हैं, नतीजतन राजनीति शब्द का अर्थ लिया जाता है। विभाजन, भेदभाव और प्रतिपक्षियों के विरुद्ध कीचड़ उछालना और इसी कारण वश अनेक लोग यह कहते हैं कि राजनीति से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं।[3] वास्तव में राजनीति का दायरा इतना वृहद है। कि वह समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को समस्त जीवनकाल प्रभावित करता है राजनीतिक घटनायें विश्व की दशा और दिशा को

Scanned with OKEN Scanner

निर्धारित करती हैं और अपने दैन्दिनी जीवन में हमें निरन्तर स्थानीय राज्य या राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय सरकारों एवं संगठनों के बनाये नियमों का अनुपालन करना पड़ता है। साहित्यकार समाज से पृथक रहकर साहित्य रचना नहीं कर सकते अन्यथा उन्हें हमें अरस्तू की या तो देवताओं अथवा पशुओं की श्रेणी में रखना होगा।[4] और किसी भी सामाजिक सरोकार का अर्थ है राजनीतिक विचारधारा से प्रभावित होना।

राजनीति और साहित्य के परस्पर संबंध को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

1. साहित्यिक रचनाओं में राजनीतिक अंश
2. साहित्यकारों और उनके संगठनों का सम्मान, मान्यता और आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिये की जाने वाली राजनीतिक गतिविधियाँ
3. साहित्य और साहित्यकार के अधिकारों के संदर्भ में लेखक और राज्य के संबंध।[5]

हिन्दी साहित्य का यदि उदाहरण ले जो इसके प्रारम्भिक काल जिसे वीरगाथा काल की संज्ञा दी गयी है, में राजपूत राजाओं के उदय शासन प्रणाली और युद्धों का वृहद वर्णन है, संभवतः इसका कारण यह था कि साहित्यकारों को राज्याश्रय मिलता था और उनकी आजीविका का स्त्रोत या तो स्वयं का शारीरिक श्रम था या शासकीय अनुदान।

वीरगाथा काल – आदिकाल या वीरगाथा काल छोटे छोटे राज्यों और शासकों का काल था, जिनमें आपस में निरंतर युद्ध चलते रहते थे। साथ ही बिदेशी आक्रांताओं का हस्तक्षेप भी होता रहता था। फलतः इस समय का साहित्य युद्धों के वर्णन से भरा हुआ है। इस युग के साहित्य की विशेषतायें निम्नांकित हैं–

1. राजाओं की वीरता का वर्णन और प्रशंसा – इस काल में राजप्रमुख निरन्तर युद्धरत रहते थे और विदेशी आक्रमण भी निरन्तर चलते थे। अतः इस युग के साहित्यकारों ने अपने –अपने आश्रयदाता राजाओं के युद्ध कौशल और दानशीलता की बढ़ा चढ़ाकर प्रशंसा की, क्योंकि राजाओं की प्रसन्नता से उन्हें मूल्यवान पुरस्कार मिलते थे लेकिन उन्हें नाराज करना दंड को आमंत्रित करना था।

2. राष्ट्रीय भावना का अभाव –इस युग के साहित्यकार विशेषतः कवि थे। पद्य साहित्य का विकास नहीं हुआ था और ये कवि किसी न किसी राजा अथवा सामंत पर आश्रित थे। उन्होंने सम्पूर्ण राष्ट्र जो अनेक राज्यों का संघ हो, की कल्पना भी नहीं की थी अतः उनके साहित्य में राष्ट्रीय भावना दृष्टिगोचर नहीं होती।

3. सामाजिक चित्रण का अभाव – इस युग के साहित्यकारों ने स्वयं को राजदरबारों तक ही सीमित कर लिया था। जन सामान्य के जीवन या उनकी समस्याओं सौमनस्यता से उनका संबंध टूट गया था, तत्कालीन सामाजिक जीवन का चित्रण इस युग के साहित्य में उपलब्ध नहीं है।

आदिकाल या वीरगाथा काल में काव्य रचनायें दो प्रकार की थी।

Scanned with OKEN Scanner

निर्धारित करती हैं और अपने दैन्दिनी जीवन में हमें निरन्तर स्थानीय राज्य या राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय सरकारों एवं संगठनों के बनाये नियमों का अनुपालन करना पड़ता है। साहित्यकार समाज से पृथक रहकर साहित्य रचना नहीं कर सकते अन्यथा उन्हें हमें अरस्तू की या तो देवताओं अथवा पशुओं की श्रेणी में रखना होगा।[4] और किसी भी सामाजिक सरोकार का अर्थ है राजनीतिक विचारधारा से प्रभावित होना।

राजनीति और साहित्य के परस्पर संबंध को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

1. साहित्यिक रचनाओं में राजनीतिक अंश
2. साहित्यकारों और उनके संगठनों का सम्मान, मान्यता और आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिये की जाने वाली राजनीतिक गतिविधियाँ
3. साहित्य और साहित्यकार के अधिकारों के संदर्भ में लेखक और राज्य के संबंध।[5]

हिन्दी साहित्य का यदि उदाहरण ले जो इसके प्रारम्भिक काल जिसे वीरगाथा काल की संज्ञा दी गयी है, में राजपूत राजाओं के उदय शासन प्रणाली और युद्धों का वृहद वर्णन है, संभवतः इसका कारण यह था कि साहित्यकारों को राज्याश्रय मिलता था और उनकी आजीविका का स्त्रोत या तो स्वयं का शारीरिक श्रम था या शासकीय अनुदान।

वीरगाथा काल – आदिकाल या वीरगाथा काल छोटे छोटे राज्यों और शासकों का काल था, जिनमें आपस में निरंतर युद्ध चलते रहते थे। साथ ही विदेशी आक्रांताओं का हस्तक्षेप भी होता रहता था। फलतः इस समय का साहित्य युद्धों के वर्णन से भरा हुआ है। इस युग के साहित्य की विशेषतायें निम्नांकित हैं–

1. राजाओं की वीरता का वर्णन और प्रशंसा – इस काल में राजप्रमुख निरन्तर युद्धरत रहते थे और विदेशी आक्रमण भी निरन्तर चलते थे। अतः इस युग के साहित्यकारों ने अपने –अपने आश्रयदाता राजाओं के युद्ध कौशल और दानशीलता की बढ़ा चढ़ाकर प्रशंसा की, क्योंकि राजाओं की प्रसन्नता से उन्हें मूल्यवान पुरस्कार मिलते थे लेकिन उन्हें नाराज करना दंड को आमंत्रित करना था।

2. राष्ट्रीय भावना का अभाव –इस युग के साहित्यकार विशेषतः कवि थे। पद्य साहित्य का विकास नहीं हुआ था और ये कवि किसी न किसी राजा अथवा सामंत पर आश्रित थे। उन्होंने सम्पूर्ण राष्ट्र जो अनेक राज्यों का संघ हो, की कल्पना भी नहीं की थी अतः उनके साहित्य में राष्ट्रीय भावना दृष्टिगोचर नहीं होती।

3. सामाजिक चित्रण का अभाव – इस युग के साहित्यकारों ने स्वयं को राजदरबारों तक ही सीमित कर लिया था। जन सामान्य के जीवन या उनकी समस्याओं सौमनस्यता से उनका संबंध टूट गया था, तत्कालीन सामाजिक जीवन का चित्रण इस युग के साहित्य में उपलब्ध नहीं है।

आदिकाल या वीरगाथा काल में काव्य रचनायें दो प्रकार की थी।

Scanned with OKEN Scanner

(अ) प्रबंध काव्य– इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण परमाल रासो (आल्हा ...

भक्तिकाल – विद्वानों के अनुसार हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल सन् 1.. ई. से सन् 1642 ई. तक चला। यह काल मुस्लिम आक्रांताओं का काल था जिसमे गुलामवंश से लेकर खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैयद वंश, लोदी वंश तथा मुगलवंश का प्रारम्भिक काल समाहित था। यह काल राजनैतिक दृष्टिकोण से जनसामान्य के अनुकूल नहीं था। वास्तव में भक्तिकाल का उदय राजनीतिक परिस्थितियों के कारण हुआ था। सर्वप्रथम मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को हराकर दिल्ली पर अधिकार किया था और मुस्लिम शासन की नींव डाली थी।

इस युग में कुछेक उदारपंथी मुस्लिम शासकों को छोड़ दिया जाये तो अधिकतर शासकों का दृष्टिकोण बहुसंख्य आबादी के प्रति कठोरता का था, जजिया कर जैसे कठोर कानून अस्तित्व में आये और जनता के मन में घोर निराशा का भाव था। अधिकार मुस्लिम बादशाह शस्त्रों और सेना की शक्ति पर धर्मप्रचार कर रहे थे और ऐसा कोई हिन्दू शासक नहीं था जिसका बहुत बड़े क्षेत्र पर प्रभाव हो और वह धर्मोन्मादी विदेशियों का सामना कर सके।

फलतः साहित्यकारों ने मानवीय शक्तियों का सहारा छोड़कर दिव्य शक्तियों की आराधना का मार्ग चुना लोगों में यह आस्था थी कि देवता आसुरी शक्तियों से उनकी रक्षा करेंगे, दुर्जन शासकों का दमन करेंगे और उनके परिवार और जान माल की रक्षा करेंगे, साहित्यकारों ने भक्तिपरक रचनाओं द्वारा जनता को ईश्वर की ओर उन्मुख किया।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल को साहित्य का स्वर्णयुग भी कहा जाता है। इस काल के प्रमुख चारों कवियों कबीर, सूर और तुलसी ने धार्मिक और शांतिप्रदायक रचनायें की। कबीर ने जातिप्रथा जैसी संकीर्णतावादी अवधारणाओं पर प्रहार किया और संपूर्ण समाज को एक सूत्र में पिरोया। इस काल के सभी प्रमुख लेखक राज्याश्रय की इच्छा से दूर थे इसलिये उनकी रचनायें स्वांत सुखाय हैं और गेयता के गुण के कारण आज भी जनसामान्य में लोकप्रिय बनी हुई हैं। इस काल के संपूर्ण साहित्य में भारतीय संस्कृति और एकात्मकता के गुण सन्निहित हैं।

रीतिकाल – भक्तिकाल के बाद साहित्य का युग रीतिकालीन युग के नाम से प्रसिद्ध है जो सन् 1643 ईस्वी से 1843 ईस्वी तक चला। इस काल की प्रमुख राजनैतिक घटनायें थीं, मुगल शासनकाल का पतन अंग्रेजी साम्राज्य का उदय एवं सामंत शाही।

मुगलों ने समस्त भारत को एक सूत्र में पिरोया था। परन्तु अकबर का शासनकाल समाप्त होने के बाद से ही वे विलासोन्मुख हो चुके थे। प्रान्तीय क्षेत्रों में भी अकर्मण्यता और प्रसाद का प्राधान्य था, व्यापार के लिये आये अंग्रेज स्थानीय शासकों की उदासीनता का लाभ उठाकर धीरे धीरे प्रशासन में अपनी पकड़ मजबूत कर रहे थे।

Scanned with OKEN Scanner

.कालीन साहित्यकार जो राज्याश्रित थे, अपने आश्रयदाताओं की रुचि के अनुकूल नायिकाओं के नख श्रृख श्रृंगार वर्णन में दत्तचित्त थे। श्रृंगार रस का वृहद वर्णन इस युग के साहित्य की प्रमुख विशेषता है, जो तत्कालीन राजनीतिक परिस्थतियों की ही देन थी।

आधुनिक काल– हिन्दी साहित्य में रीतिकाल के बाद का युग आधुनिक काल के रूप में जाना जाता है जो सन् 1843 से आज पर्यन्त जारी है। इस काल में भारत में लोकतंत्र की स्थापना हुई और राजाओं के असीम अधिकारो पर कड़ा अंकुश लगा। अब बहुमत के आधार पर प्रशासकीय निर्णय होते हैं और यदि जनप्रतिनिधि अमर्यादित या भ्रष्ट आचरण करे तो उसे रक्तहीन उपायों द्वारा बदला भी जा सकता है।

इस युग का साहित्य आज्ञानुरूप नहीं व्यक्तिवादी है और न ही रीतिकालीन श्रृंगारवादी बल्कि उसके जन सामान्य की आशाओं और उपेक्षाओं की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। नागार्जुन, मुक्तिबोध, श्रीलाल शुक्ल सरीखे साहित्यकार निरंतर राजनीति के विशारदों का ध्यान जनसामान्य की दैनिक समस्याओं की ओर खींचते रहे हैं।

यह सत्य है कि राजनीति साहित्य को प्रभावित करती है किन्तु यह भी सत्य है कि साहित्य के पास कहानियाँ बनाने की कला है और जैसा कि चिन्हुआ एचीनी ने कहा था– कहानियाँ एक खतरा है। कहानीकार, कवि, लेखक सदैव से ही निरंकुशतावादियों के विरोध के तरीके ढूढ लेते हैं। खासतौर पर तब जब ऐसा करना क्रियात्मक रूप से जोखिमपूर्ण हो। विगत वर्षों में साहित्य और साहित्यकारों ने ऐसे तरीके ढूढ लिये हैं कि वे बिना स्पष्ट दिये राजनीतिक चेतना को परिवर्तित करते रहते हैं। फ्रांस की राज्यक्रांति पर रूसो के प्रभाव का इतिहास साक्षी है।

संदर्भ

1. John D. Lindberg- The Bulletin of the Rocky Mountain Modern language Association Vo-22 No. 4 (Dec 1968)P.P 163-167
2. Dunning -Political Theories- P-285
3. Olive Senior- The Guaradian- "Literature is Political because we are Political animals" 23/04/2013-P-01
4. Aristole ; Introductory Passage in Politics cited
5. Robin mathews- Literature & Politics -The Canadian Encyclopedia 02/07/2006
6. Olive Senior, ibid P-3

राजनीति विज्ञान विभाग
शासकीय महाविद्यालय मस्तूरी
जिला विलासपुर (छ.ग.)

Scanned with OKEN Scanner

1.3

भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप एवं विकास

संपादक
डॉ. शिव कुमार शर्मा
सहयोगी सम्पादक
डॉ. मनोज अवस्थी, डॉ. सरिता दीक्षित, डॉ. (श्रीमती) राजेश चतुर्वेदी

संकल्प प्रकाशन
कानपुर (उ.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-939871-5-5

पुस्तक का नाम :
भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप एवं विकास

संपादक
डॉ. शिव कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण 2019

मूल्य : 1195/-

प्रकाशक :
संकल्प प्रकाशन
569/14 नई बस्ती बक्तौरी पुरवा, बृहस्पति मन्दिर
नौबस्ता, कानपुर-208 021
दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

शब्द सज्जा :
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक :
साक्षी आफसेट, कानपुर

Bhartiya Rastravad : Swaroop Evam Vikas
Editor : Dr. Shiv Kumar Sharma
Price : One Thousand One Hundred Ninety Five Only.

Scanned with OKEN Scanner

29.

पं.दीनदयाल उपाध्याय का राष्ट्र चिंतन

श्रीमती कांति अंचल

पं. दीनदयाल उपाध्याय एक प्रखर राष्ट्रवादी, चिंतक, विचारक व लेखक थे। उनका मानना था कि समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति का विकास और उन्नयन करने से ही समाज का उत्थान होगा, यही भाव उनके द्वारा प्रणीत एकात्म मानववाद के सिद्धांत में निरूपित है। सन् 1942 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के माध्यम से उन्होंने अपना सार्वजनिक जीवन प्रारंभ किया। वे उत्तम संगठक, साहित्यकार, पत्रकार एवं वक्ता के नाते संघ के कार्य को बल देते रहे।

सन् 1951 में जब श्यामप्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई तभी उनका राजनीति में प्रवेश हुआ। देश की अखण्डता के लिए कश्मीर आंदोलन, गोवा मुक्ति आंदोलन तथा बेरुबाड़ी के हस्तांतरण के विरुद्ध आंदोलन चलाकर उन्होंने भारत की राजनीति में स्वतंत्रता संग्राम के मुद्दों को जीवित रखा। भारत की अखण्डता के लिए उनका पूरा जीवन लगा। देश के लोकतंत्र को सबल विपक्ष की आवश्यकता थी, प्रथम तीन लोकसभा चुनावों के दौरान भारतीय जनसंघ एक ताकतवर विपक्षी दल के रूप में उभरा। वह विपक्ष कालांतर में विकल्प बन सके, इसकी उन्होंने संपूर्ण तैयारी की तथा एकात्म मानववाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं भारतीयकरण का आहवान किया।

पं. दीनदयाल उपाध्याय भारत की भ्रमोत्पादक राजनीति से अप्रभावित रहते हुए अखण्ड भारत के पक्षधर रहे। सन् 1952 से लेकर सन् 1967 तक प्रत्येक घोषणा पत्र में अखण्ड भारत का उल्लेख है। सन् 1971 में दुर्भाग्य से उनकी अनुपस्थिति में चुनाव हुआ तथा घोषणा पत्र में अखण्ड भारत को स्थान नहीं मिला। वे कहते थे कि वास्तव में भारत को अखण्ड करने का मार्ग युद्ध नहीं है। युद्ध से भौगोलिक एकता हो सकती है, राष्ट्रीय एकता नहीं। अखण्डता भौगोलिक ही नहीं, राष्ट्रीय आदर्श भी है।

दीनदयाल जी की सबसे प्रसिद्ध और मौलिक चिंतन के लिए प्रशंसित पुस्तक है– 'एकात्म मानववाद'। इसमे संपूर्ण जीवन की एक रचनात्मक दृष्टि है जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को टुकड़ों में नहीं, समग्रता में देखता है। सुप्रसिद्ध विचारक श्री देवेन्द्र स्वरूप का मानना है कि भारतीय जनता पार्टी के पास विचार और दर्शन के नाम पर जितनी भी पूंजी है उसका स्रोत पं. दीनदयाल उपाध्याय

Scanned with OKEN Scanner

स्वहित की भावनाओं से विरक्त होकर केवल राष्ट्रहित को सर्वोपरि बना लेता है और इसी दिशा में पूर्ण तन्मयता के साथ कार्य करने लगता है। जिससे राष्ट्र स्वतः ही चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाता है।

आवश्यकता केवल प्रत्येक व्यक्ति में इस भावना को पुष्ट करने की है। वर्तमान भौतिकवादी समय में केवल सतत् प्रयास की आवश्यकता है। यह सतत् प्रयास निश्चित ही हमें चरमोत्कर्ष पर पहुँचा देगा। बस यह प्रयास सतत् व उत्साहपूर्वक होना चाहिए। क्योंकि कहा गया है कि –

होकर मायूस ना यूँ, शाम की तरह ढलते रहिए।
जिन्दगी एक भोर है, सूरज की तरह निकलते रहिए।
ठहरोगे एक पाँव पे तो थक जाओगे।
धीरे–धीरे ही सही मगर राह पर चलते रहिए।

शोधकर्ता यहाँ भावी शोधार्थियों के हेतु कुछ विषय चिन्हित कर रहा है। जो निम्नानुसार है–

1. राष्ट्रवाद तथा विकासवाद का तुलनात्मक अध्ययन।
2. राष्ट्रवाद को बल प्रदान करने वाले तत्वों का अध्ययन।
3. मानव निर्माण हेतु सूत्रों का निष्पादन।
4. मूल्यों के विकास हेतु मार्ग प्रशस्त करना।
5. देशभक्ति व साम्यवाद का अध्ययन।
6. राष्ट्रवाद व भाषावाद का तुलनात्मक अध्ययन। इत्यादि

संदर्भ

1. एस. सेठ (1995), मार्क्सिष्ट थ्योरी एण्ड नेशनलिस्ट पॉलटिक्स, सेज, नई दिल्ली।
2. सुनलिनी कुमार (2008), नेशनलिज्म पिर्यसन लोंगमेन, नई दिल्ली।
3. राजीव भार्गव और अशोक आचार्य(सम्पादकीय), पॉलिटिक्स थ्योरी : एन सन इन्ट्रोडक्शन, पिर्यसन लोगमेन, नई दिल्ली।
4. ए. स्मिथ (1994) नेशनलिज्म, अ. रीडर, खण्ड–! आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, प्रेस आक्सफोर्ड।
5. स्मिथ, एन्थोनी (2012) नेशनलिज्म (2–सम्पादकीय) केम्ब्रिज : पॉलिटी

प्राचार्य

श्री वासुदेव वेसिक टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट उम्मेदगढ़,

वासी, जिला मुरैना (म.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय साहित्य में कृष्ण

डॉ. प्रणव शास्त्री

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय साहित्य में कृष्ण

डॉ. प्रणव शास्त्री

देशभारती प्रकाशन
दिल्ली-110093

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-93-81488-57-7

प्रकाशक : [illegible] प्रकाशन
[illegible], गली नं. 7, अशोक नगर,
[illegible], शाहदरा,
दिल्ली 110093
दूरभाष : 9870425842
© : लेखक
प्रथम संस्करण : 2019
मूल्य : ₹ 750/-
आवरण : [illegible] कुमार
शब्द संयोजन : [illegible] कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094
मुद्रक : [illegible] कौशिक प्रिंटर्स, दिल्ली-110093

Bhartiya Sahitya Mein Krishna
[illegible]

शब्द-भोग

ब्रज में सर्वत्र कृष्णानुरागी राधे-राधे कहकर कृष्णप्रिया को रिझाने
प्रयास करते हैं। हम भी यह भाव रखें, तो कैसा रहे?

राधे मेरी स्वामिनी, मैं राधे तेरी दास।
जन्म-जन्म मोहि दीजियो, श्री वृन्दावन वास।।

सच कहूँ, ब्रजवास और ब्रजरज बिना राधारानी की कृपा के संभ
नहीं है। लाड़िली जी अनुकंपा करती हैं तब ही यह जीव वृन्दावन आ
है। कृष्ण की कृपा और राधारानी का दुलार इस लोक में बड़ा दुर्लभ है
अन्तरराष्ट्रीय शोध-संगोष्ठी की कल्पना, मूर्तरूप तथा सुखद परिणति राध
के प्रेम का प्रसाद ही तो है। उन्होंने ही प्रेरणा प्रदान की। उन्होंने ही यें
बनायी। वे ही इसे पूर्ण कर रहे हैं। **त्वदीयं वस्तु गोविन्द, तुभ
समर्पयेत्** । हे नाथ! हम सब इस ग्रन्थ के रूप में आपको अपना 'शब्द-
अर्पित कर रहे हैं। स्वीकार कर उपकृत कीजिए। जब संगोष्ठी की रचना
तब सहचर भी मिलते चले गए। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, उ.प्र.
संस्थान, संस्कार भारती, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, विश्व हिन्दी
आचार्य पं. नरोत्तमलाल सेवा संस्थान, अन्तरराष्ट्रीय साहित्य कला
इस्कॉन, रस भारती संस्थान, वृन्दावन शोध संस्थान ने अकादमिक, अ
संबल देकर इस योजना को सफल बनाया। सभी शोधपत्र लेखकों ने
पर उत्कृष्ट प्रपत्र भेजकर इस भोग को तैयार करने में सहायता की,
प्रति आभार। इस ग्रन्थ में जो प्रीतिकर लगा, वह सहृदय मित्रों का है
न्यूनताएँ भी रह गयी हैं, वह मेरी अल्पज्ञता है। इसमें सारा प्रयास
प्रेमियों का है; मैंने तो केवल तुलसीदल डालकर कृष्णार्पण किया है।
राधे-राधे।

10 अक्टूबर, 2019
वृन्दावन

डॉ. प्रणव [illegible]

13. [illegible] में श्रीकृष्ण का स्वरूप-विकास 66
[illegible]
14. [illegible] भारतीय समाज में नारी की [illegible] 69
डॉ. [illegible]
[illegible]
15. [illegible] 74
डॉ. पूर्णिमा आर
16. शिक्षा, साहित्य और प्रकृति 77
डॉ. अरुण कुमार चतुर्वेदी
17. बांग्ला के आदि कवि चंडीदास एवं उनका 'श्री कृष्ण कीर्तन' 83
मुकेश यादव
18. भक्तिकाल के परवर्ती कवि और कृष्ण भक्ति काव्य धारा 85
डॉ. वनिता बाजपेयी
19. भोजपुरी लोकगीतों के कृष्ण 88
श्रीमती मीरा मुंडा
20. आधुनिक गीत में लोक तत्व 92
डॉ. सुमिता सिंह
21. साहित्य द्वारा पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता, पर्यावरण संरक्षण की समस्या एवं संरक्षण के उपाय 98
डॉ. राजेश कुमार
22. हिन्दी साहित्य में पर्यावरण 102
श्रीमती मीतू बरसैंया
23. साहित्य और प्रकृति (भारतेन्दु युगीन काव्य में प्रकृति प्रेम) 104
डॉ. निशा गोयल
24. भारतीय धर्म ग्रंथों में मानवाधिकार 107
डॉ. श्रीमती दुर्गा बाजपेयी
डॉ. श्रीमती शारदा दुबे
25. साहित्य में मानवाधिकार और प्रकृति 111
डॉ. रेखा शर्मा

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय धर्म ग्रंथों में मानवाधिकार

डॉ. श्रीमती दुर्गा बाजपेयी
विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र
शासकीय पातालेश्वर महाविद्यालय मस्तूरी
जिला – बिलासपुर छ.ग.
डॉ. श्रीमती शारदा दुबे
विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र
शासकीय बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिलासपुर छ.ग.

सामान्य जन की धारणा है कि मानवाधिकारो का स्त्रोत सन 1215 के मग्नाकार्टा तथा अमेरिका की स्वतंत्रता की घोशणा जो सन 1776 में हुई थी, से संबंधित है। मानवीय स्वतंत्रताओं के संरक्षण की कटिबद्धता घोषित करते हुए अमेरिका का संविधान सन् 1789 में बना था। संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्माण के पष्चात् मानव अधिकारो की सामूहिक घोषणाएं 1949 में हुई थी। ये सब मानवाधिकारों के स्त्रोत माने जाते है।

भारत में मानवाधिकारों के स्त्रोत पुरातन काल से वेदों तथा धर्मग्रंथो से प्राप्त होते है। भारत में ऋषि मुनि विश्व नागरिक की कल्पना करते थे इसलिए वेदों में " विश्व मानुष" शब्द का प्रयोग हुआ है। उनकी दृष्टि विशाल थी। समस्त मानव जाति को एकता के सूत्र में बांधकर एक दूसरे के साथ प्रेम सौहार्द तथा शांतिपूर्ण जीवन के लिए प्रार्थना वेदों की ऋचाओं में मिलती है। भारतीय वैदिक संस्कृति में मानव अधिकार की अवधारणा मानव को प्रकृति का ही अंष मानकर उसे प्रकृति के अन्य जीवधारियों तथा विभिन्न वनस्पतियों से तादाम्य स्थापित कर सहयोग से रहने के ऋषियों के संदेश तथा उपदेश "ऋचाओं" के रूप में संकलित है।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे

सभी जीव जन्तुओं के प्रति मित्रवत् भाव रखे।

मानव सेवा की माधव सेवा है" यह उदघोष तो भारतीय संस्कृति एवं

Scanned with OKEN Scanner

मनीशी सदैव से करते रहे है। विश्व कल्याण एवं मानव मे प्रेम भाव का संचार करने के लिए वेद द्वारा यह उद्घोष किया गया :–

ऊँ समदारसृद्ध भवतु देव ।। अथर्व

हे देव।हममे आपसी फूट न हो।।

ऊँ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

हे देव! सभी दिशाओं से शुभ एवं सुन्दर विचार प्राप्त हो।

भारतीय राजा धर्म पालन के द्वारा मानवी अधिकारों की सुरक्षा किया करते थे इसलिए कहा गया है कि मनु 8/15

धर्म एवं हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।

राजा न्यायपूर्वक दण्ड का प्रयोग करते हुए प्रजा के सुख–समृद्धि एवं अधिकारो की सुरक्षा हेतु राज्य व्यवस्था को चलाने वाला सर्वोच्च अधिकारी होता है।

कौटिल्य के द्वारा न्यायाधीशों के लिए व्यवस्था किया गया था। कि न्यायाधीशों को न्याय के क्षेत्र मे छल–कपट का त्याग करना चाहिए। न्यायाधीश को लोकप्रिय एवं सबका विश्वास पात्र होना चाहिए। वादी प्रतिवादी एवं साक्षी के प्रति उनका व्यवहार शिष्ट होना चाहिए। यदि कोई न्यायाधीश रिश्वत लेता है या अभद्र व्यवहार करता है तो उस न्यायाधीश को पद से पृथक कर दण्डित किया जाये, ये सभी बाते– मानवीय अधिकारों को सुनिश्चित करने से ही संबधित है। ताकि किसी भी व्यक्ति के अधिकारो का हनन न हो।

अधिकार की रक्षा हमारी संस्कृति का अहम हिस्सा है। मानव अधिकार आयोग ने शोषित पीड़ित वर्ग के उत्थान में एक अहम भूमिका निभाई है।

यदि हम इस बात पर चिन्तन करे कि प्राचीन भारत में मानवाधिकार किस रूप मे थे तो हम पाते है कि मानवाधिकारों के संरक्षण का मूल भारत में वैदिक काल के धर्म में पाया जाता हैं ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामय'' अर्थात सब के सुख की कामना की गई है।

कृष्ण एक महान उदात्त पुरुष है महाभारत युद्ध को रोकने के लिए उन्होने पूरा प्रयास किया। वे युद्ध की भयंकरता से पूर्ण परिचित थे। इसलिए वे स्वयं दूत बनकर दुर्योधन को बार–बार समझाते है, कि युद्ध से कभी कल्याण नही होता न धर्म की सिद्धि होती है, न अर्थ की प्राप्ति होती है। यह भी आवश्यक नही कि कि युद्ध मे विजय की प्राप्ति हो।

न युद्धे तात् कल्याणं, न धर्मार्थौ कुतः सुखम ।

न चापि विजयो नित्यं न युद्धे तात अविश्व ।। उद्योग पर्व 129/40

हर प्रकार के भेद–भाव को मिटाना प्रताड़ना और क्रूरता को प्रतिबंधित करना ही मानवाधिकारों के अन्तर्गत समाहित है। इतना ही नही निर्बल, जन स्त्री और बच्चों की सुरक्षा को सुनिश्चित करना ही एक प्राकृतिक विचारणा है।

संबंधित सूत्र मत्स्य पुराण और महाभारत में निहित है।

कृपाणानाथ वृद्धानां विधवानांच – योशिताम्।

योगक्षेमं च वृत्ति च तथैव परिकल्पयेत ।।

मत्स्य पुराण– 215/64

महाकवि कालिदास ने अधिकार और कर्तव्य को एक दूसरे का पूरक बताया है। यदि हमारा अधिकार यह है कि हमे सामाजिक सुरक्षा मिले तो हमारा यह भी कर्तव्य है कि हम किसी अन्य की सामाजिक सुरक्षा में बाधक नही बल्कि साधक बने

आत्मनः प्रतिकूलानि परेशां न समाचरेत्

में हमारे भारतीय धर्मग्रंथों न में केवल न्याय और मानव मूल्यों की बात कही गयी है। अपितु प्राणी मात्र के कल्याण की कामना की गई है।

'' वसुधैव कुटुम्बकम'' अ नो भद्राः क्रतवो यन्तु

विश्वतः माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्या

ये अमर वाक्य इसी व्यापकता की ओर संकेत करते है।

मानवीय अधिकारों का संरक्षण के लिए धर्म एवं राजनीति का उत्तम ढंग से समन्वय किया गया है। धर्म ग्रंथों में राजधर्म शब्द का प्रयोग किया गया है न कि शासन व्यवस्था का राज्य का उद्देश्य मानवीय अधिकारों की सुरक्षा करना था। इसलिए राजा को देवता माना जाता था। और राजा की नीति की देव नीति कहा जाता था। राजा प्रजा के अधिकारों की रक्षा हेतु धर्म एवं नीति के मार्ग पर चलते थे।

राजा के संबंध में मनुस्मृति में कहा गया है। 7/4 एवं 7/7 //

इन्द्राणिन ल कर्णाम् अग्नेष्य वरूणपच्यय

चन्द्रवित्तेष्यो श्चैन मात्रा निर्हत्य शास्वती।

सोअग्नि भवति वायुष्च सोअर्क।

सोमः स धर्मराष्टः सकुबेर : स वरूण स महेन्द प्रभावतः ।।

विश्व को किसी भी स्थल पर निवास करने वाले सर्वजनों की उन्नति एवं सुरक्षा जब तक न हो तब तक विश्व की उन्नति नही होती। इसलिए भारतीय धर्मग्रंथो में भातृत्व व्यवहार को प्रमुखता से मान्यता दिया गया।

एकदा धर्नुमैत्रीषरः साभ्यं त अलक्षणमुच्यतं।

Scanned with OKEN Scanner

कर्मयोगेंन वेदव्यं प्रेमानंद मयो भवेत ।।

महाभारत काल में कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था विघमान थी। एक दूसरे के बिना किसी ईर्ष्या द्वेष के सब अपने कार्यो में सन्नद्ध रहते थे। इसलिए किसी भी व्यक्ति के अधिकारों के हनन का कोई प्रश्न ही नही था।

विश्व में भारतीय वैदिक धर्म ग्रंथ ही है। जो यह उपदेश देता है कि:–

मनुर्भव जनपा देव्यं जनम ऋग्वेद।।

हे मनुष्य! त्वमन्यत किमर्पि न भूत्वा मनुर्भव यतोहि मनुष्य,
यदि तु वसुधंव ते कुटुम्बकम भविष्यति ।

अर्थात वेद विश्व में मनुष्य को एक जाति मानता है। और वह है मनुष्य जाति। मानवता की रक्षा करना ही जहाँ का मूल उद्देश्य है वहां मानवाधिकर के संरक्षण की बात अप्रासंगिक है।

संदर्भ

1. छत्तीसगढ़ में मानव अधिकार संपादक डॉ. अंबिका प्रसाद वर्मा , महामाया प्रिंटर्स जांजगीर।

   अ. उद्धृत – चन्द्रशेखर सिंह – भारतीय धर्मग्रथों में मानवाधिकार। ,

   ब. उद्धृत – डॉ. उमाकांत मिश्रा, भारतीय धर्म ग्रंथों में मानवाधिकार।

   स. उद्धृत – डॉ. अरुणिमा – भारतीय धर्म ग्रंथों में मानवाधिकार।
2. मानवाधिकार और कर्तव्य – लेखक प्रकाष नारायण नाटाणी – आविष्कार पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स जयपुर – 302003 (राजस्थान)।
3. मानव अधिकारों का विश्वव्यापी घोषणा पत्र – डॉ. कमलेष मिश्र एवं डॉ. विवेक मिश्र यू.जी.सी. एकेडमिक स्टाफ कॉलेज , रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर ।
4. नेट द्वारा :– उद्धृत आशीष श्रीवास्तव , अतिथि प्राध्यापक शासकीय विधि महाविद्यालय इन्दौर।

Scanned with OKEN Scanner

15

गाँधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

Relevance of Gandhian Thoughts in Present Scenario

सम्पादक

डॉ. (श्रीमती) अंजू शुक्ला

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-944964-2-7

पुस्तक का नाम :

गांधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

संपादक

डॉ० (श्रीमती) अंजू शुक्ला

© प्रकाशक

प्रकाशक :

संकल्प प्रकाशन

1369/14 नई बस्ती बकतौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर

नौबस्ता, कानपुर-208 021

दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872

Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

शब्द सज्जा :

रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक :

[illegible]

प्रथम संस्करण 2020

मूल्य : 795/-

Relevance of Gandhian Thoughts in Present Scenario

अनुक्रम

1. समाज कल्याण के आधार पर गाँधीवादी विचार 15
डॉ. (श्रीमती) अंजू शुक्ला
2. वर्तमान में महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता 21
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद
3. गाँधी युग में महिलाओं की स्थिति 24
डॉ. जयश्री शुक्ल
4. गाँधी दर्शन 29
डॉ. नागलगिद्दे मारुति
5. गाँधीजी का अहिंसा दर्शन 32
डॉ. (सुश्री) भावना कमाने
6. भारतीय समाज व्यवस्था और गाँधी 36
डॉ. सपना कौर
7. भारतीय राजनीति और गाँधी 41
डॉ. (श्रीमती) सुजाता सेमुएल
8. गाँधीजी के सामाजिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता 46
शिखा श्रीवास्तव
9. गाँधीवाद और हिंदी कविता 49
डॉ. (श्रीमती) गायत्री बाजपेयी, डॉ. अश्वनी कुमार बाजपेयी
10. गाँधीजी के विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता 51
राहुल श्रीवास्तव
11. गाँधीजी के विचारों के विभिन्न आयाम 58
डॉ.(श्रीमती) दुर्गा बाजपेयी, डॉ.(श्रीमती) शारदा दुबे
12. भारतीय राजनीति, इतिहास और गाँधीवाद 63
प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, डॉ. जैनेन्द्र कुमार पटेल
13. भारतीय समाज व्यवस्था और गाँधी 68
प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, डॉ. बी. जॉन, रवि प्रकाश चौधरी
14. वर्तमान शिक्षा की चुनौतियाँ एवं गाँधी 74
डॉ. स्नेहलता निर्मलकर, अमर सिंह ठाकुर
15. गाँधीजी के विचारों के विभिन्न आयाम 80
डॉ. स्नेहलता निर्मलकर, चन्द्रिका चौधरी

Scanned with OKEN Scanner

11

गाँधीजी के विचारों के विभिन्न आयाम

*डॉ.(श्रीमती) दुर्गा बाजपेयी
**डॉ.(श्रीमती) शारदा दुबे

बीसवीं सदी को जिस अनोखे महापुरुष ने सब से अधिक प्रभावित किया, वह महात्मा गाँधी आज धरती पर नहीं है। उनका संदेश न केवल भारत बल्कि सारे संसार को अनुप्रमाणित कर रहा है। सत्य अहिंसा और सुराज के आजीवन पुजारी के रूप में उन्होनें देश को सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

आज सम्पूर्ण विश्व में यदि हम मानवता को नष्ट होने से बचाना चाहते है तो गाँधी जी के सत्य और अहिंसा से ही संभव है। वर्तमान में भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिकता ने जिस तरह से सम्पूर्ण देश को अपने शिकंजे में कसकर रख लिया है। गाँधी जी की प्रासंगिता अतिआवश्यक है। आज गाँधी जी का सादा जीवन, सेवा भाव तथा गरीबों के लिए कुछ कर गुजरने की भावना ही देश को सही राह दिखा सकती है। वे सम्पूर्ण समाज के सुख एवं विकास की बात करते थे। सर्वोदय, ट्रस्टीशिप, दरिद्रनारायण की पूजा, सत्य, अहिंसा तथा राजनीति का आध्यात्मीकरण, कर ऐसा आदर्श अपनाया जिससे नैतिक, आर्थिक दोनो प्रकार की दरिद्रता को दूर किया जा सके।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गाँधी जी के सामाजिक दर्शन को अनदेखा करना हमारे हित में नही है। गाँधी जी ने समाज के लोगो को एक नैतिक आधार प्रदान कर उनके आत्मविश्वास को जगाया है, और आत्मनिर्भर बनाया है। भाग्य के भरोसे न बैठकर, सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक, सभी क्षेत्रों में क्रांति की। उन्होंने स्त्रियों में आत्मचेतना को जागृत किया और सामाजिक कुरीतियों के विनाश के लिए प्रयासरत रहें। पीड़ितो तथा किसानों के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहें। वे गृह उद्योगो के विकास के पक्ष में थे, साथ ही उन्होंने अनेक देशी कलाओं को पुनर्जीवन दिया, साथ ही साथ वे शिक्षा के द्वारा बालक को वर्तमान समय में तैयार कर समाजोपयोगी बनाने के पक्ष में थे।

मूल्यों और सिद्धांतों के लिए समर्पित गाँधी जी के दर्शन प्रकाश स्तम्भ [illegible] बिखरती हुई परिस्थितियों को सवारने में प्रयासरत है आवश्यकता इस

बात की है कि उनके दर्शन तथा विचारों को वर्तमान पीढ़ी तक पहुँचाए [illegible] उनके दर्शन के विभिन्न आयाम :

धार्मिक चिंतन – धर्म के संबंध में गाँधी जी ने कहा था और अपने अखबार में लिखा भी था कि मैं अपने पीछे कोई फिरका, पंथ या संप्रदाय नही छोड़ जाना चाहता हूँ। सनातनी हिन्दू हैं, इसमें मुझे संतोष है। आत्मोन्नति में मेरा धर्म कही भी बाधा नही डालता । मैं सब धर्मो से अच्छी – अच्छी चीजे ले सकता हूँ। सब धर्म के लोगो को इजाजत है कि मेरे धर्म में से, , अथवा कही से भी, जो अच्छी चीज मिले ले सकते है।

धर्म के तत्व सनातन है। उनको स्वीकार करने का अर्थ है, उनका पालन करना हिन्दू धर्म ने अगर कोई बुरी चीज बनाई हो अथवा हमारी कोई बुरी चीज धर्म में घुसी हुई हो तो उसका हम त्याग करेगें। दूसरे धर्म की अच्छी चीजों को लेकर हम अपनी धार्मिक परम्परा को समृद्ध बनायेंगे। जब सब धर्मो के लोगों को एक परिवार , एक राष्ट्र बनकर रहना है और सामाजिक भाईचारा बढ़ाना है तो हमे एक दूसरे की भावनाओं का ख्याल करना ही चाहिए। औरों को जो चीज अखरती है अगर उसे हम छोड़ सकते है तो छोड़ना चाहिए और दूसरो को जो चीज अहम याने महत्त्व की लगती है, वह अगर हमे अखरती है तो हमे उसे बरदाश्त करना चाहिए । एक दूसरे के प्रति प्रेम और आत्मीयता बढ़ने पर बीच का रास्ता निकल ही आता है तब तक संतोष रखना ही हमारा धर्म होना है। इसी को कहते है समन्वय। समन्वय एक बाध्यता नही है। समन्वय जानता है कि दुनिया में विविधता रहेगी ही । दुनिया के सब लोग हम राय नही हो सकते। मतभेद बरदाश्त करके ही हम साथ रहेंगे और मानवता का विकास करेंगें।

दुनिया के लोगो में जिज्ञासा और तर्कबुद्धि बढ़ी है। सब लोग धर्मो को समझना चाहते है। अगर धर्मो में कोई सत्य रहा तो उसका स्वीकार होगा ही। सब के सब धर्म जो पहले अखाड़े में उतरकर आपस में लड़ रहे थे अब भट्टी में उतरे है। जो चीज कचरे के जैसे होगी, जलकर खाक होगी, जो सच्चा सोना होगा, वह टिकेगा ही।

सामाजिक चिन्तन – जाति प्रथा, छुआछूत , नारी शोषण , जैसे समस्याओं से भारत का जनमानस आज भी मुक्त नही हो पा रहा है। परदा प्रथा, विधवाओं की दुर्दशा, नशाखोरी , साम्प्रदायिकता जैसी अनेक सामाजिक बुराईयों के सुधार हेतु उन्होंने संघर्ष किया।

गाँधी जी के सत्य , अहिंसा ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह शरीर श्रम, स्वदेशी के साथ–साथ सभी धर्मो के प्रति समन्वय और सर्वोदय के सिद्धांत महत्वपूर्ण है उनका मानना है कि सम्पूर्ण संसार उनका घर और समग्र मानव जाति उनका

Scanned with OKEN Scanner

परिवार है। उनकी आवश्यकता थी कि कि "[illegible] भारत के गरीब से गरीब लोग भी यह महसूस कर कि यह [illegible] देश है। और उनके निर्माण में उनकी आवाज का महत्व है।"

[illegible] सुधारक और विचारक के रूप में उनका योगदान अनुपम है। भारतीय समाज के संपूर्ण विकास के लिए उन्होंने व्यक्तिगत उत्थान विशेष रूप से आत्मिक उत्थान पर बल दिया।

आर्थिक चिन्तन – गाँधीजी का शुरू से ही यह प्रयास था कि धन एवं सम्पत्ति के असमान वितरण को रोका जाये। वे समाज में आर्थिक समानता की स्थापना करना चाहते थे। वे जिस आदर्श आर्थिक संगठन की बात करते है वह यह है कि किसी भी व्यक्ति को भोजन और वस्त्र का अभाव न हो। खाद्यान्न आत्मनिर्भरता के प्राप्ति के लिए बड़ी मात्रा में अच्छे कृषि आदानों का प्रयोग भू-सुधारों का प्रयोग काश्तकारी प्रणाली में परिवर्तन, भू-स्वामित्व अधिकारों का उन्मूलन, खेतों की चकबन्दी, सहकारी समितियों का गठन, महाजन व्यवस्था को समाप्त कर, किसानो को अधिक मात्रा में ऋण सुविधाये प्रदान करनी होगी यह विचार वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है।

उन्होंने आर्थिक विकेन्द्रीकरण अर्थात विशाल पैमाने के उद्योगो के स्थान पर लघु कुटीर उद्योगो की स्थापना पर बल दिया। गाँधीजी ने अपने आर्थिक विचारों में अस्तेय एवं अपरिग्रह का नैतिक सिद्धांतो के रूप में प्रतिपादन किया।

गाँधी जी पेशेवर अर्थशास्त्री नही थे, पर इस विषय में भी उनके विचार क्रांतिकारी थे। वे कहते थे कि जरूरत से अधिक संग्रह करने का अर्थ है– चोरी। उनके मतानुसार अर्थशास्त्र एक नैतिक विज्ञान है– इंसान की कमाई का मकसद केवल सांसारिक सुख पाना ही नही, बल्कि अपना नैतिक और आत्मिक विकास करना है। इसलिए वे त्यागमय उपभोग के समर्थक थे।

भारत की ग्रामीण संस्कृति को पहचानकर उन्होने चरखा करघा और अनेक कुटीर उद्योगों के विकास हेतु रचनात्मक प्रयास किये। आर्थिक समानता और पूंजीपतियों की भोगवादी महत्त्वाकांक्षाओं पर अंकुश के लिए उन्होनें ट्रस्टीशिप का विचार प्रस्तुत किया कि पूंजीपतियों संपत्ति का ट्रस्टी या संरक्षक मात्र है। अतः गाँधी जी का आर्थिक चिन्तन नैतिकता पर आधारित समाजवाद अर्थात राम राज्य है।

नये विचारों के बारे में गाँधी जी ने कहा था "मैं नये विचारों को कदापि नही रोकना चाहता पर मैं उनका गुलाम भी नहीं बनना चाहता।"

शैक्षिक चिन्तन – प्रचलित शिक्षा प्रणाली लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति [illegible]आधारित थी। जिसका मुख्य उद्देश्य ऐसे मानव तैयार करना था जो रंग से [illegible] हो किन्तु विचार धारा में पूर्णतः अंग्रेज हो।

गाँधी जी की शिक्षा का महत्वपूर्ण [illegible] बुनियादी शिक्षा; श्रम व दस्तकारी पर [illegible]

उन्होंने लिखा था "मैं जो [illegible] प्रशिक्षण अलग नहीं है। इसमें व्यावहारिक [illegible] स्कूल में अधिकांश समय में दिया जाएगा। उनको सफाई और [illegible] विज्ञान की व्यावहारिक शिक्षा दी जाएगी। जब इतना सब सीख जाएंगे तब अपने घर में भी इस शिक्षा का उपयोग करेंगे और मौन क्रांतिकारी बन जाएंगे।"

गाँधी जी के शिक्षा संबंधी सिद्धांत के अन्तर्गत अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा, शिक्षा सत्य और अहिंसा पर आधारित हो। विद्यालय और वातावरण का घनिष्ठ संबंध हो।

श्रम केन्द्रित शिक्षा, उद्योग केन्द्रित शिक्षा का माध्यम मातृभाषा, दस्तकार केन्द्रित शिक्षा, क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम, कृषि, बागवानी, कताई, बुनाई, काष्ठ कला आदि आते है।

गाँधी जी ने कहा था– "मैंने आज तक हिन्दुस्तान का बहुत सी चीजे दी है उन सब में शिक्षा की यह योजना और पद्धति सबसे बड़ी चीज है और मैं यह नहीं मानता इससे अच्छी चीज मैं इस देश को दे सकूंगा"

शिक्षा से उनका मतलब केवल अक्षर ज्ञान अथवा परीक्षा पास करना नहीं था। उसे वह चरित्र निर्माण का साधन मानते थे। शिक्षक का अक्षर ज्ञान भले ही अल्प हो पर उसका चरित्र दृढ होना चाहिए। सच्चरित्र अध्यापकों के हाथ में ही देश के बच्चे दिये जा सकते है। शिक्षा में शरीर श्रम का विशेष स्थान था। चार घंटे पुस्तकीय ज्ञान तथा चार घंटे शरीर श्रम। जिससे विद्यार्थी और शिक्षक के मन में श्रम की प्रतिष्ठा बनी रहे। हाथ से काम करने में अपने को छोटा न समझे। बच्चों में स्वाभिमान और मेहनत के प्रति आस्था जागृत हो।

हमे गाँधी दर्शन के समयानुकूल दर्शन का सदुपयोग करने का संकल्प लेना चाहिए। आज हमे अन्धानुकरण के संकीर्ण मार्ग से हटकर इस दिशा में विचार करने की आवश्यकता है, ताकि हम गाँधी जी के सपनों को साकार कर सकें।

यद्यपि स्वतंत्रता और लोकतंत्र के इतने वर्षों में हम बहुतेरे सामाजिक, राजनैतिक झंझावात झेल चुके है। पुरानी परिभाषाएँ और मुहावरे बहुत कुछ बदल चुके है। किन्तु गाँधी दर्शन आज भी भारतीय समाजोन्नति और विश्व शांति का शुभ संदेश दे रहा है।

संदर्भ:

1. मैं गाँधी बोल रहा हूँ – गिरिराज शरण अग्रवाल [illegible] संस्करण [illegible]

Scanned with OKEN Scanner

गांधी – व्यक्तित्व , विचार और प्रभाव प्रकाशक – गाँधी स्मारक निधि तथा सस्ता साहित्य मंडल दिल्ली – 1966 ।

कृतिका – ISSN:0974-0002
जनवरी– जून 2017 संपादक डॉ. बीरेन्द्र सिंह यादव ,उद्धृत डॉ. आशुतोष पाण्डेय ।

कृतिका – ISSN:0974-0002
जनवरी– जून 2017 संपादक डॉ. बीरेन्द्र सिंह यादव, उद्धृत डॉ. अल्का मिश्रा, दीपाली गुप्ता ।

5. कृतिका – ISSN:0974-0002
जनवरी दिसम्बर 2014 उद्धृत डॉ. रश्मि सोमवंशी। संपादक डॉ. बीरेन्द्र सिंह यादव।

6. कृतिका ISSN:0974-0002
जनवरी दिसम्बर 2015 संपादक डॉ. बीरेन्द्र सिंह यादव उद्धृत आलोक कुमार ।

7. महात्मा गाँधी – प्रथम दर्शन प्रथम अनुभूति शंकरदयाल सिंह प्रभात प्रकाशन दिल्ली 2012।

*सहायक प्रध्यापक (समाजशास्त्र विभाग)
शासकीय महाविद्यालय, मस्तूरी
जिला–बिलासपुर (छ.ग.)

**सहायक प्रध्यापक (समाजशास्त्र विभाग)
शासकीय बिलासा कन्या स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बिलासपुर
जिला–बिलासपुर (छ.ग.)

■■

Scanned with OKEN Scanner

गाँधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

Relevance of Gandhian Thoughts in Present Scenario

सम्पादक

डॉ. (श्रीमती) अंजू शुक्ला

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

1. समाज कल्याण के आधार पर गाँधीवादी विचार — 15
डॉ. (श्रीमती) अंजू शुक्ला

2. वर्तमान में महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता — 21
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद

3. गाँधी युग में महिलाओं की स्थिति — 24
डॉ. जयश्री शुक्ल

4. गाँधी दर्शन — 29
डॉ. नागलगिद्दे मारुति

5. गाँधीजी का अहिंसा दर्शन — 32
डॉ. (सुश्री) भावना कमाने

6. भारतीय समाज व्यवस्था और गाँधी — 36
डॉ. सपना कौर

7. भारतीय राजनीति और गाँधी — 41
डॉ. (श्रीमती) सुजाता सेमुएल

8. गाँधीजी के सामाजिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता — 46
शिखा श्रीवास्तव

9. गाँधीवाद और हिंदी कविता — 49
डॉ. (श्रीमती) गायत्री बाजपेयी, डॉ. अश्वनी कुमार बाजपेयी

10. गाँधीजी के विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता — 51
राहुल श्रीवास्तव

11. गाँधीजी के विचारों के विभिन्न आयाम — 58
डॉ.(श्रीमती) दुर्गा बाजपेयी, डॉ.(श्रीमती) शारदा दुबे

12. भारतीय राजनीति, इतिहास और गाँधीवाद — 63
प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, डॉ. जैनेन्द्र कुमार पटेल

13. भारतीय समाज व्यवस्था और गाँधी — 68
प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, डॉ. बी. जॉन, रवि प्रकाश चौधरी

14. वर्तमान शिक्षा की चुनौतियाँ एवं गाँधी — 74
डॉ. स्नेहलता निर्मलकर, अमर सिंह ठाकुर

15. गाँधीजी के विचारों के विभिन्न आयाम — 80
डॉ. स्नेहलता निर्मलकर, चन्द्रिका चौधरी

Scanned with OKEN Scanner

7

भारतीय राजनीति और गाँधी

डॉ.(श्रीमती) सुजाता सेमुएल

किसी भी राष्ट्र चाहे वह विकसित हो या विकासशील की राजनीति दो बातों को निर्धारित करती है तथा उन तत्वो से निर्धारित भी होती है :-

इस देश के जनसामान्य का राजनीतिक व्यवस्था के साथ किस प्रकार का संबंध है।

अन्य संप्रभु राष्ट्रों के साथ उस राष्ट्र के कैसे संबंध है।

किसी भी राष्ट्र की राजनीति चाहे वह आंतरिक क्षेत्र में हो चाहे बाह्य क्षेत्र में अनेकानेक तत्वों से प्रभावित होती है जैसे भौगोलिक दशाएं, पर्यावरण, आर्थिक परिस्थितियां अभिसमय आदि और इन तत्वों में व्यक्तिगत अभिप्रेरणा अथवा विचारधारा भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

भारत एक अत्यंत वृहद् देश है जिसका इतिहास और परंपराएं अत्यंत प्राचीन है। मानव सभ्यता के प्रारंभिक दौर में 'विश्वगुरू' का स्थान रखनेवाले भारत की यह गौरवपूर्ण उपलब्धि रही है कि यह अनेक महान चिंतकों, दार्शनिकों और आध्यात्मिक नेताओं की कर्मस्थली रही है। इन महान विभूतियों ने न सिर्फ भारतीय राजनीति की दशा और दिशा को प्रभावित किया है, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के समक्ष व्यवहारिक आदर्श प्रस्तुत किये है, जिन पर चलना कठिन तो है परन्तु असंभव नहीं, और जो संपूर्ण मानवजाति हेतु कल्याणकारी हैं।

मात्र भारत ही नहीं, जब हम संपूर्ण विश्व के परिप्रेक्ष्य में ऐसे राजनीतियों और चिंतकों का विचार करते है, जिन्होने आधुनिक विश्व और राष्ट्रीय राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है, तो हमारे सामने भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का नाम प्रमुखता से उपस्थित होता है, जिन्होने अपना संपूर्ण जीवन अन्याय, मानवों के मध्य असमानतापूर्ण व्यवहार, उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और प्रकृति के अंधाधुंध दोहन के विरूद्ध संघर्ष करने लगा दिया।

प्रस्तुत शोधपत्र में राष्ट्रपिता के कुछ महत्वपूर्ण विचार को लेकर यह जानने का प्रयास किया गया है कि वे वर्तमान संदर्भों में कितने समीचीन है और वर्तमान भारतीय राजनीति पर उनका क्या प्रभाव है।

जब हम आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महात्मा गाँधी और भारतीय राजनीति के परस्पर संबंधों का अवलोकन करते है, तो यह तथ्य उभरकर आता है कि महात्मा

Scanned with OKEN Scanner

के दर्शन में राजनीति का पृथक से समावेश नहीं था। उन्होंने राज्य की कल्पना प्लेटो और अरस्तू की तरह नहीं की थी बल्कि भारत की प्राचीन परम्पराओं से प्रेरित अपने आदर्शों को उन्होंने समसामयिक राजनीति और अपने जीवन में लागू करने का प्रयास किया, राजनीति में शुचिता और आध्यात्मिकता को स्थान देने का प्रयास किया और इस दौरान अपनी सफलताओं और असफलताओं को समभाव से स्वीकार किया, जैसा कि उन्होंने समझाया है– "गाँधीवाद जैसी कोई चीज नहीं है, और मैं अपने बाद किसी भी संप्रदाय को नहीं छोड़ना चाहता। मैं किसी भी नये सिद्धांत या सिद्धांत की उत्पत्ति का दावा नहीं करता। मैंने बस अपने तरीके से हमारे लिये शाश्वत सत्य को लागू करने की कोशिश की है। जो राय मैंने बनाई है और जिन निष्कर्षों पर मैं पहुंचा हूं, वे अंतिम नहीं हैं। मैं उन्हें कल बदल सकता हूं। मेरे पास दुनिया को सिखाने के लिए कुछ नया नहीं है। सत्य और अहिंसा पहाड़ों की तरह पुराने हैं।"[1]

महात्मा गाँधी का राजनीतिक दर्शन मुख्यतः इस विचारधारा पर केंद्रित था कि – 'हमें हर आंख से आंसू पोंछने हैं'।[2] उनकी विचारधारा के अनुसार आदर्श राज्य व्यवस्था के तत्व थे –

(i) ग्राम स्वराज :– भारत गांवों का देश है, और महात्मा गाँधी इसे ऐसा ही बनाए रखने के पक्षधर थे। उनके आदर्श ग्राम में यह क्षमता होती कि वह अपनी अधिकांश आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयमेव कर सकता था अर्थात् प्रत्येक ग्राम स्वंय में एक आत्मनिर्भर ईकाई के रूप में संगठित होता, जिसके कुटीर उद्योगों पर आश्रित होने के कारण बेरोजगारी की समस्या न होती, श्रम आधारित अर्थव्यवस्था होने के कारण लोगों का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम होता और अलग–अलग जाति, संप्रदाय के लोग एक दूसरे पर आर्थिक रूप से आश्रित होने के कारण शांति और सद्भाव से जीवन बिताते।

(ii) विकेंद्रीकृत व्यवस्था – महात्मा गाँधी विकेंद्रीकृत शासन व्यवस्था के पक्षधर थे, जिसमें केंद्र के पास सीमित अधिकार होते साथ ही इस व्यवस्था में एक स्वतंत्र प्रेस भी अनिवार्य था, जो शासन की कमजोरियां, व अक्षमताओं को जनता तक पहुंचाकर जनाधिकारों का संरक्षण प्रभावी ढंग से करता। यह व्यवस्था सत्य और अहिंसा पर आधारित होती जैसा कि उन्होंने कहा था – "The truth is for more powerful than any weapon of mass destruction"[3]

महात्मा गाँधी की विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव भारतीय संविधान में नजर आता है, इस संबंध में संविधान के अंतर्गत राज्य नीति के निदेशक तत्व महत्वपूर्ण है जहां सामाजिक–आर्थिक न्याय की बातें की गई है, साथ ही कुटीर उद्योग, गोवध प्रतिबंध, विकेंद्रीकरण आदि का उल्लेख है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 40 में इस बात का उल्लेख है कि राज्य गांवों में पंचायतों का गठन करेगा, और उन्हें ऐसी शक्तियां देगा कि वे स्थानीय

स्वशासन की इकाईयों के रूप में कार्य कर सकें। अनुच्छेद 43 में कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देने की बात कही गई है, अनुच्छेद 46 में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा समाज के अन्य कमजोर वर्गों के शैक्षणिक और आर्थिक हितों के संरक्षण की बात की गई है, अनुच्छेद 47 में नशीले पेयों पर प्रतिबंध की बात की गई है तथा अनुच्छेद 48 में दुधारू तथा अन्य पशुओं के वध को रोकने के निर्देश हैं।[4]

भारत के एक धर्मनिरपेक्ष राज्य के रूप में पहचान के उभरने में महात्मा गाँधी का महत्वपूर्ण योगदान था उन्होंने कहा था – "I do not expect India of my dreams to develop one religion that is to be wholly Hindu or wholly Christian or wholly Mussalman, but I want it to by wholly tolerant, with its religions working side by side with one another.

I swear by my religion, I will die for it. But it is my personal affair. The state has nothing to do with it. The state would look after your secular welfare, but not your or my religion. This is everybody's personal concern."[5]

महात्मा गाँधी की राजनीतिक सक्रियता के दौरान भारत ब्रिटिश उपनिवेश था, जनता के पास अधिकार अत्यंत सीमित थे और उनकी स्थिति शोचनीय थी। महात्मा गाँधी ने जनता के अधिकारों की आवश्यकता को भलीभांति समझते हुए समानता का अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार, अभिव्यक्ति का अधिकार, प्रतिनिधित्व जैसे अधिकारों की मांग को प्रभावशाली ढंग से उठाया और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ये अधिकार मौलिक अधिकारों के रूप में संविधान के माध्यम से भारत के नागरिकों को प्राप्त हुए। इन अधिकारों पर मात्र उतना ही प्रतिबंध है, जितना देश की एकता और अखंडता के लिए आवश्यक है। इस दृष्टिकोण से यह स्पष्ट है कि जिन अधिकारों का महात्मा गाँधी ने उल्लेख किया, वे समकालीन भारत में आज भी प्रासंगिक हैं।[6]

प्रमुख राजनीतिक विश्लेषकों का यह मानना है कि महात्मा गाँधी के विचारों का सर्वाधिक प्रभाव भारतीय संविधान के 73वें संशोधन में पाया जाता है। इस संशोधन का सीधा संबंध ग्रामीण प्रशासन से है। इस संशोधन के अनुरूप पंचायती राज व्यवस्था अब भारत में लागू हो चुकी है, किंतु वर्तमान स्थिति में पंचायती राज व्यवस्था का स्वरूप गाँधीवादी दृष्टिकोण तथा पारम्परिक व्यवस्था से भिन्न है। वर्तमान में यह एक ऐसे राजनीतिक उपकरण या मशीनरी के रूप में प्रयुक्त हो रहा है जिसके माध्यम से विकासात्मक गतिविधियां लागू की जा सकें। शासन ने पंचायती राजों को एक सुविधाजनक मशीनरी के रूप में देखा है, जिसके माध्यम से ग्रामीणों के लिए बनाई गई योजनाएं उन तक पहुंचाई जा सकें। गाँधीवादी व्यवस्था में संभवतः इसका प्रयोग ग्रामीणजनों की वास्तविक आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं की सूचना देने के लिए किया

FUNDAMENTALS AND PROSPECTS OF CATALYSIS

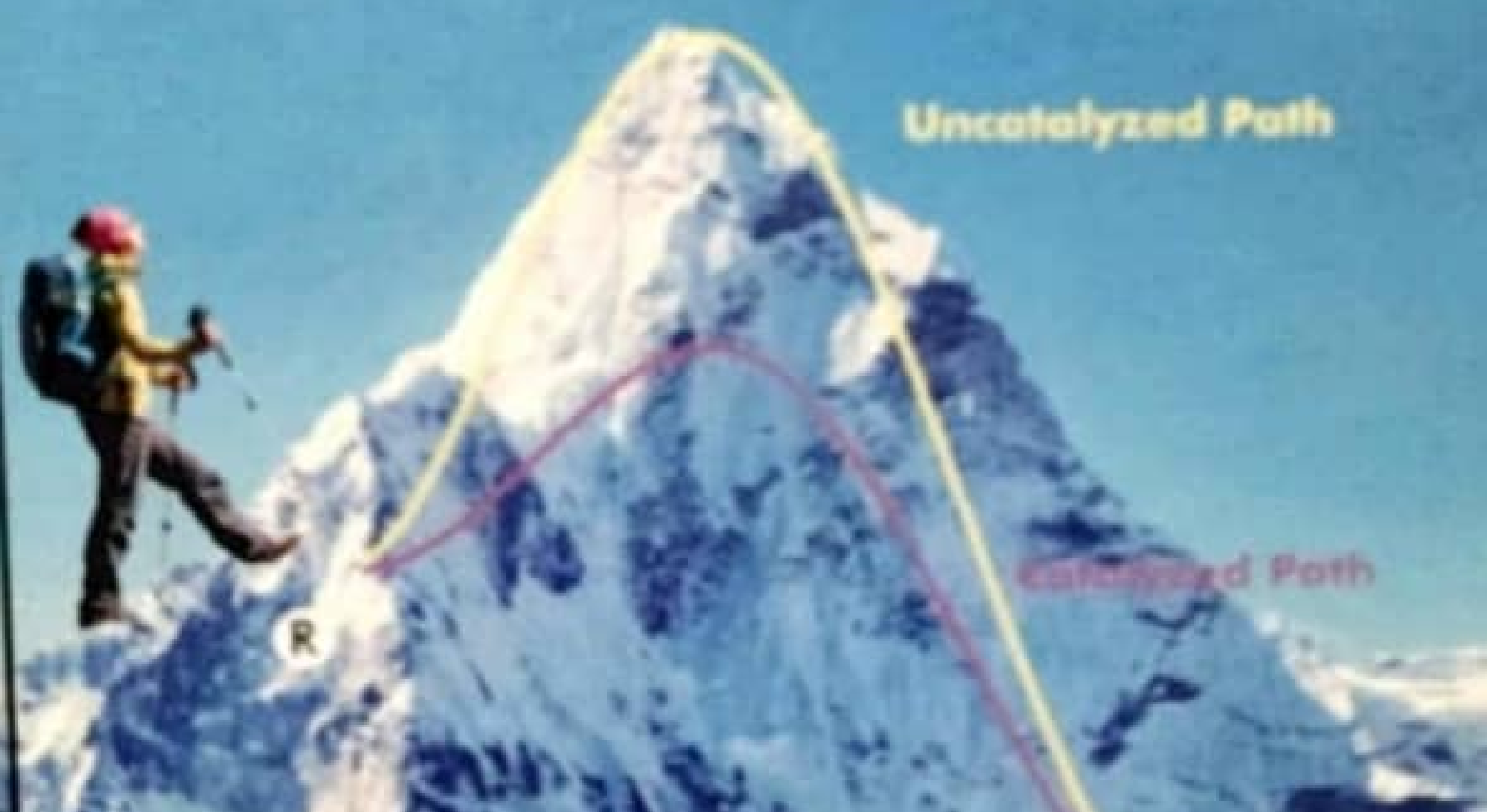

Editors:
Goutam Kumar Patra
Santosh Singh Thakur

Bentham Books

Scanned with OKEN Scanner

Goutam Kumar Patra

Prof. Goutam Kumar Patra did his Ph.D. under the supervision of Prof. Dipankar Datta at the Indian Association for the Cultivation of Science, Kolkata, in 2000. Then he joined Tel Aviv University, Israel, as a post-doctoral research fellow under the assistance of Prof. Israel Goldberg (2000-2002). Subsequently, he moved to the Carnegie Mellon University, USA, where he worked with Prof. Catalina Acim. Then he joined the Vijoygarh Jyotish Ray College, Kolkata, as an assistant professor. He visited the Max Planck Institute of Bioinorganic Chemistry, Mülheim, Germany, during 2006–07, and worked as a boys cast fellow in the group of Prof. Karl Wieghardt, and then as the Director of Max Planck Institute of Bioinorganic Chemistry, Mülheim, Germany. Currently, he is a professor at the Department of Chemistry, and a dean at the School of Physical Sciences in Guru Ghasidas Vishwavidyalaya (A Central University), Bilaspur. His research interests include chemosensor, redox activity, azamacrocyclic chemistry, crystal engineering, free radical chemistry, peptide nucleic acid (PNA), porphyrin, and supramolecular chemistry. So far, he has published more than hundred research papers in the journals of national and international repute.

Santosh Singh Thakur

Santosh Singh Thakur received his masters (1994) and Ph. D. degree (1998) from Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, India, under the supervision of Professor Kallol Kuma Ghosh. He became a Senior Research Fellow of Council of Scientific and Industrial Research (CSIR-SRF), New Delhi, at the same place. From 2001 to 2002 and 2004 to 2007, Dr. Thakur has been associated with the Brain Korea 21 postdoctoral research and has been a senior scientist at Inha and Sungkyun Kwan University, South Korea, with Professor Geon-Joong Kim and Choong Eui Song. During his postdoctoral fellowship, he received the most cited papers (2005-2008) award by Tetrahedron Letters Elsevier Ltd. Oxford UK. In 2011, he became an assistant professor at Guru Ghasidas Central University, Bilaspur, India, and before joining, he was an associate professor of applied chemistry and working as the head of the department at Shri Shankaracharya Engineering College, Bhilai, India. Dr. Thakur published over 40 co-authored scientific papers, two edited book chapters and, is an active member of editorial boards of various national-level research journals. He has more than seventeen years of graduate and postgraduate teaching experience. His research interest includes homogeneous and heterogeneous asymmetric catalysis and molecular chirality. In his free time, he engages himself in social services and reading philosophical books.

Scanned by Scanner Go

Scanned with OKEN Scanner

Catalysis: Current and Future Developments

Volume 1

Fundamentals and Prospects of Catalysis

Edited by

Goutam Kumar Patra
Department of Chemistry,
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya (A Central University),
Chhattisgarh 495009,
India

Santosh Singh Thakur
Department of Chemistry,
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya (A Central University),
Chhattisgarh 495009,
India

Scanned by Scanner Go

Scanned with OKEN Scanner

Catalysis: Current and Future Developments

Volume # 1

Fundamentals and Prospects of Catalysis

Editors: Goutam Kumar Patra & Santosh Singh Thakur

ISSN (Online): 2737-4416

ISSN (Print): 2737-4408

ISBN (Online): 978-981-14-5851-4

ISBN (Print): 978-981-14-5849-1

ISBN (Paperback): 978-981-14-5850-7

© 2020, Bentham Books imprint.

Published by Bentham Science Publishers Pte. Ltd. Singapore. All Rights Reserved.

Scanned with OKEN Scanner

CONTENTS

PREFACE ... i

LIST OF CONTRIBUTORS ... iii

CHAPTER 1 ORGANOCATALYTIC ASYMMETRIC SYNTHESIS OF SPIROACETALS AND BRIDGED ACETALS ... 1

Megha Balha and Subhas Chandra Pan

- INTRODUCTION ... 1
- REVIEW OF INVESTIGATION RESULTS: ORGANOCATALYTIC ASYMMETRIC SYNTHESIS OF SPIROKETALS ... 2
  - (R)-2,2-Diphenyl-1,7-dioxaspiro[5.5]undecane (14) ... 8
    - *General Procedure [7]* ... 8
  - (S)-1,6-Dioxaspiro[4.4]nonane (19) ... 9
    - *General Procedure [8]* ... 9
  - 1-Phenyl-2-((2R,5S)-1,6-dioxaspiro[4.4]nonan-2-yl)ethan-1-One (24) ... 9
    - *General Procedure [9]* ... 9
  - (S)-3H,3'H-2,2'-Spirobi[benzofuran]-3-one (29) ... 9
    - *General Procedure [10]* ... 9
- REVIEW OF INVESTIGATION RESULTS: ORGANOCATALYTIC ASYMMETRIC SYNTHESIS OF BRIDGED ACETALS ... 9
  - 1-((1S,5S)-3-Methyl-2,8-dioxabicyclo[3.3.1]non-3-en-4-yl)ethan-1-one (32) ... 12
    - *General Procedure [11]* ... 12
  - Synthesis of Benzofused Acetals (35) and (36) ... 13
    - *General Procedure [12]* ... 13
  - ((2'R,3S,5'S)-1-Benzyl-5'H-spiro[indoline3,4' [2, 5]methanobenzo[d] [1, 3] dioxepin]--one) (39) ... 13
    - *General Procedure [13]* ... 13
- CONCLUSION ... 14
- CONSENT FOR PUBLICATION ... 14
- CONFLICT OF INTEREST ... 14
- ACKNOWLEDGEMENTS ... 14
- REFERENCES ... 14

CHAPTER 2 DESIGN AND DEVELOPMENT OF BIMETALLIC ENANTIOSELECTIVE SALEN CO CATALYSTS FOR THE HYDROLYTIC KINETIC RESOLUTION OF TERMINAL EPOXIDES ... 16

Santosh Singh Thakur, Deepak Patel, Nidhi Nirmalkar, Kiran Thakur and Goutam Kumar Patra

- BACKGROUND AND MOTIVATION ... 16
- KINETIC RESOLUTION AND JACOBSEN HKR METHOD ... 21
- BI- AND MULTIMETALIC HYDROLYTIC KINETIC RESOLUTION ... 26
- CONCLUSION AND PROSPECTS ... 55
- CONSENT FOR PUBLICATION ... 56
- CONFLICT OF INTEREST ... 56
- ACKNOWLEDGEMENTS ... 56
- REFERENCES ... 56

CHAPTER 3 RECENT TRENDS IN ASYMMETRIC HETEROGENEOUS FLOW CATALYSIS ... 66

Rama Jaiswal, Melad Shaikh and Kalluri V.S. Ranganath

- INTRODUCTION ... 66

Scanned with OKEN Scanner

महात्मा गाँधी एवं विश्व शांति

(Mahatma Gandhi And World Peace)

डॉ. सतीश चन्द्र जोशी
डॉ. नीलाक्षी जोशी
डॉ. अरुण कुमार चतुर्वेदी

Scanned with OKEN Scanner

महात्मा गाँधी एवं विश्व शांति

संपादकगण

डॉ. सतीश चंद्र जोशी

डॉ. नीलाक्षी जोशी

डॉ. अरुण कुमार चतुर्वेदी

साहित्य संचय

ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन

हम करते हैं समय से संवाद

Scanned with OKEN Scanner

© लेखक

ISBN : 978-93-89809-23-7

प्रकाशक

साहित्य संचय

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस

राम निकुंज, पुतलीसड़क
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2020
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : 200/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 7/- (अन्य देश)

MAHATMA GANDHI EVAM VISVA SHANTI
Edited by Dr. Satish Chandra Joshi, Dr. Neelakshi Joshi, Dr. Ar
K. Chaturvedi

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

	संपादकीय	5
	आभार	8
1.	मानवाधिकार और महात्मा गाँधी भावना देवी	13
2.	नारीवादी आंदोलन, स्त्री अधिकार और गाँधी चिंतन डॉ. पुष्पा पंत जोशी	19
3.	मानव कल्याण के संदेशवाहक: गाँधीजी की प्रासंगिकता डॉ. (श्रीमती) शारदा दुबे डॉ (श्रीमती) दुर्गा बाजपेयी	28
4.	वैश्विक परिदृश्य में महात्मा गाँधी की प्रासंगिकता चंचल कुमार	32
5.	वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में महात्मा गाँधी की प्रासंगिकता केशवदत्त जोशी	42
6.	विश्व शान्ति के संदर्भ में गाँधीजी का चिन्तन एस. कुमार	47
7.	महात्मा गाँधी : एक दिव्यदर्शी तथा मानवाधिकारों के संरक्षक बीना चौधरी डॉ. टी.सी. पांडे	52
8.	महात्मा गाँधी : युद्ध एवं शान्ति के संदर्भ में डॉ. आरती यादव	61
9.	महात्मा गाँधी का जीवन-दर्शन डॉ गरिमा डिमरी	67
10.	मानवाधिकार के संबंध में गाँधीवादी दृष्टिकोण डॉ. कविता पाठक	72
11.	स्त्री-विमर्श : गाँधी की प्रासंगिकता प्रमांशु यादव	80

Scanned with OKEN Scanner

मानव कल्याण के संदेशवाहक : गाँधीजी की प्रासंगिकता

डॉ. (श्रीमती) शारदा दुबे
विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र
शासकीय बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिलासपुर छ.ग.
डॉ. (श्रीमती) दुर्गा बाजपेयी
विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र
शासकीय पातालेश्वर महाविद्यालय
मस्तूरी, जिला–बिलासपुर छ.ग

अशान्ति और कलह से जर्जर आधुनिक मानव समाज को शान्ति, प्रेम, सद्भाव और कल्याणकारी मानव मूल्यों की खोज में लगातार भटकना पड़ रहा है। विश्व में चारो ओर कलह और अशान्ति के दर्शन हो रहे है। समाज के परंपरागत मानवीय मूल्य नष्ट हो गये हैं और उसके स्थान पर नये मूल्यों की स्थापना नही हो पा रही है। मानव मूल्यों का यह संकट ही आधुनिक काल की सबसे बड़ी समस्या है। अशान्ति की स्थापना के लिए प्रारम्भ से ही प्रयत्नशील भारत में एक प्रबल स्वर उभरा जिन्होंने संपूर्ण विश्व को इन विनाशकारी विग्रहों से मुक्त कराने का संकल्प लिया। वे गाँधीजी थे। महात्मा गाँधी आधुनिक युग में संपूर्ण विश्व को भारत की एक महत्त्वपूर्ण देन है। उनके कल्याणकारी स्वर आज भी वायुमंडल में गूँज रहे है। किंतु हम उनके स्वर को अनसुना कर अपने क्षुद्र स्वार्थलिप्सा में महाविनाश को आमंत्रित कर रहे है।

गाँधीवाद गाँधीजी का कोई नया विचार नहीं है बल्कि वह हमारे प्राचीन सनातन धर्म के सिद्धांतों पर ही आधारित है। गाँधीजी ने हिंदू धर्म के प्राचीन सिद्धांतों में कोई परिवर्तन नहीं किया बल्कि उन्हें आधुनिक समाज की आवश्यकतानुसार नये सिरे से आवश्यकतानुसार प्रस्तुत किया है। सत्य अहिंसा, सद्भाव, प्रेम जैसे मूल्य हर धर्म के मूल भाव है। ये सनातन मूल्य है,

[illegible] दूसरा विकल्प हो नहीं सकता है।

गाँधीजी के लिए अहिंसा साधन न होकर साध्य थी। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संग्राम में भी जब कुछ लोगों ने उनकी आस्था, विश्वास और अहिंसा की उपयुक्तता पर संदेह किया तब भी वे अपने विश्वास से नहीं डिगे। उनकी सफलता का सबसे बड़ा कारण उनका अटूट विश्वास ही था। आज के लोगों में इस प्रकार के अटूट विश्वास का सर्वथा अभाव है। उनके इन्हीं गुणों ने उन्हें एक साधारण मनुष्य से अलग कर महान बनाया। गाँधीजी की अहिंसा कायरों के लिए भी नहीं थी।

सत्य के प्रति भी गाँधीजी की अटूट निष्ठा थी। उन्होंने कहा था कि "मैं स्वराज्य के लिए सत्य का सौदा नहीं कर सकता"।

हमारे धर्म में भी 'सत्यमेव जयते' पर विश्वास करने के लिए कहा गया है। हमारे सभी प्राचीन शास्त्र और साहित्य सत्य की विजय प्रमाणित करते है। हमारी पौराणिक कथाओं में सत्य के लिए भारी कष्ट भोगने के विवरण मिलते है और अंत में सत्य की विजय दिखाई जाती है। गाँधीजी धर्म के इस मूल तत्व को अच्छी तरह जानते थे।

शान्ति और सद्भाव दोनों एक–दूसरे से संबद्ध है। सद्भाव के बिना शान्ति नहीं आ सकती और शान्ति के बिना समृद्धि नहीं आ सकती। अशांति [illegible] समृद्धि कभी भी सुखद परिणाम नहीं दे सकती। इसलिए उन्होंने [illegible] पर बल दिया। गाँधीजी का ट्रस्टीशिप का सिद्धांत इसी बात पर आधारित है कि श्रमिकों को उनका उचित पारिश्रमिक मिलता रहे और उद्योगपति अपने–आपको समाज का ट्रस्टी माने। उन्होंने सामाजिक न्याय का समर्थन करते हुए निजी उद्यम का पक्ष लिया। वे उद्योगों के क्षेत्र में सरकारी हस्तक्षेप को हिंसा के तुल्य मानते थे। आज हमारी सरकारें गाँधीजी के इन बुनियादी सिद्धांतों को भूल चुकी है। लोकतंत्र जनता पर विश्वास का प्रतीक है, गाँधीजी सबसे बड़े लोकतांत्रिक थे।

गाँधीजी भारतीय समाज को सच्चे अर्थों में स्वतंत्र बनाना चाहते थे इसलिए उन्होंने अपने रचनात्मक कार्यक्रम के बीच में चरखा सांप्रदायिक एकता और अस्पृश्यता निवारण को हमेशा याद रखा अन्यथा स्वतंत्रता तब तक अधूरी रहेगी। जब तक लोग पीड़ा से जूझते रहेंगे। चरखा जनसाधारण को गरीबी, अज्ञानता और गंदगी से मुक्ति दिलाने में मदद करेगी। क्योंकि आबादी के 80 प्रतिशत लोग वर्ष के छह महीने बेकार रहते है। वे ऐसे उद्योगों को पुनर्जीवित कर आमदनी का जरिया बनाना चाहते थे। वे इसे [illegible] का पूरक बनाना चाहते थे।

आज पूरे विश्व मे व्याप्त हिंसा, अशांति, आर्थिक मंदी ने प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को खोखला कर दिया है। प्राकृतिक बाधायें तथा उथल–पुथल ने भी मानव को पर्यावरण के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया है।

गाँधीजी ने कहा था–"सबकी सारी आवश्यकतायें पूर्ण कर सके, इतनी सामग्री धरती माता के पास नहीं है। लेकिन एक भी आदमी का लोभ पूरा करने के लिए सारी धरती अपर्याप्त रहेगी क्योंकि लोभ का अंत नहीं है"।

गाँधीजी ने अपने सिद्धांतो के प्रचार–प्रसार तथा उन्हें व्यवहार में ढालने के लिए आजीवन प्रयास किया। स्वराज जैसे सिद्धांतो के माध्यम से वह देश, राज्य, ग्राम व व्यक्ति को स्वावलंबी तथा मजबूत बनाना चाहते थे। जिसके लिए उन्होंने सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह जैसी तकनीक का प्रयोग किया। इनके माध्यम से वे लोगों का हृदय परिवर्तन करना चाहते थे, क्योंकि हृदय परिवर्तन से ही सामाजिक परिवर्तन संभव है।

वर्तमान राजनैतिक–आर्थिक व्यवस्था भौतिकता की अंधी दौड़ में लगी है। इस लालसा ने आज अपराध को इतना बढ़ा दिया है कि, त्याग, सेवा, गरीब एवं जरूरतमंदों की सहायता करना सामान्य तौर पर बेकार काम समझा जाने लगा है। मानवीय संवेदनशीलता समाज से समाप्त होती चली जा रही है। देश में हर जाति व धर्म राजनैतिक रूप से संगठित होते चले जा रहे है। वोट के लालच में सांप्रदायिकता को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत जैसे देश में जहाँ, सदाचार, सहिष्णुता व भाईचारे की बाते होती थी आज ये सारे गुण बेमानी नजर आ रहे है। घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, सामाजिक दूरी तथा तनाव तेजी से अपना पैर पसारते चले जा रहे है।

आज भारत के साथ–ही–साथ पूरा विश्व बहुआयामी समस्याओं से जूझ रहा है। समाधान खोजे जा रहे हैं किंतु हल निकल नहीं पा रहा है। यदि हमें आज मानव समाज को इस संकट से उबारना है तो स्थापित सामाजिक आर्थिक व्यवस्था को नकारना होगा और उसके स्थान पर विकल्प की तलाश करनी होगी। गाँधीजी ने भी ऐसा ही किया था।

गाँधीजी ने आधुनिक सभ्यता के दुष्परिणामों को पहचानते हुए यह सभ्यता और उसके द्वारा बनाये हुए राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षिक, कानूनी तथा सांस्कृतिक ढाँचे को मानव जाति के लिए अहितकर माना और कहा कि हमें इससे मुक्ति पाने में देर नहीं करनी चाहिए।

गाँधीजी कहते थे कि एक सम्यक मानवीय समाज का निर्माण तभी संभव है जब वह आध्यात्मिक व नैतिक सिद्धांतों पर आधारित हो। उनके अनुसार सत्य व अहिंसा को धारण किये बिना मानवीय समाज नहीं बनाये जा

सकते। व्यक्ति के लिए नीति का पालन करना आवश्यक है। नीति का अर्थ अपने मन व इंद्रियों पर नियंत्रण रखना है। प्रत्येक व्यक्ति नीति का पालन करेगा तो अपने आप न्याय समता, प्रेम, सहयोग व शांति स्थापित हो जाएगी। यही वास्तविक स्वराज है। स्वराज की स्थापना लघु समुदायों में एकता व निकटता होने के कारण आसानी से हो सकती है। इसलिए गाँधीजी के सपनों के समाज का केंद्र बिंदु ग्राम है। वे स्वराज की कल्पना ग्रामों से ही करते हैं। उनका मानना था कि ग्राम स्वराज्य के माध्यम से ही रामराज्य लाया जा सकता है।

गाँधी मार्ग पर चलने का अर्थ है हर वस्तु को अपना समझना और उसका तनिक भी दुरुपयोग न हो इस बात का ख्याल रखना।

आज विश्व को शोषण और आर्थिक मंदी से उबारने का एक मात्र उपाय है कि विश्व गाँधी मार्ग का अनुसरण करे।

संदर्भ

1. [illegible] – गाँधी जी एवं भारतीय समाज प्रकाशक – कला प्रकाशन वाराणसी संस्करण – 2009।
2. काका साहब कालेलकर, वियोगी हरि, बनारसी दास चतुर्वेदी, बालकृष्ण [illegible] हरिभाऊ उपाध्याय, विष्णु प्रभाकर यशपाल जैन – गाँधी व्यक्तित्व विचार और प्रभाव – प्रकाशक -- गाँधी स्मारक निधि तथा सस्ता साहित्य मंडल।
3. प्यारेलाल- महात्मा गांधी पूर्णाहुति प्रथम खण्ड, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद – जनवरी 1965।
4. महात्मा गाँधी, सत्य के साथ मेरे प्रयोग, प्रभात -- प्रकाशन दिल्ली संस्करण – 2015।